विषय सूची

क्र.सं. पृ.सं.

1. ज्योतिर्विद के गुण एवं कर्तव्य 2
2. राशियों का वर्गीकरण और उनके गुण धर्म 4
3. ग्रह : विशेषताएं और वर्गीकरण 10
4. पराशर के मतानुसार दृष्टियां 15
5. योग 18
6. भावों के कारकत्व 23
7. प्रश्न की प्रकृति 26
8. लग्न और भावों के बल 30
9. घटनाओं का समय निर्धारण 32
10. रोगी और रोग 34
11. यात्रा और यात्री 39
12. चोरी और गायब सामान की वापसी 44
13. विवाह 54
14. संतान 58
15. न्यायाधीन विवाद 61
16. लाभ–हानि 65
17 राजनीति 78
18. विविध प्रश्न 81

अध्याय–1

ज्योतिर्विद के गुण एवं कर्तव्य

प्रश्न मार्ग के रचयिता वराहमिहिर ने आदर्श ज्योतिषी के गुण एवं कर्तव्यों का विशद विवेचन किया है। उसका संबंध कुलीन परिवार से होना चाहिए, रूप रंग उत्तम हो, वेशभूषा साधारण, शरीर के अंग सुदृढ़ और अविकृत हों, सत्यवादी हो तथा ईर्ष्या और द्वेष रहित हो।

ज्योतिर्विद ईश्वर के भजन में लीन रहना चाहिए तथा ज्योतिष के गणित, जातक और संहिता का विद्वान हो।

ज्योतिषी को एक बार में सिर्फ एक प्रश्न का उत्तर देना चाहिए। अगर विभिन्न प्रकार के बहुत से प्रश्न हों तो प्रथम प्रश्न का उत्तर लग्न से, द्वितीय का चंद्र से, तृतीय का सूर्य से, चतुर्थ का बृहस्पति से, पंचम का बुध या शुक्र से (दोनों में जो अधिक बली हो), छठे का बुध या शुक्र से (दोनों में जो निर्बल हो), सातवें का केंद्र या द्वितीय भाव (जो भी बली हो) को लग्न मान कर उत्तर देना चाहिए। ज्योतिषी को एक जातक के एक विषय संबंधी प्रश्नों का ही उत्तर देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता के कर्तव्य

ज्योतिर्विद से अपने प्रश्न का सटीक उत्तर पाने के लिए जातक को कुछ नियमों का पालन करना चाहिए। विद्वान के प्रति जातक की ईश्वर के समान श्रद्धा होनी चाहिए। जातक अगर गंभीर और सत्यप्रिय नहीं होगा तो ज्योतिषी का उत्तर सटीक नहीं होगा। प्रश्नकर्ता को ज्योतिर्विद के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए और दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। भले ही ज्योतिषी जातक का मित्र हो, सम्मानार्थ दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए।

जातक की भावना निष्कपट नहीं है अगर :

- चंद्रमा लग्न में हो और सूर्य, बुध, शनि केंद्र में हों।
- चंद्र लग्न में, शनि केंद्र में हो और बुध अस्त हो।
- चंद्र लग्न में मंगल और बुध से दृष्ट हो।
- कोई बली पाप ग्रह लग्न या सप्तम भाव में विद्यमान हो।
- षष्ठेश होकर मंगल और शनि लग्न में हों।

जातक के गंभीर और सत्यप्रिय होने पर ही फलादेश सटीक हो सकता है।

जातक निष्कपट है अगर :

- कोई बली शुभ ग्रह लग्न में स्थित हो या उसकी लग्न पर दृष्टि हो।
- लग्नेश और सप्तमेश पर चंद्र और बृहस्पति की शुभ दृष्टि हो।
- कोई बली शुभ ग्रह सप्तम भाव में स्थित हो या उसकी सप्तम पर दृष्टि हो।
- बृहस्पति और बुध सप्तम में स्थित हों।
- चंद्र और बुध पर बृहस्पति या शुक्र की दृष्टि हो।
- चंद्र और बृहस्पति केंद्र या त्रिकोण में स्थित हों।

उपरोक्त द्वारा न केवल प्रश्नकर्ता की ईमानदारी और सत्यता का पता चलता है बल्कि प्रश्नकर्ता और लग्न के बली होने का ज्ञान भी हो जाता है। अगर लग्न और लग्नेश निर्बल हों तो ज्योतिर्विद को प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहिए क्योंकि विपरीत परिणाम की आशंका है।

अतः प्रश्न का उत्तर देते समय लग्न, लग्नेश और चंद्र का बल आंकना चाहिए। लग्न ज्योतिषी का संकेतक भी है। लग्न और लग्नेश के बल ज्योतिर्विद के बल के द्योतक हैं।

अध्याय–2

राशियों का वर्गीकरण और उनके गुण धर्म

महर्षियों ने क्रांति वृत्त को 12 राशियों में विभक्त किया है :

1. मेष, 2. वृषभ, 3. मिथुन, 4. कर्क, 5. सिंह, 6. कन्या, 7. तुला, 8. वृश्चिक, 9. धनु, 10. मकर, 11. कुंभ और 12. मीन।

विभिन्न राशियों की लग्न में स्थिति का अर्थ

1. **मेष** : मेष का स्वामी मंगल है। जातक सक्रिय, महत्वाकांक्षी, आवेगशील, उतावला, आग्रही, तर्कवितर्क वाला, अधीनता स्वीकार न करने वाला, समझौता न करने वाला, दुःसाहसी, कठोर और झगड़ालू होता है।
2. **वृष** : धैर्य, सहनशक्ति, न क्षमाशील–न भूलने वाला, वफ़ादार, हठधर्मी। वृष का स्वामी शुक्र है।
3. **मिथुन** : मिथुन का स्वामी बुध है। जातक सामंजस्यकारी, चिंतामुक्त, प्रसन्न, बेचैन, परिवर्तनशील, भ्रमणप्रिय, अनिर्णयी, कोई नियम नहीं, कोई निश्चित आदत नहीं, शीघ्र समझने वाला, उत्तम स्वास्थ्य और प्रजनन शक्ति वाला होता है।
4. **कर्क** : राशि स्वामी चंद्र है। जातक परिवर्तनशील, भीरू, कल्पनाशील, भावुक, संवेदनशील, बातूनी, कूटनीतिज्ञ, वफ़ादार, अतिस्वार्थी, महत्वपूर्ण तथा प्रशंसापसंद होता है। पर्याप्त सक्रिय होता है।
5. **सिंह** : राशि स्वामी सूर्य है, अतः जातक अति महत्वाकांक्षी, सज्जन, विशाल हृदयी, उदार, अनुरागी, स्पष्टवादी, दानशील, दुर्विचार न रखने वाला, गौरवशाली, श्रद्धालु, बातें कम, चाटुकारिता पसंद, खिलाड़ी, सट्टा खेलने का शौकीन होता है। कल्पनाशक्ति तीव्र होती है। कला और संगीतप्रेमी होता है।
6. **कन्या** : राशि स्वामी बुध है। जातक आध्यात्मिक और विचारशील होता है। वह विश्वसनीय, शांत, तनावरहित, अतिमहत्वाकांक्षा रहित होता है। वह परिवर्तनशील, व्यापारिक प्रतिभावान, व्यवस्थित, व्यावहारिक, विवेकशील, सफाईपसंद होता है।
7. **तुला** : राशि स्वामी शुक्र है। वह चाटुकारिता प्रिय, दयालु और वीर होता है। नकल उतारने, बात को समझने तथा तुलना करने में प्रवीण होता है। वह विवेकशील, निष्पक्ष, कल्पनाशील, उत्तम भावना वाला और विपरीत लिंग के व्यक्तियों को पसंद करने वाला होता है।

8. **वृश्चिक** : राशि स्वामी मंगल है। जातक दृढ़प्रतिज्ञ, आत्मनिर्भर तथा हर कठिनाई का स्वयं सामना करने योग्य होता है। वह मुंहफट या दोटूक बातें करने वाला हो सकता है। वह गुप्त विद्या और पराविद्या आदि में रूचि लेता है। परिश्रमी, बुद्धिमान, आलोचक, आवेगी, संवेदनशील और बदला लेने वाला होता है।

9. **धनु** : राशि स्वामी बृहस्पति है। जातक फुर्तीला, सक्रिय और अधीर होता है। वह धार्मिक और सत्यवादी होता है। दोहरी मानसिकता होना संभव है जिस कारण कोई फैसला करने में देर हो जाती है। साहसी, महत्वाकांक्षी, लालची और उत्साही होता है।

10. **मकर** : जातक प्रसिद्धि चाहता है और महत्वाकांक्षी होता है। वह अपने क्षेत्र और समाज में अच्छा नाम कमाता है और नेतृत्व करने की इच्छा रखता है। मितव्ययी, संतुलित, विचारशील, धैर्यवान होता है। विघ्न डालने पर क्रोधित हो जाता है। सत्यप्रिय और ईमानदार होता है पर कुंडली दूषित होने पर बेईमान, स्वार्थी, लालची, अपराधी प्रवृत्ति का होता है।

11. **कुंभ** : जातक पराविद्या में रूचि रखता है। विश्लेषण शक्ति उत्तम होती है और मानवीय प्रकृति का ज्ञाता होता है। अंतर्ज्ञानी, दयालु, बुद्धिमान, सावधान, सतर्क, विचारशील, प्रगतिवादी, नूतन विचारधारा वाला, अनुसंधानी, स्थिर बुद्धि, हिम्मत न हारने वाला होता है। विज्ञान में रूचि होती है।

12. **मीन** : जातक शांत, आरामपसंद होता है। संवेदनशील होता है और शीघ्र दूसरों के प्रभाव में आ सकता है। स्वप्निल, विचारक, ईमानदार, दोटूक बात करने वाला, दयालु, क्षमाशील, अति उदार, मधुर वचन वाला, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है।

राशियों का वर्गीकरण

राशियां जातक की मनोवृत्ति की सूचक हैं। वे चर, स्थिर और द्विस्वभाव होती हैं।

चर राशियां	:	मेष, कर्क, तुला और मकर
स्थिर	:	वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ
द्विस्वभाव	:	मिथुन, कन्या, धनु, मीन

1. **चर राशि** : जातक बहिर्मुखी, सामाजिक, सक्रिय होते हैं तथा परिवर्तन पसंद करते हैं।

2. **स्थिर राशि** : जातक अंतर्मुखी होते हैं तथा परिवर्तन में रुचि नहीं रखते हैं। वे धीमे मगर आगे बढ़ने वाले होते हैं। चिंतनशील और अपने विचारों में मग्न रहते हैं। सामाजिक संपर्कों में रुचि कम होती है। वास्तविकता से मुंह मोड़ने की कोशिश करते हैं। जिद्दी स्वभाव रहता है।

3. **द्विस्वभाव राशि** : जातक में उपरोक्त गुणों का मिश्रण होता है।

राशियों के तत्व

अग्नि	:	मेष, सिंह, धनु
पृथ्वी	:	वृष, कन्या, मकर
वायु	:	मिथुन, तुला, कुंभ
जल	:	कर्क, वृश्चिक, मीन

अग्नि : अग्नि राशियों के जातक दृढ़, आग्रही, साहसी और उत्साही होते हैं। वे सक्रिय, महत्वाकांक्षी, स्वतंत्र चिंतक होते हैं।

- पृथ्वी राशियों के जातक धीमे मगर सतत कार्यशील, स्वयं की रक्षा करने वाले, हठी, चयनशील और अपव्ययी होते हैं। वे स्थिर होते हैं और धन, वस्तु, अधिकार और ओहदे से प्रेम करते हैं। वे सावधान, व्यावहारिक, पूर्वानुमान करने वाले, व्यवस्थित और अल्पव्ययी होते हैं।
- वायु राशियों के जातक प्रसन्नचित्त, संगीत और कला प्रेमी होते हैं। वे उदार, मिलनसार, साहसी, सहानुभूतिपूर्ण, परिष्कृत व्यवहार वाले, दयालु, विचारक और कल्पनाशील होते हैं।
- जल राशियों के व्यक्ति भीरू, अक्रिय होते हैं। कल्पनाशक्ति उत्तम मगर शरीर से दुर्बल होते हैं। संवेदनशील, भावुक और तुनकमिजाज होते हैं।

सकारात्मक/विषम राशियां : मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ। इन्हें पुरूष राशियां भी कहते हैं।

इन राशियों के जातक सक्रिय, हठधर्मी, उत्साही, साहसी, आक्रामक, दृढ़प्रतिज्ञ होते हैं।

नकारात्मक/सम राशियां : वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन। इन्हें स्त्री राशि भी कहते हैं। जातक निष्क्रिय, सुरक्षात्मक और पराधीन प्रकृति के होते हैं।

उत्तरी राशियां : मेष से कन्या तक

दक्षिणी राशियां : तुला से मीन तक

विषुव राशियां : मेष और तुला

उष्ण कटिबंधी राशियां : कर्क और मकर

फलप्रद राशियां : कर्क, वृश्चिक और मीन।

ये राशियां सफलता और आकांक्षाओं की पूर्णता की द्योतक हैं।

अर्धफलप्रद राशियां : वृष, धनु, तुला और मकर।

निष्फल राशियां : मेष, मिथुन, सिंह और कन्या। इन जातकों के प्रयास सफल नहीं होते हैं।

मूक राशियां : कर्क, वृश्चिक और मीन। जातकों में परिहार (व्रत–उपवास) की शक्ति होती है।

हिंसक राशियां : मेष और वृश्चिक। जातक प्रत्येक कार्य में अतीव साहस का परिचय देते हैं और भय से अनभिज्ञ रहते हैं।

नर राशियां : मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ और धनु का पूर्वार्ध। ये राशियां लग्न में होने पर बहुत शक्तिशाली होती हैं।

चतुष्पाद राशियां : मेष, वृष, सिंह, धनु का उत्तरार्ध, मकर का पूर्वार्ध। ये राशियां दशम भाव में होने पर सशक्त होती हैं।

कीट राशियां : वृश्चिक कीट राशि है। यह सप्तम भाव में बली होती है।

जल राशियां : कर्क, मकर का उत्तरार्ध और मीन। ये राशियां चतुर्थ भाव में बली होती हैं।

शुष्क राशियां : वृष, मिथुन, कन्या और कुंभ।

शीर्षोदय राशियां : मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुंभ

पृष्ठोदय राशियां : मेष, वृष, कर्क, धनु, मकर

उभयोदय राशि : मीन

रात्रि में बली राशियां (सूर्यास्त से सूर्योदय तक) : मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर

दिन में बली राशियां : सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक और कुंभ (सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

धुंधले प्रकाश में बली राशि : मीन

दिशा

मेष और वृष	पूर्व
मिथुन	दक्षिण–पूर्व
कर्क और सिंह	दक्षिण
कन्या	दक्षिण–पश्चिम
तुला और वृश्चिक	पश्चिम
धनु	उत्तर–पश्चिम
मकर और कुंभ	उत्तर
मीन	उत्तर–पूर्व

मतांतर से

मेष, सिंह और धनु	पूर्व
वृष, कन्या और मकर	दक्षिण
मिथुन, तुला और कुंभ	पश्चिम
कर्क, वृश्चिक और मीन	उत्तर
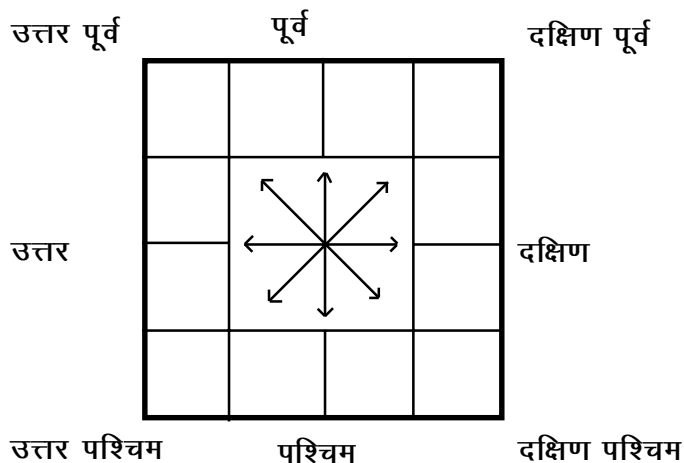
ह्रस्व राशियां : मकर से मिथुन तक (दोनों इसमें सम्मिलित हैं)। वसंत संपात के दोनों ओर 90^0। इसे उत्तरायण कहते हैं।

दीर्घ राशियां : कर्क से धनु तक (दोनों इसमें सम्मिलित हैं)। शरद संपात के दोनों ओर 90^0 । इसे दक्षिणायण कहते हैं।

लघु आकार राशियां : मेष, वृष और कुंभ का आकार लघु होता है।

मध्यम आकार राशियां : मिथुन, कर्क, धनु, मकर और मीन का आकार मध्यम होता है।

दीर्घ आकार राशियां : सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक का आकार दीर्घ होता है।

धातु राशियां : मेष, कर्क, तुला और मकर

मूल राशियां : वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ

जीव राशियां : मिथुन, कन्या, धनु और मीन

ब्राह्मण राशियां : कर्क, वृश्चिक, मीन

क्षत्रिय राशियां : मेष, सिंह, धनु

वैश्य राशियां : वृष, कन्या, मकर

शूद्र राशियां : मिथुन, तुला, कुंभ

अधोमुख राशियां : जिस राशि में सूर्य स्थित हो तथा सूर्य राशि से 4, 7, 10 वीं राशियां। ये राशियां नीचे दृष्टि डालती हैं।

ऊर्ध्व मुख राशियां : सूर्य राशि से 3, 6, 9, 12 वीं राशियां। ये राशियां ऊपर की ओर दृष्टिपात करती हैं।

तिर्यकमुख राशियां : अगल–बगल या सामने दृष्टि डालने वाली राशियां। सूर्य राशि से 2, 5, 8, 11 राशियां ।

राशियों के रंग

मेष	लाल
वृष	श्वेत
मिथुन	गहरा हरा
कर्क	लाली लिए श्वेत
सिंह	घूसर
कन्या	रंग बिरंगा
तुला	काला
वृश्चिक	सुनहरा पीला
धनु	लाली लिए सुनहरा
मकर	मिश्रित रंग
कुंभ	भूरा
मीन	सफेद

अध्याय–3

ग्रह : विशेषताएं और वर्गीकरण

सूर्य : सूर्य पिता, साहस, कार्य शक्ति, ऊर्जा, व्यक्तित्व, अधिकार, सात्विक प्रकृति का कारक है। सूर्य से प्रभावित जातक का चेहरा विशाल और गोल, आंखों का रंग शहद जैसा होता है। जातक महत्वाकांक्षी, साहसी, उदार होता है।

चंद्र : चंद्र माता, मस्तिष्क और तरल पदार्थों का कारक है, सौम्यता, सात्विक प्रकृति, प्रेम, कल्पना और विचारों का संकेतक है। परिवर्तनशीलता, अधिक यात्रा, पारिवारिक जीवन, व्यक्तिगत और गुप्त संबंध, महिलाओं के वक्ष, मासिक धर्म, सौन्दर्य, आंखें, जलीय स्थान जैसे झील, नदियां, समुद्र, नौकायन आदि का परिचायक है। मनोरंजन, संगीत, कला आदि चंद्र को प्रिय हैं। चंद्र का रत्न मोती, धातु चांदी, रंग श्वेत हैं। कफ और वात का कारक है।

मंगल : छोटे भाई और बहन, ऊर्जा, साहस, वीर, महत्वाकांक्षी, आवेगशील, उत्साह, सहनशीलता, उदार, जोखिमपूर्ण कार्य, स्वतंत्र कार्य, जायदाद, अग्नि या भट्टीयुक्त कारखाने, दुर्घटना, शल्य चिकित्सा, आग, झगड़े और चोरी का संकेतक है।

बुध : बुद्धिमत्ता, मानसिक योग्यता, सामंजस्य, उत्तम स्मरण शक्ति, मस्तिष्क सक्रिय होता है पर एकाग्रता कुछ कम। जातक के मस्तिष्क में बहुत से विषयों की तरफ ध्यान रहता है। दूसरों द्वारा शीघ्र प्रभावित हो जाता है। खगोल शास्त्र, ज्योतिष और विज्ञान में अधिक रूचि रहती है। कला और उत्पादन में प्रवीण, आज्ञाकारी, शिष्ट और उत्साही होता है। बुध की स्थिति सकारात्मक हो और बृहस्पति के साथ युति हो तो जातक उच्चाधिकारी और उच्चकोटि का विचारक होता है। बिना शिक्षक के ज्ञान प्राप्ति में सक्षम, पर्यटक, गणितज्ञ, वैज्ञानिक, वकील, परिधान निर्माता, मुद्रक, प्रकाशक, वक्ता, राजदूत, लिपिक, संदेशवाहक, विद्यालय के पुस्तकालय, सदन। बुध के निर्बल या दूषित होने पर जातक भुलक्कड़, कटुवचन वाला, अप्रिय होता है और दूसरों का मजाक उड़ाता है।

बृहस्पति : आशापूर्ण, प्रसन्नचित्त व्यक्तित्व। जातक अधिक मित्रों वाला और लोकप्रिय होता है। समाज में प्रतिष्ठा और जीवन में सफलता मिलती है। धार्मिक कार्यों में रूचि। बृहस्पति विवेक का सूचक है जबकि बुध बुद्धि का बोध कराता है। अगर इन दोनों की युति हो या ये केंद्र में स्थित हों तो जातक सुशिक्षित, बुद्धिमान, तीव्र दृष्टि वाला, कुशल वक्ता, उच्च चरित्रवान, आध्यात्मिक, दयालु, क्षमाशील तथा मानव मात्र से प्रेम करने वाला होता है। धार्मिक और ईश्वर में श्रद्धावान होता है। परंपराओं का निर्वाह करते हैं। वृहस्पति न्यायाधीश, वकील, प्राध्यापक, धर्मगुरु, मंत्री, प्रशासक, बैंक अधिकारी, कर विभाग आदि का संकेतक है। महलों में काम करने वाले, उद्यान, अदालत आदि का भी प्रतिनिधि है। शहद, तेल, रेशम, वस्त्र, घोड़े और पालतू पक्षियों का संकेतक है।

बृहस्पति के दूषित होने पर यह आतंकवादियों, फिजूलखर्च, गैरजिम्मेदारी, मतभेद, जुआ, ठाटबाट, गलत आकलन, दुर्भाग्य, निर्धनता, मुकदमे और अलोकप्रियता का कारक बन जाता है।

शुक्र : शुक्र अनुकूल होने पर व्यक्तित्व और मस्तिष्क उत्तम होते हैं। शुक्र राजसिक ग्रह है। वह सभी सांसारिक कार्यों का नियंत्रक है। वह पत्नी, प्रणय, काम–वासना, मनोरंजन का प्रतिनिधि है। कलाकृतियां, सुगंधित पदार्थ, घोड़े, गाड़ी, वाहन, चरित्र का संकेतक है। वस्त्र, फर्नीचर और साजसज्जा में सुरूचि, आराम की वस्तुओं का कर्ता है। नृत्य, संगीत, रेशमी वस्त्र, आभूषण, कशीदाकारी, चुंबन, शय्या सुख और प्रीतिभोज आदि का प्रतिनिधि है।

शुक्र के पीड़ित होने पर जातक अतिकामी, चरित्रहीन होता है। निम्नकोटि की स्त्रियां और पेय, अभद्र साथी, जुआ और निम्न कार्य उसके जीवन के अंग होते हैं।

शनि : शनि से प्रभावित होने पर जातक लंबे कद का, पतला, आलसी, सांवले रंग का, सारे शरीर पर रूखे बाल, कुरूप दांत वाला होता है। शनि के कारण जातक कम उम्र में बूढ़ा दिखाई देता है, बाल सफेद हो जाते हैं। जातक कल्पनाशील, सावधान, शांत, एकांतप्रिय, धैर्यवान, परिश्रमी, अध्ययनकर्ता, वफ़ादार होता है।

दूषित होने पर जातक ईर्ष्यालु, असत्यवादी, आलसी, झूठा, बेईमान, असंतुष्ट होता है। शनि जंगलों में काम करने वाले, निर्जन स्थान, पुराने गिर्जे, मंदिर, जीर्ण–शीर्ण भवन, नालियां, मल–जल आदि का प्रतिनिधि है। दीर्घ जीवन, वैज्ञानिक, अनुसंधानकर्ता, खोजकर्ता, देशभक्त, दार्शनिक, धार्मिक नेता, समाज सुधारक, लेखक आदि का कारक है। लेखक ने इस पुस्तक का लेखन बुध महादशा में शनि अंतर्दशा में प्रारंभ किया।

राहु : लगभग सभी ज्योतिर्विदों ने राहु व केतु का वर्णन साथ–साथ किया है। केवल नारायण भट्ट और कालिदास ने उन्हें पृथक रखा है क्योंकि उनकी कार्यविधि स्वतंत्र होती है। उनके परिणाम स्थान, राशि के स्वामियों, युति करने वाले या दृष्टा ग्रहों के अनुसार होते हैं।

केतु : राहु के गुणों के समान ही केतु की कार्य प्रणाली होती है। दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। वे एक धुरी का निर्माण करते हैं जिसके चारों ओर संपूर्ण जीवन घूमता है। उनके बीच में 180^0 की दूरी होती है। अधिकांशतः ये वक्री होते हैं, कभी भी अस्त नहीं होते।

केतु की पाप ग्रह से युति होने पर पाप ग्रह अधिक अशुभ हो जाता है। शुभ ग्रह से युति होने पर बाधाएं उत्पन्न हो जाती है और शुभ फलों का नाश हो जाता है।

1. पुरूष ग्रह : सूर्य, मंगल, बृहस्पति
   स्त्री ग्रह : चंद्र, शुक्र, राहु
   नपुंसक ग्रह : बुध, शनि, केतु

शनि पुरुष–नपुंसक और बुध स्त्री–नपुंसक माने जाते हैं।

2. शुष्क ग्रह : सूर्य, मंगल, शनि
   जलीय ग्रह : शुक्र, चंद्र

3. स्थिर ग्रह : बृहस्पति, शनि, राहु

चर ग्रह : सूर्य, चंद्र, मंगल

द्विस्वभाव ग्रह : बुध, शुक्र

4. धातु ग्रह : चंद्र, मंगल, शनि, राहु (भूगर्भीय)

मूल ग्रह : सूर्य, शुक्र

जीव ग्रह : बुध, बृहस्पति

5. रंग और स्वाद

ग्रह	**रंग**	**स्वाद**	**धातु**
सूर्य	गहरा लाल	तीता	तांबा
चंद्र	सफेद	नमकीन	चांदी
मंगल	हल्का लाल	कड़वा	तांबा/सोना
बुध	हरा	मिश्रित	पीतल
बृहस्पति	पीला/सफेद	मीठा	सोना/चांदी
शुक्र	हल्का काला	खट्टा	मोती
शनि	काला	कड़वा (मिश्रित)	लोहा

6. जाति

बृहस्पति : सात्विक ब्राह्मण

शुक्र : राजसिक ब्राह्मण

सूर्य : सात्विक योद्धा

7. स्थिर कारक

सूर्य : आत्मा/स्वयं, पिता

चंद्र : मस्तिष्क, माता

मंगल : साहस, छोटे भाई–बहन

बुध : वक्तत्वक्षमता, बुद्धिमत्ता

बृहस्पति : विवेक, प्रसन्नता

शुक्र : शुक्र, प्रजनन शक्ति

शनि : दुख

ग्रह उच्च का, स्वगृही, मूल त्रिकोण, वर्गोत्तम या शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट, अशुभ ग्रह द्वारा अदृष्ट आदि होने पर उसके गुण बढ़ जाते हैं। मगर शनि के बारे में विपरीत नियम लागू होते हैं। शनि बली होने पर दुःखों का हरण करता है, निर्बल होने पर दुःख बढ़ जाते हैं। कुछ विद्वानों के मत से जब शनि निर्बल होता है तो उसमें दुःख देने की शक्ति नहीं रहती है, परंतु निर्बल ग्रह उन भावों का फल देने में अक्षम हो जाता है, जिनका वह स्वामी है।

8. सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु, निर्बल चंद्र और दूषित बुध अशुभ ग्रह हैं।

बृहस्पति, शुक्र, पूर्णिमा का चंद्र, शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट बुध शुभ ग्रह है। चंद्रमा पक्षबल के अनुसार बली या निर्बल होता है।

दिशाएं

सूर्य – पूर्व
मंगल – दक्षिण
बृहस्पति – उत्तर–पूर्व
शनि – पश्चिम
चंद्र – उत्तर
शुक्र – दक्षिण–पूर्व
राहु/केतु – दक्षिण–पश्चिम

आकृति

सूर्य – आयत, वर्ग, समांतर चतुर्भुज, समचतुर्भुज
चंद्र – छिद्रयुक्त खोखला
बुध – ऊंचा, लंबा
बृहस्पति – गोल, वृत्ताकार
शुक्र – सुंदर, अच्छी लंबाई
शनि – खोखला और लंबा (कृशकाय, क्लांत)

आकृति द्वारा खोये समान की आकृति जानने में सहायता मिलती है।

निवास

सूर्य, मंगल, शनि, राहु वन, पर्वत, खनन स्थान
चंद्र, शुक्र जलीय स्थान, तालाब, नदी, कुंए
बुध, बृहस्पति सिनेमा गृह, नगर, उद्यान, गांव

राहु/केतु	झाड़ियां

समय

शनि	एक वर्ष
सूर्य	6 मास (अयन)
बुध	2 मास (ऋतु)
बृहस्पति	1 मास
शुक्र	15 दिन (पक्ष)
मंगल	1 दिन
चंद्र	48 मिनट (मुहूर्त), पल
राहु	8 मास
केतु	2 मास

शरीर पर चिह्न, मस्सा आदि

सूर्य, मंगल, बृहस्पति, बुध	शरीर के दायें भाग पर निशान बनाते हैं।
चंद्र, शुक्र, शनि, राहु/केतु	शरीर के बायें भाग पर निशान बनाते हैं।

अध्याय–4

पराशर के मतानुसार दृष्टियां

प्रत्येक ग्रह जिस भाव में स्थित है, उससे 7वें भाव पर दृष्टि डालता है। इसके अतिरिक्त, बृहस्पति 5 वें और 9वें भाव पर, शनि 3रे और 10वें भाव पर, मंगल 4थे और 8वें भाव पर दृष्टि डालते हैं।

हमने आंशिक दृष्टियों पर ध्यान नहीं दिया है, केवल पूर्ण दृष्टियों का प्रयोग किया है।

दृष्टा ग्रह नैसर्गिक शुभ या लग्नानुसार शुभ होने पर जिस भाव या ग्रह पर दृष्टि डालता है उनकी शुभता बढ़ा देता है। नैसर्गिक अशुभ या लग्नानुसार अशुभ होने पर इसकी दृष्टि अशुभ मानी जाती है।

6, 8 या 12वें भाव के स्वामी ग्रह की दृष्टि ग्रह के नैसर्गिक शुभ होने पर भी अशुभ मानी जाती है।

महर्षि पराशर के अनुसार

त्रिकोणपति (1, 5, 9) शुभ होते हैं

- 3, 6, 11 भाव के स्वामी अशुभ होते हैं
- केंद्र (4, 7, 10) के स्वामी सम होते हैं
- लग्न केंद्र और त्रिकोण दोनों होता है, अतः लग्नाधिपति योग कारक होता है।
- अष्टमेश अशुभ होता है।
- 2 और 12 भाव के स्वामी सम होते हैं।

ताजिक/पश्चिमी दृष्टियां

पश्चिमी ज्योतिष के अनुसार दो ग्रहों के मध्य दृष्टियां उनके बीच की दूरी के अनुसार मानी जाती है। जब कोई ग्रह किसी ग्रह से निश्चित अंश पर हो तो दृष्टि होती है।

युति : जब दो ग्रह समान अंशों पर हों।

वियुति : जब दो ग्रहों में 180^0 का अंतर हों।

त्रिकोण : दो ग्रहों में 120^0 का अंतर हो।

कोण : दो ग्रहों में 90^0 की दूरी हो।

सैक्सटाइल : दो ग्रहों में 60^0 की दूरी हो।

अर्ध सैक्सटाइल : दो ग्रहों में 30^0 की दूरी हो।

ग्रह के उपरोक्त वर्णित दूरी से थोड़ा दूर होने पर भी दृष्टि के प्रभाव का अनुभव होता है। अगर हम किसी गर्म पदार्थ के निकट अपना हाथ लायें तो गर्मी का अनुभव होता है। इसी प्रकार दो ग्रहों के बीच जिस दूरी से दृष्टि का अनुभव होता है उसे दृष्टि सीमा कहते हैं।

दृष्टि सीमा

युति के लिए 8^0, कोण के लिए 8^0 अशुभ दृष्टि।

सैक्सटाइल के लिए 7^0, त्रिकोण के लिए 8^0 शुभ दृष्टि।

दृष्टि का प्रभाव, उदाहरणार्थ त्रिकोण का प्रभाव जब ग्रह 112^0 की दूरी पर हो प्रारंभ हो जाता है तथा 120^0 पर अधिकतम होता है। इसके बाद प्रभाव कम होना शुरू हो जाता है तथा 128^0 पर शून्य हो जाता है।

हिंदू ज्योतिष के अनुसार दृष्टि सीमा कुछ और होती है। नीलकंठ प्रश्नतंत्र के अनुसार, विभिन्न ग्रहों की दृष्टिसीमा निम्न हैं :

ग्रह	**दृष्टि सीमा**
सूर्य	15^0
चंद्र	12^0
मंगल	8^0
बुध	7^0
बृहस्पति	9^0
शुक्र	7^0
शनि	9^0

हमें ग्रह के गुण के साथ–साथ दृष्टि के गुण पर भी ध्यान देना चाहिए।

	सूर्य 20^0		चंद्र 20^0
शनि 20^0 शुक्र 20^0	**कुंडली 1**		
गुरु20^0			मंगल 20^0
	बुध 20^0		
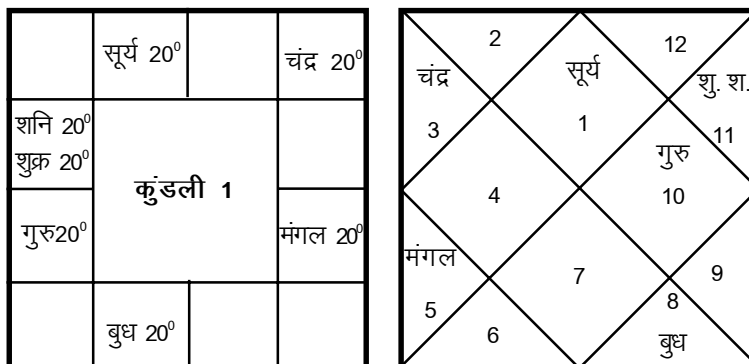
सूर्य और चंद्र, चंद्र और मंगल सैक्सटाइल दृष्टियों में हैं। सूर्य और मंगल, चंद्र और शनि, चंद्र और शुक्र त्रिकोण दृष्टियों में हैं। शुक्र और मंगल, शनि और मंगल वियुति में हैं। मंगल और बुध, बुध और शनि, बुध और शुक्र, सूर्य और बृहस्पति कोण में हैं। शनि और शुक्र युति में हैं।

दो ग्रहों की दृष्टिसीमा को आंकने के लिए दोनों ग्रहों की दृष्टिसीमा को जोड़ दें और 2 से भाग दे कर औसत निकाल लें। अगर सूर्य $0/10^0$ और मंगल $4/20^0$ में हैं तो सूर्य और मंगल में त्रिकोण दृष्टि है और वे 10^0 की दूरी पर हैं। अब देखें कि क्या सूर्य और मंगल प्रभाव की सीमा में हैं। सूर्य की दृष्टिसीमा 15^0 और मंगल की दृष्टिसीमा 8^0 का औसत 12.5^0 है, अतः सूर्य और मंगल दृष्टि के प्रभाव में हैं। ग्रह अगर औसत दृष्टिसीमा में नहीं हों तो वास्तविक दृष्टिप्रभाव नहीं होता। इसे प्लास्टिक प्रभाव कहते हैं। ग्रहों में दूरी कम होने पर दृष्टि प्रभाव अधिक होता है।

सामान्यतः पश्चिमी ज्योतिर्विदों की तरह 8^0 की दृष्टिसीमा प्रयोग में लायी जाती है। अर्ध सैक्सटाइल और सैक्सटाइल दृष्टियों के लिए 6^0 की दृष्टिसीमा प्रयोग में लायी जाती है।
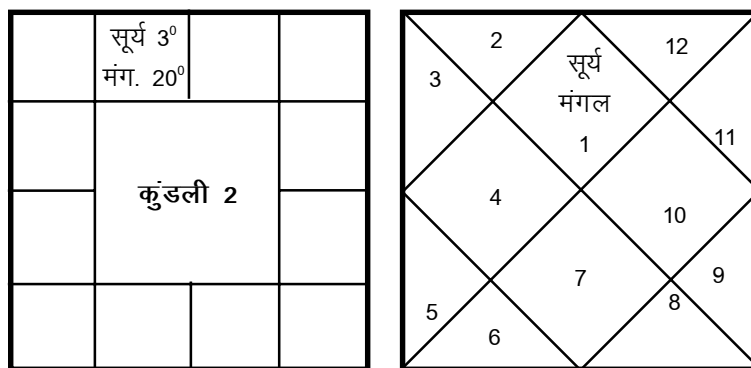
मान लीजिए सूर्य 3^0 और मंगल 20^0 पर लग्न में स्थित हैं। ऊपरी तौर पर युति है मगर दोनों में 17^0 की दूरी है, जो औसत दृष्टि सीमा 12.5^0 या 8^0 से अधिक है, अतः युति नहीं मानी जाएगी।

अध्याय–5
योग

ताजिक योग

ताजिक पद्धति में कुछ अलग प्रकार की दृष्टियों का उपयोग किया जाता है जो बहुत सटीक हैं यद्यपि ताजिक योग वार्षिक भविष्यकथन में प्रयुक्त होते हैं मगर प्रश्न ज्योतिष में भी सहायक सिद्ध हुए हैं।

1. इत्थसाल योग
2. इशराफ़ योग
3. नक्त योग
4. कंबूल योग
5. रद्द योग
6. मणऊ योग
7. खल्लासार योग

1. इत्थसाल योग

इत्थसाल योग का निर्माण तब होता है जब तीव्रगति और कम भोगांश वाला ग्रह मंदगति और अधिक भोगांश वाले ग्रह से पीछे हो।

जब इत्थशाल $1/2^0$ के बीच हो तो उसे मुत्थसील योग कहते हैं जो अति शुभ है। सामान्यतः इत्थसाल शुभ योग माना जाता है मगर वास्तव में हमेशा ऐसा नहीं होता। शुभ या अशुभ होना दोनों ग्रहों के नैसर्गिक गुण, उनके भावों के स्वामित्व आदि पर निर्भर करता है। इस योग के घटित होने पर वांछित फल पूर्ण होने की आशा रहती है।

आवश्यकत शर्तें :

- तीव्र गति, कम भोगांश वाला ग्रह मंद गति, अधिक भोगांश वाले ग्रह से पीछे हो।
- दोनों ग्रहों में परस्पर दृष्टि हो।
- ये ग्रह दृष्टिसीमा में स्थित हों।

व्यवहार में इत्थसाल का प्रयोग लग्नेश और कार्येश के मध्य में अधिक किया जाता है अर्थात लग्नेश और वांछित फल कारक के भाव के स्वामी के बीच में।

मान लीजिए जातक कार खरीदना चाहता है। क्या वह इसमें सफल होगा ?

इस प्रश्नार्थ चतुर्थ भाव प्रभावी हैं क्योंकि वह वाहनादि का संकेतक है। लग्नेश और चतुर्थेश के मध्य निर्मित इत्थसाल द्वारा चतुर्थ भाव की शक्ति का अनुमान हो सकता है। सूक्ष्म विश्लेषण के लिए लग्नेश और कारक की स्थिति और अन्य तथ्यों पर ध्यान देना होगा।

	लग्न		बुध 5° शु.(व)20°
	कुंडली 3		
शनि 10° गु.(व)5°			चंद्र 10° मंगल 15°

कुंडली 3 में चतुर्थेश चंद्र तीव्रगति ग्रह कम अंशों में स्थित है और अधिक अंश वाले मंदगति मंगल से पीछे है। अतः चतुर्थेश और लग्नेश में इत्थसाल का शुभ भाव (5) में निर्माण हो रहा है। अतः जातक को वाहन प्राप्त होगा।

शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध और चंद्र क्रमशः तीव्रतर गति के ग्रह हैं।

इत्थसाल के लिए विचारणीय तथ्य :

1. तीव्रगति और कम अंशों वाले वक्री ग्रह से इत्थसाल का निर्माण नहीं होता है क्योंकि दोनों ग्रहों में एक दूसरे से विपरीत गति रहती है। कुंडली 3 में शनि मंद गति और बृहस्पति कम अंशों वाला तीव्र गति ग्रह है। ऊपरी तौर पर इत्थसाल है मगर बृहस्पति के वक्री होने के कारण इत्थसाल नहीं है।
2. यदि मंदगति ग्रह के तीव्रगति ग्रह से अधिक अंश हों और मंदगति ग्रह वक्री हो तो इत्थसाल योग का निर्माण होता है, क्योंकि दोनों ग्रहों की दिशा एक दूसरे की ओर रहती है। इस प्रकार वे दोनों एक दूसरे से शीघ्र मिल जाते हैं और इत्थसाल का निर्माण तीव्र हो जाता है। कुंडली 3 में शुक्र वक्री है और बुध की तुलना में मंद गति है, इस प्रकार इन दोनों का मिलन तीव्रतर गति से होगा।
3. अगर इत्थसाल का निर्माण करने वाले दोनों ग्रह वक्री, नीच, अस्त या अन्य कारण से दूषित या निर्बल हैं तो इत्थसाल से वांछित परिणाम नहीं मिल पाते हैं।

2. इशराफ योग

इसे मुशरिफ या पृथक्कारी योग भी कहते हैं। जब दो ग्रह एक दूसरे पर दृष्टिपात करते हों और तीव्रगति ग्रह 1^0 या अधिक अंशों से मंद गति ग्रह से आगे हो तो इशराफ योग का निर्माण होता है।

यह एक दुर्भाग्यपूर्ण योग है और असफलता, बाधाओं का संकेतक है।

इशराफ़ का निर्माण करने वाले ग्रह यदि शुभ हों तो परिणाम अधिक अशुभ नहीं होते परंतु यदि अशुभ ग्रह इशराफ़ का सृजन करते हैं तो परिणाम अति अशुभ होते हैं।
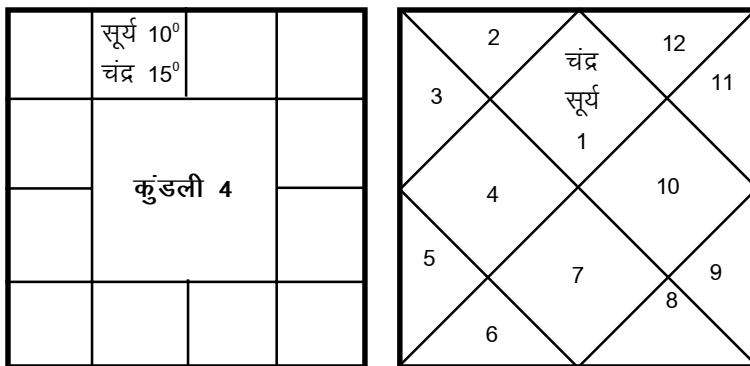
कुंडली 4 में चंद्र 15^0 पर तीव्र गति ग्रह है और सूर्य 10^0 पर मंद गति है। दोनों की युति से दृष्टि है मगर तीव्र गति ग्रह मंद गति ग्रह से आगे स्थित है। अतः इशराफ़ का निर्माण हो रहा है जो वांछित कार्य में असफलता का संकेतक है।

अगर तीव्रगति ग्रह मंदगति ग्रह से आगे होकर वक्री हो तो क्या इशराफ़ के स्थान पर इत्थसाल योग होगा? हां, तब इत्थसाल योग होगा जो सफलता का संकेतक है।

3. नक्त योग

अगर दो ग्रहों लग्नेश और कारक में दृष्टि नहीं हो मगर एक अन्य तीव्रतर गति ग्रह की इन दोनों पर दृष्टि हो तो नक्त योग का निर्माण होता है।
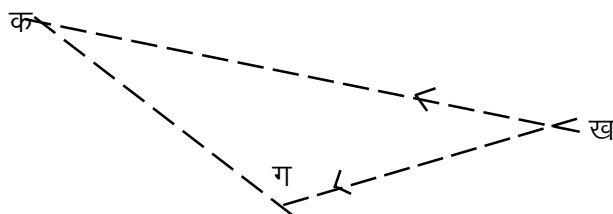
मान लीजिए क और ख दो ग्रह हैं जिनमें कोई दृष्टिपात नहीं है। ग एक अन्य ग्रह है जिसकी गति अन्य दो ग्रहों से तीव्र है और वह क और ख से इत्थसाल का निर्माण कर रहा है। इस प्रकार नक्त योग का सृजन हो रहा है। नक्त योग शुभ होता है।

नक्त योग की प्रमुख शर्तें निम्न हैं :

- दो ग्रहों के मध्य कोई दृष्टि नहीं हो।
- किसी तीसरे ग्रह की इन दोनों ग्रहों लग्नेश और कार्येश पर दृष्टि हो।
- तीसरा ग्रह अदृष्टि वाले दोनों ग्रहों से तीव्रतर गति का होना चाहिए।

	चंद्र 2^0		
	कुंडली 5		
शनि 10^0			शुक्र 5^0
		लग्न	
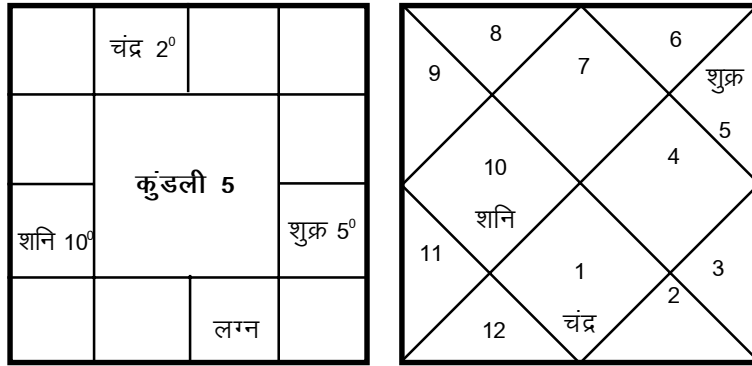
कुंडली 5 में शुक्र 5^0 का शनि 10^0 से कोई संबंध नहीं है। तृतीय ग्रह चंद्र 2^0 की शनि पर कोण दृष्टि है और शुक्र पर त्रिकोण दृष्टि है। चंद्र, शुक्र और शनि से तीव्रतर है तथा उनसे पीछे स्थित है। अतः लग्नेश शुक्र और चतुर्थ–पंचम के स्वामी शनि के मध्य नक्त योग बन रहा है।

4. कंबूल योग

जब दो ग्रहों में इत्थसाल योग हो और उनमें से एक या दोनों के साथ चंद्र भी इत्थसाल में हो तो कंबूल योग का निर्माण होता है।

	लग्न चंद्र 10^0		
	कुंडली 8		
			सूर्य 10^0
मं. 15^0			
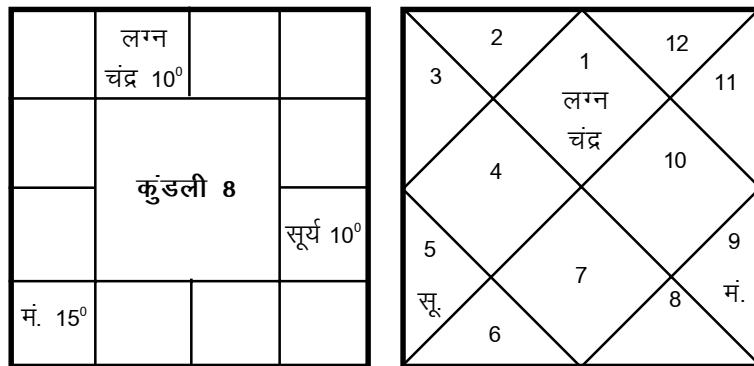
कंबूल इत्थसाल और संबंधित भावों की शुद्धता को बढ़ा देता है।

कुंडली 8 में मंगल और सूर्य इत्थसाल में हैं। मंगल और सूर्य में त्रिकोण दृष्टि है और तीव्रगामी सूर्य मंदगति मंगल से पीछे है तथा दृष्टिसीमा में स्थित है। साथ ही सूर्य और मंगल से अधिक गतिवान चंद्र, मंगल और सूर्य के पीछे स्थित है। अतः चंद्र भी सूर्य और मंगल के साथ इत्थसाल का निर्माण कर रहा है। यह कंबूल योग है।

5. रद्द योग

यदि दो ग्रह इत्थसाल में हों और उनमें से एक वक्री या अस्त या नीच हो या 6, 8, 12 भाव में हो या शत्रुक्षेत्री हो या अशुभ ग्रह से दृष्ट या युति में हो तो इत्थसाल योग नष्ट हो जाता है।

6. मणऊ योग

जब दो ग्रहों में इत्थसाल योग हो और इनमें से तीव्रतर गति के ग्रह पर पापग्रह शनि या मंगल या दोनों की युति हो या दृष्टि हो तो मणऊ योग का सृजन होता है। इस योग से इत्थसाल के शुभ प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। मणऊ शत्रुओं से भय, कार्य में असफलता, झगड़ा, धनहानि, कर्ज़ आदि का संबंधित भाव और ग्रहों के अनुसार बोध कराता है।

मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि केवल इत्थसाल से वांछित फल प्राप्त होना कठिन है। सुफलों के लिए इत्थसाल के साथ चंद्रमा का संबंध होना आवश्यक है।

सारांश

1. किसी योग की उपस्थिति/अनुपस्थिति मात्र से परिणाम के बारे में नहीं जाना जा सकता है। योग में भाग लेने वाले ग्रहों की शुभता महत्वपूर्ण है। कोई भी ग्रह निर्बल, अस्त, वक्री, नीच, दुःस्थान पर स्थित आदि होने पर किसी भी योग का वांछित परिणाम प्रदान नहीं करता।
2. लग्नेश महत्वपूर्ण है। लग्न और लग्नेश यदि निर्बल, दूषित, अस्त, वक्री आदि हों तो योग अपनी शुभता खो देते हैं।
3. इत्थसाल योग के फलीभूत होने के लिए चंद्रमा की शुभता आवश्यक है।
4. मंदगति ग्रह की अपेक्षा तीव्रगति ग्रह का दोष अधिक प्रभावी होता है।

□

अध्याय–6

भावों के कारकत्व

भावों के बल

1. जिस भाव का स्वामी उसमें स्थित हो या उस भाव पर भावेश की दृष्टि हो तो उस भाव की शुभता उत्तम होती है।
2. जिस भाव में बृहस्पति, बुध या शुक्र या बली चंद्र स्थित होते हैं या इन ग्रहों की उस भाव पर दृष्टि होती है तथा अशुभ ग्रह उसमें स्थित नहीं होते हैं या दृष्टि नहीं डालते हैं, उस भाव का कारकत्व उत्तम होता है।
3. अगर भाव में उच्च का, मूल त्रिकोण का या मित्र ग्रह स्थित हो तो उसका कारकत्व उत्तम होता है।
4. अगर भावेश केंद्र या त्रिकोण में स्थित है तो उस भाव का कारकत्व उत्तम होता है।
5. अगर भाव के दोनों ओर शुभ ग्रह स्थित हों तो उसका कारकत्व शुभ होता है।
6. यदि भाव या उसके कारक से शुभ ग्रह केंद्र या त्रिकोण में स्थित हों तथा अशुभ ग्रहों से युति अथवा उनकी दृष्टि न हो तो भाव की शुभता बढ़ जाती है।
7. भावेश नवमांश में उच्च का, मूल त्रिकोण में, स्वक्षेत्री या मित्र क्षेत्री हो तो उस भाव का कारकत्व शुभ होता है।

अशुभ फल

1. अगर भाव में अशुभ ग्रह स्थित हैं या अशुभ ग्रहों की भाव पर दृष्टि है तो भाव की शुभता नष्ट हो जाती है।
2. भावेश अगर 6, 8 या 12 भाव में स्थित है तो भाव की शुभता का ह्रास होता है।
3. 6, 8 या 12 भाव का स्वामी यदि किसी भाव में स्थित है तो उस भाव का कारकत्व नष्ट हो जाता है।
4. अगर भाव से 1, 4, 7 या 10 भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो उस भाव की शुभता का ह्रास होता है।
5. अगर भावेश 6, 8 या 12 भाव में स्थित हो, नीच या अस्त हो या अशुभ ग्रहों के मध्य स्थित हो तो भाव के कारकत्व का नाश होता है।

6. भावेश अगर नवमांश में नीच या शत्रुक्षेत्री हो तो भाव की शुभता का ह्रास होता है।

7. अगर भावेश का ग्रहाक्रांत राशीश 6, 8 या 12 भाव में नीच का या अस्त या शत्रुक्षेत्री है तो वह निर्बल होता है और उस भाव से शुभता प्राप्त नहीं हो सकती है।

प्रश्न शास्त्र के अनुसार भावों के कारकत्व

लग्न : इसे तनु भी कहते हैं। इस भाव से जीवन आरंभ होता है। प्रश्न ज्योतिष में लग्न प्रश्नकर्ता, स्वास्थ्य, प्रसिद्धि, प्रश्नकर्ता की पोशाक, रंग आदि का बोध कराता है।

यद्यपि प्रथम भाव के कारकत्व प्रश्नशास्त्र और पराशरी दोनों के अनुसार समान हैं, लेकिन प्रश्न ज्योतिष में इसका क्षेत्र काफी व्यापक हो जाता है। चूंकि लग्न द्वितीय भाव से द्वादश होता है, यह धन हानि, परिवार, भोजन आदि का द्योतक है। तृतीय भाव से एकादश होने के कारण यह छोटे भाइयों को प्राप्ति, मित्रों का संकेतक है।

चतुर्थ से दशम होने के कारण लग्न भाग्य, लंबी यात्राएं, तीर्थयात्रा, संतान के धार्मिक कार्य आदि की जानकारी देता है। छठे भाव से अष्टम होने के कारण शत्रुओं को कष्ट, कर्ज़दार और मामा का परिचायक है।

सप्तम से सप्तम होने के कारण लग्न प्रेम संबंध, स्वास्थ्य, चेहरे आदि का बोध कराता है।

अष्टम भाव से छठा होने के कारण लग्न पति/पत्नी के परिवारजनों के झगड़े और बीमारी का संकेतक है। नवम से पंचम होने के कारण लग्न पिता की बुद्धिमत्ता तथा पिता की संतान (अर्थात स्वयं जातक) का बोध कराता है। दशम भाव से चतुर्थ होने के कारण लग्न व्यवसाय से सुखों का ज्ञान कराता है। एकादश से तृतीय होने के कारण यह साहस, महत्वाकांक्षा, बड़े भाई – बहन और लघु यात्राओं का संकेतक है। द्वादश से द्वितीय होने के कारण लग्न बीमारी, अदालत, टैक्स आदि के खर्चों की जानकारी देता है।

उपरोक्त से सिद्ध होता है कि एक भाव से जीवन के विभिन्न पहलुओं का पता चल जाता है। किसी भाव के कारकत्व उस भाव के अन्य भावों से संबंध पर निर्भर करते हैं। मान लीजिए, किसी समय जातक अपने मामा के स्वास्थ्य के बारे में प्रश्न करता है।

छठे से छठा अर्थात लग्न से एकादश भाव मामा की बीमारी का द्योतक है। छठे से एकादश का क्षेत्र अर्थात लग्न से एकादश भाव इलाज, धन प्राप्ति, इच्छाओं की पूर्ति का संकेत देता है।

6, 11 और 4 भावों के संबंध मामा के इलाज की जानकारी देते हैं। इस प्रकार किसी भी संबंधी के बारे में लग्न को प्रश्नकर्ता मानकर विचार कर सकते हैं।

इस प्रकार :

लग्न	प्रश्नकर्ता का प्रतिनिधि है।
द्वितीय भाव	परिवार के सदस्य
तृतीय भाव	छोटे भाई
चतुर्थ भाव	माता, सुख
पंचम भाव	संतान
षष्ठ भाव	मामा, शत्रु और ऋणदाता
सप्तम भाव	साझेदार, विरोधी
अष्टम भाव	आयु, बाधाएं, विरासत
नवम भाव	पिता, धर्मगुरु
दशम भाव	व्यवसाय, कार्य
एकादश भाव	बड़े भाई, मित्र, धनप्राप्ति
द्वादश भाव	गुप्त शत्रु, अस्पताल, व्यय, संस्थाएं

सूर्य : पिता, सरकार, विभागाध्यक्ष, अधिकारी (बॉस), अधिकारीगण

चंद्र : माता, भावनाएं, तरल पदार्थ, रसायन

मंगल : छोटा भाई, नियमानुसार कार्य, कानून

बुध : मामा, दस्तावेज, शिक्षा, स्वीकृति, प्रतिनिधि

बृहस्पति : संतान, बड़ा भाई, अध्यापक, धर्मगुरु

शुक्र : पत्नी, वाहन, अवैध संबंध, सुख–आराम के साधन, गृहसज्जा सामग्री, संगीत, नाटक, कविता

शनि : आयु, बीमारी, बाधा, किसी भी कारण से देरी, सेवक, कर्मचारी, मजदूर

अध्याय–7

प्रश्न की प्रकृति

प्रश्न कुंडली के विश्लेषण से पूर्व यह जांचना आवश्यक है कि क्या यह प्रश्न की पुष्टि करती है या नहीं। क्योंकि प्रश्न जातक से स्वयं संबंधित होता है, अतः लग्न और लग्नेश कारक होते हैं। लग्न, चंद्र और नवमांश लग्न के बल का आकलन करें। उनके बली होने और शुभ दृष्टि उपलब्ध होने पर परिणाम उत्तम रहेगा। निर्बल और अशुभ दृष्टियुक्त होने पर परिणाम अशुभ होगा।

लग्नेश के अनुसार योग

लग्नेश अगर कारक के साथ इशराफ योग का निर्माण करता है तो प्रश्न भूतकाल से संबंधित होता है। इत्थसाल के साथ संबद्ध होने पर प्रश्न वर्तमान से संबंधित होता है। लग्नेश और कारक के मध्य भविष्यत इत्थसाल योग बनने पर प्रश्न भविष्य संबंधी होता है।

मतांतर से प्रश्नकुंडली में सर्वाधिक बली ग्रह द्वारा प्रश्न का ज्ञान होता है। अगर प्रश्न कुंडली में दो या अधिक ग्रह बली हैं तो जिस बली ग्रह के अंश सर्वाधिक हों उसे सर्वाधिक बली समझना चाहिए। यही प्रश्न के प्रकार की जानकारी देगा।

सर्वाधिक बली ग्रह जानने के बाद उन भावों को ज्ञात करते हैं जिनका स्वामी वह ग्रह है या जहां वह स्थित है। इनसे प्रश्न के प्रकार का पता चल जाता है। यदि बली ग्रह केंद्र में है, स्वग्रही या मित्र राशि में है या उच्च का है तो निम्नानुसार प्रश्न का ज्ञान होता है।

लग्न	स्वास्थ्य, स्वयं जातक, भाग्य या प्रोन्नति
द्वितीय भाव	रुपये, चल संपत्ति, आभूषण, सिक्के, बैंक में जमा धन, परिवार, भोजन, आंख, चेहरा
तृतीय भाव	यात्रा, स्थानांतरण, पत्राचार, छोटा भाई, पड़ौसी, बाहें, कंधे
चतुर्थ भाव	खुशी, जमीन, वाहन, माता, शिक्षा, छाती, हृदय
पंचम भाव	सुख, मनोरंजन, संतान, बच्चे, अधीनस्थ कर्मचारी
षष्ठ भाव	विवाद, मुकदमा, शत्रु, कर्ज़, बीमारी, प्रतियोगिता
सप्तम भाव	साझेदारी, पत्नी, यात्रा, व्यापार, अवैध संबंध
अष्टम भाव	विवाद, विरासत, बीमारी, आयु, विनाश, आकस्मिक आय, बिना मेहनत की कमाई
नवम भाव	पिता, दूरस्थ यात्रा, तीर्थयात्रा, भाग्य, धार्मिक कार्य, अधिकारी
दशम भाव	उच्चाधिकारियों की कृपा, अधिकारी, व्यवसाय, प्रोन्नति, कार्य
एकादश भाव	लाभ, मित्रों से लाभ, अन्य संबंधी जन
द्वादश भाव	हानि, व्यय, दान, अस्पताल में भर्ती, कारावास, दंड आदि, विदेश

प्रश्न ज्योतिष में सप्तम भाव जातक के साथ व्यवहार रखने वाले व्यक्तियों की सूचना देता है। लग्न जातक का सूचक है। महर्षियों ने सप्तम भाव से संबंधित योगों का वर्णन किया है। उनमें से कुछ योग निम्न हैं :

- बली सूर्य, मंगल और शुक्र सप्तम में स्थित हों तो प्रश्न पत्नी से अन्य किसी स्त्री से संबंधित होता है।
- बली सूर्य और बृहस्पति सप्तम में हों तो प्रश्न गर्भवती स्त्री के बारे में होता है।
- बली मंगल और शुक्र सप्तम में हों तो प्रश्न किसी कर्कश वाणी वाली स्त्री के बारे में होता है।
- बली बृहस्पति सप्तम में स्थित हो तो प्रश्न पत्नी के बारे में होता है।
- बली बुध अथवा चंद्र सप्तम भाव में स्थित हो तो प्रश्न किसी चरित्रहीन स्त्री के बारे में या नौकरानी से संबंधित होता है।
- बली शनि सप्तम भाव में स्थित हो तो प्रश्न निम्न जाति की या वृद्धा स्त्री से संबंधित होता है। उपरोक्त से प्रतीत होता है कि सिर्फ स्त्रियों से संबंधित प्रश्नों का ही विवरण दिया गया है। मगर सप्तम भाव से अन्य बहुत सी बातों का संबंध है जैसे भागीदारी, विरोधी, चोर, व्यवहार वाला अन्य व्यक्ति आदि। अतः केवल उपरोक्त तथ्यों पर घ्यान देना पर्याप्त नहीं है। प्रश्न के अनुसार आवश्यक संशोधन वांछनीय हैं।

उदाहरण : लेखक के पास 13 जून, 1997 को प्रातः 9.45 पर फोन से प्रश्न पूछा गया जिसकी कुंडली निम्न है।

शनि 24–32		बुध 13–53 सूर्य 28–23	लग्न24–48 शुक्र 17–01
केतु 0–36	**कुंडली 11**		
			चंद्र28–4 राहु 0–36
बृह.(व) 28–06			मंगल 3–36

कुंडली 11 में बृहस्पति स्वग्रही है तथा यह अधिकतम अंशों (28^0–06′) में स्थित होकर चंद्र के साथ इत्थसाल योग का निर्माण कर रहा है। अतः बृहस्पति के सप्तम में होने के कारण चोरी से संबंधित है। चोरी रुपयों के नोट और आभूषणों की है क्योंकि चंद्र यहां द्वितीयेश है और बृहस्पति द्वितीय भाव का कारक है।

सर्वाधिक बली ग्रह के चंद्रमा से या लग्नेश से या नवांश लग्नेश से संबंध से प्रश्न का पता चलता है।

प्रश्न को भली प्रकार समझना आवश्यक है। उदाहरणार्थ अगर प्रश्नकर्ता पूछता है कि क्या विवाह घर आने वाले व्यक्तियों के यहां तय हो जाएगा ? अगर प्रश्न पूछते वक्त लग्न चर और बली है तो इसका अर्थ है कि जीवन में परिवर्तन होगा अर्थात आने वाले लोगों के यहां विवाह नहीं होगा। अगर लग्न स्थिर राशि में बली है तो आने वाले लोगों के परिवार में विवाह हो जाएगा अर्थात कोई परिवर्तन नहीं होगा। अतः सर्वप्रथम प्रश्न की प्रकृति को समझना आवश्यक है।

प्रश्नकर्ता और जिस व्यक्ति के बारे में प्रश्न है उनके बीच संबंधों को जानना जरूरी है। अगर जातक स्वयं प्रश्न पूछता है तो लग्न प्रश्नकर्ता का कारक होता है परंतु अगर पिता अपने पुत्र के बारे में प्रश्न पूछता है तो लग्न पिता होता है और उत्तर पंचम भाव को लग्न मान कर दिया जाएगा। अगर सास अपनी बहू के गर्भ धारण के बारे में प्रश्न करे तो लग्न सास होगी, पंचम भाव उसका पुत्र और एकादश भाव बहू होगी। अतः उत्तर एकादश भाव और एकादश से पंचम (संतान) अर्थात तृतीय भाव से दिया जाएगा।

17.4.1998 को 20:30 दिल्ली, शुक्रवार

बुध(व) 16–16	शनि 0–02 सूर्य 3–34 मं. 9–35		
शु.18–10 गुरु. 23 के. 15–6	कुंडली 12		
			राहु 15–06
चंद्र 07–11		लग्न 26–17	

उपरोक्त कुंडली में प्रश्नकर्ता का बड़ा भाई अपने पिता से झगड़ा कर घर से चला गया था। प्रश्न था, 'क्या मेरा बड़ा भाई वापस आ जाएगा'? बड़े भाई का संकेत एकादश भाव से होता है। एकादश भाव को लग्न मानें।

यहां एकादश भाव और एकादशेश सूर्य बड़े भाई के सूचक हैं। एकादश भाव पर दशमेश शुक्र की और पंचमेश बृहस्पति की दृष्टि है। बुध वक्री होकर लग्न (एकादश भाव) को देख रहा है। बड़ा भाई हृष्ट पुष्ट और जीवित है। सूर्य का सप्तमेश मंगल से इत्थसाल योग बन रहा है। सप्तम भाव वापस लौटने का भाव है। मंगल और सूर्य के बीच 6^0 का अंतर है। अतः प्रश्नकर्ता का बड़ा भाई 25 अप्रैल 1998 को वापस आ गया। वह अपने मित्र के यहां आगरा चला गया था जो दिल्ली से पूर्व में है। यह एकादशेश सूर्य द्वारा सूचित हो रहा है।

21 अगस्त 1998 को 9:00 बजे दिल्ली
जातक की प्रोन्नति कब होगी ?

गु.(व) 02–24	श.(व) 09–46		
केतु 07–37	कुंडली 13		मं 6–23 चं. 23–5 शु.15–39 बु(व)22–37
			सूर्य 4–3 राहु 7–17
			लग्न 14–04

लग्न द्विस्वभाव राशि है मगर 15^0 से कम है अतः इसे स्थिर राशि माना जाएगा। लग्न पर वक्री बृहस्पति की दृष्टि है। लग्नेश और दशमेश बुध एकादश भाव में स्थित है, मगर वक्री है और इस पर वक्री बृहस्पति की दृष्टि है जो केंद्र में स्वराशि में स्थित है। बुध की एकादशेश चंद्र और द्वितीयेश शुक्र और 3–8 के स्वामी मंगल से युति है। चंद्रमा और दशमेश –लग्नेश बुध (वक्री) के मध्य इत्थसाल योग है। अष्टमेश मंगल की बुध से युति है। इस कारण जातक की उस समय प्रोन्नति नहीं हुई, मगर तीन महीने बाद उसके मामले पर पुनर्विचार हुआ और प्रोन्नति हो गयी।

लग्न में स्थिर राशि होने पर प्रोन्नति के प्रश्न का उत्तर प्रोन्नति होगी, विवाह के प्रश्न में उत्तर विवाह होगा, चोरी के प्रश्न के लिए उत्तर सामान वापस मिलेगा, यात्रा के प्रश्न का उत्तर यात्रा नहीं होगी, बीमारी के प्रश्न का उत्तर बीमारी दूर नहीं होगी मगर मृत्यु भी नहीं होगी, मुकदमे या चुनाव के प्रश्न का उत्तर जातक नहीं हारेगा आदि होते हैं।

कृपया ध्यान दें :

1. मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुंभ शीर्षोदय राशियां होती हैं।
2. मेष, वृष, कर्क, धनु और मकर पृष्ठोदय राशियां हैं।
3. मीन उभयोदय राशि है।

अगर लग्न नर राशि का है और उसमें शुभ ग्रह स्थित हैं या शुभ ग्रह की दृष्टि है तो शुभ फल और लाभ का संकेत है। नर राशियां मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ और धनु का पूर्वार्ध होती हैं।

अध्याय–8

लग्न और भावों के बल

सर्वविदित है कि प्रश्न ज्योतिष में लग्न और लग्नेश महत्वपूर्ण हैं। इनका बली/निर्बल होना प्रश्न की सफलता/असफलता का द्योतक है। कभी–कभी लग्न, लग्न में स्थित ग्रह, लग्न की राशि, लग्न पर दृष्टि या लग्नेश के आधार पर प्रश्न के सभी पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

षट्पंचासिका, अध्याय 1, श्लोक 2 के अनुसार ज्योतिषी को प्रश्न कुंडली के लग्न के आधार पर जीवन स्तर में गिरावट या परिवर्तन, स्थान परिवर्तन, आर्थिक स्तर में गिरावट, मान हानि आदि का विचार करना चाहिए। आर्थिक उन्नति, सुख और भूमि का विचार चतुर्थ भाव से करना चाहिए। दूरस्थ स्थान से घर लौटने का इरादा सप्तम भाव से ज्ञात होता है। दशम भाव से यात्रा या यात्रा करने के विचार का पता चलता है। चतुर्थ भाव से ही यात्री के घर पहुंचने का ज्ञान होता है।

'प्रश्नज्ञान' के अनुसार यदि लग्न में द्विपाद राशि (मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ और धनु का पूर्वार्ध) या चतुष्पाद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का उत्तरार्ध) हो और लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो प्रश्न सफल रहेगा। प्रश्न ज्ञान के श्लोक 8 के अनुसार यदि किसी भाव पर भावेश की दृष्टि है या भावेश उसमें स्थित है या उस भाव में बृहस्पति, शुक्र या बुध स्थित हैं या इनकी उस भाव पर दृष्टि है तो उस भाव का कारकत्व सबल और सफल होता है (बृहस्पति, शुक्र और बुध लग्न के लिए शुभ होने चाहिएं)।

भाव का बल

1. भाव सबल होता है अगर भावेश स्वग्रही हो या उस भाव पर दृष्टि रखता हो।
2. भाव बली होता है अगर उसमें शुभ ग्रह स्थित हो या शुभ ग्रह की उस भाव पर दृष्टि हो।
3. भाव निर्बल होता है अगर अशुभ ग्रह वहां स्थित हो या उसकी दृष्टि हो।
4. भावेश उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्वराशि या मित्र राशि में स्थित हो तो भाव बली होता है।
5. शुभ ग्रह उच्च राशि, मूल त्रिकोण, मित्र राशि में स्थित हो तो भाव सबल होता है।
6. भावेश 6, 8 या 12 भाव में स्थित हो तो भाव निर्बल होता है।
7. यदि 6, 8 या 12 वें भाव का स्वामी अपने भाव में स्थित हो तो भाव निर्बल होता है।
8. भावेश की शुभ ग्रह से युति या दृष्टि संबंध हो तो भाव बली होता है।
9. भावेश बली होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो भाव का कारकत्व सबल होता है।
10. अगर भाव से 2, 12, 7, 4 या 10 में शुभ ग्रह स्थित हों तो भाव का कारकत्व बली होता है।

11. बली अशुभ ग्रह का केंद्र, त्रिकोण, 8 या 12 वें भाव में स्थित होना अच्छा नहीं होता। अगर इस अशुभ ग्रह के साथ शुभ ग्रह की युति हो या दृष्टि हो तो सफलता अतीव संघर्षों के उपरांत मिलती है।
12. भावेश अस्त, नीच का, अशुभ ग्रहों के मध्य स्थित, शत्रु क्षेत्रीय हो तो भाव का कारकत्व नष्ट हो जाता है।
13. भावेश का ग्रहाकांत राशीश निर्बल हो या 6, 8, 12 भाव में स्थित हो तो भाव निर्बल होता है।

अध्याय–9

घटनाओं का समय निर्धारण

प्रश्नकुंडली का विश्लेषण करते समय :

अ. कार्य से संबंधित भावेश का पता करें। उसे कार्येश कहते हैं। कार्य से संबंधित भाव को कार्य भाव कहते हैं। इसके बाद लग्न और लग्नेश का अध्ययन करें।

आ. कार्येश और लग्नेश से युति या दृष्टि रखने वाले ग्रहों पर ध्यान दें।

इ. कार्यभाव और लग्न में स्थित या दृष्टि वाले ग्रहों पर ध्यान दें।

कार्य में सफलता मिलेगी अगर

1. लग्नेश और कार्येश दोनों शुभ ग्रह हों और शुभ भाव में इत्थसाल योग बनाते हों।
2. लग्नेश की लग्न पर और कार्येश की कार्यभाव पर दृष्टि हो
3. लग्नेश की कार्य भाव पर और कार्येश की लग्न पर दृष्टि हो।
4. लग्नेश की कार्येश पर और कार्येश की लग्नेश पर दृष्टि हो
5. कार्येश और लग्नेश की लग्न में युति हो।
6. लग्नेश और कार्येश की कार्यभाव में युति हो।
7. लग्नेश की कार्य भाव में स्थित कार्येश पर दृष्टि हो।
8. कार्येश की लग्न में स्थित लग्नेश पर दृष्टि हो।
8. कार्येश की कार्यभाव में स्थित लग्नेश पर दृष्टि हो।
9. लग्नेश की कार्येश और कार्यभाव पर दृष्टि हो।
10. कार्येश की लग्न और लग्नेश पर दृष्टि हो।
11. लग्नेश और कार्येश में कंबूल योग हो।
12. लग्न या कार्यभाव पर तीन या अधिक शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
13. लग्न, लग्नेश, कार्यभाव या कार्येश पर अशुभ प्रभाव से रहित पूर्णिमा के चंद्र की दृष्टि हो।
14. लग्नेश और कार्येश द्वितीय भाव में स्थित हों।
15. बली शुभ ग्रह लग्न में स्वराशि में स्थित हो।
16. लग्न में शीर्षोदय राशि हो, सबल लग्नेश पर 5, 9, 10 या 11 भाव में स्थित पूर्ण चंद्र की दृष्टि हो।
17. अदूषित पूर्ण चंद्र की लग्न, लग्नेश, कार्यभाव, कार्येश पर दृष्टि हो या लग्नेश और कार्येश युक्त 2, 5, 9, 10 या 11 भाव पर दृष्टि हो तो कार्य में सफलता मिलती है।

उपरोक्त योगों का फल लग्नेश और कार्येश के बल पर निर्भर करता है। अगर ये उच्च के, स्वक्षेत्री या मित्र राशि में, शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हों तो जातक अपने काम में सफल होगा। लग्नेश या कार्येश

यदि अस्त, नीच राशि में, अशुभ ग्रहों के मध्य स्थित या शत्रुक्षेत्री हों तो कार्य में असफलता मिलती है, भले ही शुभ ग्रहों और चंद्रमा की दृष्टि हो।

अगर सिर्फ लग्नेश पर ही तीन शुभग्रहों और चंद्र की दृष्टि हो तो कार्य में सफलता मिलेगी। लग्नेश–एकादशेश या लग्नेश–द्वितीयेश पर पूर्ण चंद्र की दृष्टि हो तो जातक को धन, ध्येयपूर्ति और अन्य सुख प्राप्त होते हैं।

नवम भाव पर पूर्ण चंद्र की दृष्टि हो तो जातक शुभ कार्य, तीर्थयात्रा आदि करता है। दशम पर पूर्ण चंद्र की दृष्टि से प्रोन्नति होती है और प्रसिद्धि मिलती है। चंद्र की अष्टमेश से युति हो या दृष्टि हो तो परिणाम अशुभ होते हें तथा कार्य में असफलता प्राप्त होती है। लग्नेश और कार्येश पर निर्दोष केंद्र या त्रिकोण स्थित पूर्ण चंद्र की दृष्टि हो तो कार्य सफल होता है।

लग्न में उच्च का सूर्य हो तो आग, चोरी या बीमारी का खतरा होता है। लग्न में मंगल–शनि स्थित हों और अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो आग, चोरी, दुर्घटना, घायल होना, दुःख, पत्नि से वैमनस्य आदि घटित होते हैं। लग्न में केवल शनि हो और सूर्य, मंगल या चंद्र से दृष्ट हो तो बदनामी, अफवाह, धनहानि, झगड़े, बीमारी और प्रशासन से दंड आदि से कष्ट होता है।

लग्न में राहु हो और सूर्य, मंगल या चंद्र की दृष्टि हो तो जातक जख्म, चोट, झगड़ा, दुर्घटना, पक्षाघात, पेट में दर्द, चेचक आदि से ग्रसित होता है। अशुभ ग्रहों की शुभभावों में स्थिति और शुभ ग्रहों की अशुभ भावों में स्थिति बुरे परिणामों का संकेत है।

लग्नस्थ चंद्र पर दशम भाव स्थित नीचस्थ मंगल की या सप्तम भाव स्थित नीचस्थ शनि की दृष्टि हो तो जातक जीवन भर धन और सुख की हानि से त्रस्त रहता है।

लग्नेश या कार्येश की लग्न या कार्येश पर या परस्पर दृष्टि न हो तो ध्येय सफल नहीं होगा। सफलता के लिए इन योगों का होना अनिवार्य है। राशियों को महर्षियों ने शीर्षोदय, पृष्ठोदय और उभयोदय में विभाजित किया है।

लग्न शीर्षोदय राशि में हो, शुभ ग्रहों और चंद्र से युत/दृष्ट हो तो कार्य सफल होगा।

लग्न शीर्षोदय राशि में हो, पंचम और नवम में शुभ ग्रह हों तो ध्येय में सफलता मिलती है।

लग्न पृष्ठोदय राशि में हो, उसमें अशुभ ग्रह स्थित हो या उसकी लग्न पर दृष्टि हो तो कार्य में असफलता मिलती है।

चतुर्थेश या दशमेश वक्री हो तो कार्य में असफलता मिलती है।

लग्नेश या कार्येश वक्री हो तो कार्य असफल रहेगा। लग्न में शनि हो और सूर्य या मंगल की लग्न पर दृष्टि हो तो कार्य सफल नहीं होगा।

लग्नेश का ग्रहाक्रांत राशीश, लग्न से 6, 8 या 12 भाव में हो तो कार्य में सफलता नहीं मिलेगी।

अध्याय–10

रोगी और रोग

कार्यरत डॉक्टर होने के कारण लेखक को बीमारी संबंधी प्रश्न अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। अधिकांशतः दो प्रश्न पूछे जाते हैं :

1. क्या रोगी निरोग हो जाएगा ? यदि हां तो कब ?
2. रोगी जीवित बचेगा या नहीं ?

कोई भी प्रश्नकर्ता मेरे पास ज्योतिष के माध्यम से बीमारी के निदान के लिए नहीं आया। अतः हम उपरोक्त दो प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्रश्न ज्योतिष में लग्न से डॉक्टर (वह व्यक्ति जो दवा देता है, सहायक नहीं) का बोध होता है। सामान्यतः लग्न प्रश्नकर्ता का प्रतिनिधित्व करता है, परंतु बीमारी के प्रश्नार्थ लग्न को डॉक्टर का कारक माना जाता है क्योंकि डॉक्टर और प्रश्नकर्ता दोनों एक हैं और बीमारी के शत्रु हैं। षष्ठ और सप्तम भाव रोग के संकेतक हैं जबकि दशम भाव से रोगी का बोध होता है जो रोगमुक्त होने के लिए कर्मरत होता है। चतुर्थभाव औषधियों का है। छठे से छठा अर्थात लग्न से एकादश भाव भी बीमारी का बोधक है। अष्टम भाव मृत्यु का संकेतक है। अष्टम से अष्टम अर्थात तृतीय भाव भी मृत्यु का ज्ञान कराता है।

	लग्न डॉक्टर		
	कुंडली 14		औषधि
रोगी			
		रोग	रोग
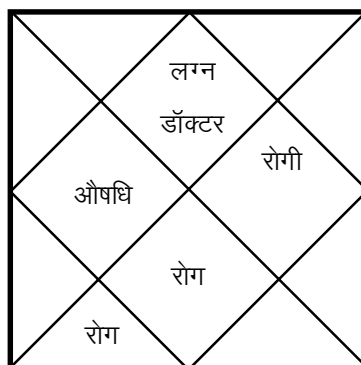
रोगी डॉक्टर के इलाज से शीघ्र ठीक हो जाएगा :

1. लग्न में शुभ राशि हो, उसमें शुभ ग्रह स्थित हों या केंद्र/त्रिकोण में स्थित शुभ ग्रह की दृष्टि हो, लग्नेश लग्न को देखता हो या लग्नेश की शुभ ग्रहों से युति हो या शुभ भाव में स्थित शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो डॉक्टर रोगी को स्वस्थ करने में सफल हो जाएगा।

2. लग्न में अशुभ ग्रह की राशि हो या लग्न में अशुभ ग्रह स्थित हों या उनकी दृष्टि हो, लग्नेश त्रिक भाव (6, 8, 12) या ओपोक्लिम भाव (3, 6, 9 या 12) में हो या अशुभ ग्रहों की युति/दृष्टि हो या अस्त, नीचस्थ, शत्रु क्षेत्रीय हो या केंद्र/त्रिकोण में होकर अशुभ ग्रहों से युति/दृष्टि में हो तो डॉक्टर रोगी को निरोग बनाने में सफल नहीं होगा। डॉक्टर को तुरंत बदल देना चाहिए।
3. लग्न में चर राशि हो, लग्नेश भी चर राशि में स्थित हो तो मरीज डॉक्टर या स्थान आदि के परिवर्तन से ठीक हो जाएगा।
4. उपरोक्त वर्णन में अगर दशम भाव शुभ हो तो इसका अर्थ है कि रोग का निदान सही हुआ है, इलाज ठीक चल रहा है और रोगी डॉक्टर की सलाह का पालन करेगा।
5. षष्ठ और सप्तम भाव में शुभ ग्रहों की राशि हो तथा इन भावों में शुभ ग्रह स्थित हों या उनकी दृष्टि हो, इनके स्वामी शुभ स्थिति में हों तो मरीज़ दवाई से ठीक हो जाएगा। अगर छठे, सातवें भाव में अशुभ ग्रहों की राशि हो, इन भावों में अशुभ ग्रहों की स्थिति/दृष्टि हो, इनके स्वामी अशुभ भावों में स्थित हों, नीचस्थ या अस्त या शत्रुक्षेत्री हों या अशुभ ग्रहों के मध्य स्थित हों तो रोग आसानी से ठीक नहीं होगा या अधिक जटिल हो जाएगा।
6. षष्ठेश या सप्तमेश और अष्टमेश के मध्य इत्थसाल योग बन रहा हो मृत्यु की संभावना होती है।
7. चतुर्थ भाव में अशुभ राशि हो या चतुर्थेश अशुभ ग्रह हो, चतुर्थ में अशुभ ग्रह स्थित हो या उसकी दृष्टि हो या चतुर्थेश नीचस्थ, अस्त या शत्रुक्षेत्री हो तो मरीज सर्वोत्तम इलाज के बावजूद ठीक नहीं होगा। चतुर्थ भाव और चतुर्थेश शुभ प्रभाव में होने पर दवाई से मरीज़ ठीक हो जाएगा।

संक्षेप में कह सकते हैं कि अगर चंद्र उपचय भावों (3, 6, 10, 11) में स्थित हो और शुभ ग्रह केंद्र (1, 4, 7, 10), त्रिकोण (5, 9) और अष्टम भाव में स्थित हों तो मरीज़ ठीक हो जाएगा। अगर इन भावों में अशुभ ग्रह स्थित हैं, तो बीमारी ठीक नहीं होगी। लग्न और लग्नेश बली हों और शुभ स्थिति में हों, शुभ ग्रहों से दृष्ट हों या उनके मध्य स्थित हों तो मरीज़ ठीक हो जाएगा।

शरीर के विभिन्न भागों का राशियों से संबंध

राशि	शरीर का भाग
मेष	सिर
वृष	आंखें विशेषकर दायीं आंख, चेहरा, मुंह, गर्दन
मिथुन	कंधे, बांहें, कान, विशेषकर दाहिना कान
कर्क	छाती
सिंह	हृदय, पेट (विशेषकर ऊपरी भाग), गर्भाशय
कन्या	आंतें, कमर, पेट का नीचे का भाग

तुला	गुर्दे, वीर्य, यौन प्रवृत्ति, गर्भाशय, योनि, पित्ताशय आदि
वृश्चिक	बाह्य जननांग, गुदा
धनु	जांघ
मकर	घुटने, रीढ़ की हड्डी
कुंभ	बायां कान, घुटनों के नीचे के पैर, पिंडलियां
मीन	पैर, बायां आंख

ग्रह और शरीर के भाग

सूर्य	हृदय, अस्थियां, पेट, दायीं आंख
चंद्र	छाती, रक्त, हृदय
मंगल	सिर, पीठ, विशेषतया पीठ पर निशान
बुध	गर्दन, कंधे, बांहें
बृहस्पति	वसा, नितंब
शुक्र	चेहरा
शनि	पैर, जांघे
राहु	घुटनों के नीचे पैर, होंठ
केतु	चरण

निरोग होने में विलंब या बीमारी में जटिलता

1. यदि 6 और 8 भावों के स्वामियों में राशि विनिमय हो।
2. 3, 6, 8, 9, 12 एवं लग्न में अशुभ ग्रह स्थित हों।
3. शनि या मंगल केंद्र या द्वादश भाव में स्थित हो तो निरोगता बहुत देरी से आती है।
4. लग्नेश अशुभ ग्रह होकर लग्न में स्थित हो या बली होकर द्वादश में हो।
5. अष्टमेश केंद्र में हो, लग्नेश 6, 8 या 12 में हो और चंद्र निर्बल हो।
6. चंद्र मूलत्रिकोण में होकर वक्री ग्रह के साथ हो।
7. लग्नेश और षष्ठेश में राशि विनिमय हो।
8. शनि या मंगल लग्न में स्वराशि में हो।
9. लग्नेश और दशमेश में या चतुर्थेश और सप्तमेश में शत्रुता हो।

10. लग्नेश और चंद्र में इशराफ़ योग हो।
11. सप्तम में अशुभ ग्रह हों।
12. 6 या 8 भाव में अशुभ ग्रह हों या इन पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो।
13. पंचम या नवम में नीच का या अस्त या शत्रुक्षेत्री या पापकर्तरी में ग्रह हो।
14. मंगल उच्च का या स्वक्षेत्री या मित्रराशि में दशम भाव में स्थित हो।
15. अशुभ ग्रह या अष्टमेश केंद्र में स्थित हो।
16. अशुभ या वक्री ग्रह की चंद्र से युति हो। वक्री ग्रह चंद्र की राशि में हो।
17. वक्री ग्रह चतुर्थ या सप्तम भाव में स्थित हो।
18. लग्न या चंद्र अगर बुध और शुक्र के मध्य स्थित हो तो निरोगता देरी से आती है परंतु मृत्यु नहीं होती।

क्या रोगी जीवित रहेगा ?

9.1.1999 को 8:25 दिल्ली

	शनि 03–02		
गुरु 29–22	**कुंडली 17**		राहु 28–57
लग्न 12–16 के.28–51 शु.11–43			
बुध 09–10 सू.24–32			मं. 28–28 चं.19–19

लग्न पृष्ठोदय और चर राशि में है जहां राहु–शनि से दृष्ट होकर केतु स्थित है। केंद्र और त्रिकोण में अशुभ ग्रह मौजूद हैं। लग्न, सूर्य और चंद्र दूषित हैं। शुभ ग्रह दूषित हैं। रोगी की मृत्यु का संकेत है। अष्टमेश द्वादश में स्थित है और अष्टम की राशि स्थिर है। अतः रोगी की मृत्यु अस्पताल में हो गयी। सर्वाधिक बली ग्रह शुक्र की लग्न से युति है। दोनों में 1^0 से कम अंतर है और वे चर राशि में हैं। अतः एक दिन से कम समय का संकेत है। शुक्र चर नवमांश में स्थित है। रोगी की उसी दिन रात में मृत्यु हो गयी।

क्या रोगी निरोग हो जाएगा या जीवित रहेगा ?

25.08.1998 को 19:20 दिल्ली

गुरु(व) 1–55	शनि(व) 9–43		
लग्न 19–38 केतु 7–37	**कुंडली 18**		शु. 21–6 मं. 9–14 बु. 22–18
			राहु 7–37 सू. 8–20
			चंद्र 17–34

लग्न में स्थिर और शीर्षोदय राशि है जहां अशुभ राहु और सूर्य से दृष्ट केतु स्थित है। अष्टम में कोई शुभ ग्रह नहीं है, अतः रोगी की मृत्यु का संकेत है।

1. लग्न में पृष्ठोदय राशि हो, केंद्र में अशुभ ग्रह हों और चंद्रमा अष्टम में हो तो रोगी की मृत्यु का संकेत होता है।
2. लग्न में अशुभ ग्रह हों तो बीमारी डॉक्टर के कारण जटिल हो जाएगी। डॉक्टर बदलना चाहिए।
3. दशम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो बीमारी रोगी के कारण जटिल हो जाएगी। अतः दवाई और परहेज आदि का नियमपूर्वक पालन करें।
4. चतुर्थ में अशुभ ग्रह मौजूद हों तो औषधि की गलत प्रतिक्रिया होगी और बीमारी जटिल हो जाएगी, अतः औषधि की पद्धति बदलनी चाहिए।
5. सप्तम में अशुभ ग्रह मौजूद हों तो बीमारी जटिल हो जाएगी।

अतः उचित और उत्तम इलाज के लिए लग्नेश और दशमेश में मित्रता होनी चाहिए या इत्थसाल योग बनता हो, अन्यथा चतुर्थेश और सप्तमेश में मित्रता होनी चाहिए। रोगी की जन्मकुंडली की लग्न या लग्न की राशि प्रश्नकुंडली के सप्तम या अष्टम भाव में नहीं होनी चाहिए। शुभ ग्रह अगर 3, 6, 9 या 11 भाव में गोचर करे तो रोगी ठीक हो जाता है।

अध्याय–11

यात्रा और यात्री

यात्रा का अर्थ किसी उद्देश्य से घर से बाहर जाना है। यात्रा 4 प्रकार की होती हैं।

- प्रतिदिन कार्यस्थल पर जाना या बाजार से सामान खरीदने जाना।
- शहर के बाहर किसी कार्यक्रम में सम्मिलित होने जाना।
- मनोरंजन या धर्मार्थ किसी स्थान की यात्रा।
- विदेश यात्रा।

प्रतिदिन की यात्रा का संकेत लग्नेश और तृतीयेश और उनकी स्थिति वाले भावों के मध्य निर्मित इत्थसाल से प्राप्त होता है। तृतीयेश या लग्नेश राशि कुंडली या नवमांश में चर राशि में होनी चाहिए।

किसी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए शहर से बाहर जाने का संकेत 1, 3 और 7 भाव और उनके स्वामियों से मिलता है।

विदेश यात्रा का संकेत 3, 7, 9 और 12 भाव और उनके स्वामियों से प्राप्त होता है।

सामान्यतः लग्न के अधिक अथवा कम अंशों द्वारा दीर्घ या लघु यात्राओं का ज्ञान होता है। सप्तम भाव द्वारा गंतव्य स्थान और वहां से वापसी का बोध होता है।

चतुर्थ भाव से यात्रा के परिणाम और लौट आने का पता चलता है।

दशम भाव से यात्रा के उद्देश्य और इरादे का पता चलता है। तृतीय भाव से लघु यात्राओं का ज्ञान होता है जबकि नवम भाव से लघु दीर्घ यात्राओं का बोध होता है।

यात्रा का अर्थ है घर से दूर चले जाना। इसका अर्थ यह है कि चतुर्थ भाव और चतुर्थेश का संबंध अशुभ ग्रहों से होना चाहिए।

दशम भाव कर्म का संकेतक है तथा चतुर्थ के सामने स्थित होने से जातक को सुख की हानि बताता है। यात्रा करते समय जातक कर्म करता है। अतः यात्रा के समय गोचर ग्रहों का प्रभाव दशम भाव और दशमेश पर भी होना चाहिए।

लग्न जातक स्वयं होता है। चतुर्थ भाव जातक का घर होता है, सप्तम भाव यात्रा का अंत बताता है तथा यात्रा समाप्त करने का ख्याल मन में आता है। दशम भाव यात्रा का आरंभ है तथा यात्रा करने का मन बनता है। अतः यात्रा के लिए सभी केंद्र महत्वपूर्ण हैं।

देश में अन्य शहरों की यात्रा

व्यापार, विवाह, सम्मेलन आदि से संबंधित अन्य नगरों की यात्रा के लिए 3, 7 भाव और उनके स्वामियों का अध्ययन करना चाहिए। 3 या 7 भाव में चर राशि होना या इनके स्वामियों का चर राशि में स्थित होना या चर राशि में स्थित ग्रह की इन पर दृष्टि होना यात्रा दर्शाता है।

रेलयात्रा

रेलयात्रा के कारक मंगल और चंद्र हैं तथा भाव 3 और 7 हैं। मंगल चर राशि में होना चाहिए तथा बली चंद्र केंद्र में या त्रिकोण में हो। केंद्र में अशुभ ग्रह (राहु या शनि) स्थित नहीं हों या उनकी दृष्टि नहीं होनी चाहिए।

अशुभ ग्रह उपचय भाव (3, 6, 11) में हों (दशम को छोड़कर) तथा शुभ ग्रह केंद्र या त्रिकोण में हों तो यात्रा सुरक्षित रहती है।

वायु यात्रा

वायु यात्रा के कारक शनि (वात) और बृहस्पति (आकाश तत्व) हैं। यही ग्रह विदेश की वायु यात्रा का संकेत देते हैं। कारक 10, 9 और 12 भाव तथा इन भावों में स्थित वायु तत्व राशियां हैं।

मतांतर से शुक्र सप्तम राशि का स्वामी होने के कारण वायु यात्रा का कारक है। वायु तत्व राशि से युक्त सप्तम भाव वायु यात्रा का संकेतक है।

समुद्र या जल यात्रा

समुद्र द्वारा या नाव द्वारा यात्रा के लिए अष्टम भाव और जल राशियां विशेषकर वृश्चिक महत्वपूर्ण हैं।

क्या मैं यात्रा पर जाउंगा ?

हां, जातक यात्रा पर जाएगा, अगर

1. लग्न और चंद्र चर राशि में हों, शुभ ग्रहों की इनसे युति या दृष्टि हो और चतुर्थ भाव दूषित हो।
2. लग्नेश और नवमेश में इत्थसाल हो या इनकी लग्न में युति हो अथवा चंद्र और नवमेश में इत्थसाल होकर लग्नेश नवम में हो।
3. लग्न और चंद्र से नवमेशों में इत्थसाल हो।
4. लग्नेश और तृतीयेश के मध्य केंद्र में इत्थसाल हो और निर्दोष शुभ ग्रह से युति हो।
5. चतुर्थेश लग्न में हो और लग्नेश तृतीय भाव में या केंद्र में स्थित हो तथा शुभ ग्रहों की युति/दृष्टि हो।
6. अशुभ ग्रह चतुर्थ या दशम भाव में हों।
7. लग्नेश और नवमेश चर राशि में हों।
8. नवमेश लग्न में स्थित हो और लग्नेश केंद्र में दुष्प्रभाव से रहित होकर स्थित हो।

9. दशम भाव में चर राशि हो तथा शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि हो।

10. लग्नेश या चंद्र नवम या तृतीय भाव में स्थित हो। लग्न में चर राशि हो तो जातक यात्रा पर शीघ्र जाएगा। लग्न में द्विस्वभाव राशि हो तो यात्रा में कुछ देरी होगी। स्थिर राशि होने पर यात्रा नहीं होगी।

11. लग्न में शीर्षोदय राशि हो और शुभ ग्रह या लग्नेश की दृष्टि हो।

12. लग्न, आरूढ़ लग्न या दशम भाव में चर राशि हो तथा शुभ ग्रह की युति/दृष्टि हो।

2 सितंबर 1998 को 8:45 दिल्ली
क्या जातक अमेरिका का भ्रमण करेगा ?

गुरु(व) 00–59	लग्न 0–47 श.(व) 9–31		
केतु 7–38	कुंडली 25		मं. 14–23 बु. 28–13
			शु. 1–1 रा. 7–38 सू. 6–7
चंद्र 26–4			

लग्न में चर राशि है, दशम में चर राशि है, नवांश चर है, आरूढ़ लग्न चर है, नवमेश द्वादश में है, लग्नेश मंगल और बृहस्पति (वक्री) एक दूसरे से त्रिकोण में हैं लेकिन इशराफ़ का निर्माण कर रहे हैं। नवमेश वक्री है।

लग्नेश मंगल और तृतीयेश बुध की चतुर्थ भाव में (केंद्र में) युति है लेकिन बुध, मंदगति मंगल से आगे है। अतः इशराफ योग है। मंगल और बुध की दशम पर दृष्टि है। मंगल कार्य प्रणाली और बुध दस्तावेज लेखन और सिफारिश के प्रतिनिधी हैं। नवमेश बृहस्पति वक्री है और लगभग 1^0 पर स्थित है। लग्न में वक्री शनि स्थित है, लग्नेश चतुर्थ में नीचस्थ है। चतुर्थेश चंद्र त्रिकोण में होकर बली है और मित्र राशि में है। जातक अमेरिका की यात्रा नहीं कर सका, उसको वीसा प्राप्त नहीं हो पाया।

यात्री कब वापस लौटेगा ?

(कृपया अध्याय 9 भी देखें)

खोया हुआ व्यक्ति लौट आएगा

1. जब सप्तमेश लग्न पर गोचर करे।

2. सप्तमेश और लग्नेश इत्थसाल में हों।

3. लग्न और सर्वाधिक बली ग्रह के मध्य जितने भाव हों तो उतने ही मास में (सर्वाधिक बली ग्रह अगर नवमांश में चर राशि में हो), उससे दुगुने मास में (अगर सर्वाधिक बली ग्रह नवमांश में स्थिर राशि में हो) अथवा तीन गुने मास में (अगर उपरोक्त राशि द्विस्वभाव हो) वापस लौट आएगा। (प्रश्न तंत्र)

4. अगर सप्तमेश वक्री हो।

5. शुभ ग्रह का चतुर्थ भाव पर गोचर हो।

6. चंद्रमा का चतुर्थ भाव पर गोचर हो।

7. शुभ ग्रह का सप्तम भाव पर गोचर हो। इससे लौटने के समय का संकेत भी मिलता है।

8. बृहस्पति और शुक्र साथ–साथ 2, 3 या 5 भाव में हों तो व्यक्ति उसी दिन वापस लौट आएगा।

9. 6 या 7 भाव में कोई ग्रह हो और बृहस्पति केंद्र में स्थित हो तो व्यक्ति 7 या 27 दिन में लौटेगा।

10. लग्न से सर्वाधिक बली ग्रह जितने भाव आगे हो, उन्हें गिन लें और 12 भाव से गुणा करें। यात्री इतने दिनों में वापस लौट आएगा। मान लीजिए बृहस्पति सर्वाधिक बली ग्रह होकर कर्क में स्थित है।

मीन लग्न से कर्क के बीच 4 भाव माने जाएंगे, 5 नहीं। लग्न को न गिनें। 4 x 12 = 48 दिन (प्रश्नतंत्र के अनुसार यह संख्या महीनों की संकेतक है)। अतः यात्री 4 महीनों में चर राशि में लौट आएगा।

11. पणफर भावों (2, 5, 8, 11) में ग्रह हो तो यात्री उस समय लौटता है, जब कोई ग्रह इन भावों से गोचर करेगा।

12. जब 2, 5 या 11 से चंद्रमा का गोचर हो।

13. चतुर्थ भाव में चर राशि में बुध, बृहस्पति और शुक्र स्थित हों तो यात्री लौट आता है।

14. मतांतर से राशि स्वामी को देखना चाहिए। ग्रह के अनुसार लौटने के समय का अनुमान होता है। सूर्य से अयन, चंद्र से मुहूर्त तथा मंगल से दिन आदि जाने जाते हैं।

खोया हुआ व्यक्ति कब लौटेगा ?

प्रश्नकर्ता का बड़ा भाई खो गया था

17.04.1998 को 20:30 दिल्ली

बुध(व) 16–16	सू. 3–34 मं. 9–35 श. 0–02		
के. 15–6 शु.18–10 गु. 23	**कुंडली 27**		
			राहु 15–6
चंद्र 7–11		लग्न 26–17	

मंगल केंद्र और स्वराशि में स्थित होकर सर्वाधिक बली है। वह सप्तमेश भी है। चंद्र का मंगल से इत्थसाल है। बड़े भाई, एकादशेश सूर्य का भी मंगल से इत्थसाल है। सूर्य, चंद्र और सप्तमेश मंगल त्रिकोण और इत्थसाल में हैं। अतः प्रश्नकर्ता का बड़ा भाई सुरक्षित लौट आएगा। क्योंकि चंद्र केंद्र में नहीं है तथा केंद्र स्थित ग्रह से इत्थसाल में है, खोया व्यक्ति घर लौटने के लिए चल पड़ा है। कितना समय लगेगा? कार्येश मंगल दिनों का संकेत करता है। चंद्रमा और मंगल के मध्य 2^0 से कुछ अधिक का अंतर है। अतः प्रश्नकर्ता को सलाह दी गयी कि खोया व्यक्ति तीन दिन के अंदर लौट आएगा। वास्तव में वह तीसरे दिन लौट आया।

अधिकांश ज्योतिर्विद उपरोक्त पद्धति का उपयोग करते हैं।

▯

अध्याय—12

चोरी और गायब सामान की वापसी

लग्न प्रश्नकर्ता का प्रतिनिधि है। चंद्रमा खोये हुए/गायब सामान का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव खोये सामान और उसकी पुनर्प्राप्ति का प्रतिनिधि है। सप्तम भाव चोर का प्रतिनिधि है जबकि अष्टम भाव चोर द्वारा जमा धन का प्रतिनिधि है। दशम भाव पुलिस या सरकार का प्रतिनिधित्व करता है।

चोरी की प्रक्रिया

1. मंगल सप्तम भाव में स्थित हो, या सप्तमेश से चंद्र की युति या दृष्टि हो तो चोरी ताला तोड़कर या ताकत का इस्तेमाल कर की गयी है।
2. सप्तम में शुक्र और चंद्र हों तो ताला अतिरिक्त चाबी से खोला गया है।
3. अ. निर्बल चंद्र की लग्नेश से युति हो और सप्तमेश बली हो या

   आ. सप्तमेश सूर्य से अष्टम भाव में स्थित हो या

   इ. बली चंद्र की अशुभ ग्रह से युति हो और लग्नेश की सप्तम भाव पर दृष्टि न हो या

   ई. लग्नेश की अशुभ ग्रहों से युति हो और सप्तमेश पर दृष्टि हो। द्वितीयेश, चंद्र और सूर्य बली हों तो चोरी खुलेआम जान पहचान के लोगों के सम्मुख की गयी है।

मूल्यवान या साधारण वस्तु

अ. नवमांश लग्न बली हो तो खोयी वस्तु मूल्यवान है।

आ. नवमांश लग्न सामान्य बली है तो खोयी वस्तु साधारण है।

इ. नवमांश लग्नेश नीचस्थ हो तो खोयी वस्तु घिसी हुई या पुरानी है।

चोर ने क्या चोरी किया है ?

इसका ज्ञान चंद्रमा/नवमांश से होता है।

1. चंद्र प्रथम नवमांश में हो, वर्गोत्तम हो या मेष में हो तो खोयी वस्तु सोने या चांदी की है।
2. चंद्रमा द्वितीय नवमांश में हो या वर्गोत्तम या वृष राशि में हो तो खोयी वस्तु कोई आभूषण या बर्तन है। चंद्र पर मंगल की दृष्टि हो तो वस्तु लोहे की बनी है। तीव्र गति ग्रह की दृष्टि हो तो वस्तु घिसी हुई या पुरानी है।

3. चंद्रमा तृतीय नवमांश में, वर्गोत्तम या मिथुन में हो तो नकदी रुपये या दस्तावेज चोरी हुए हैं।
4. चंद्रमा कर्क में या चतुर्थ नवमांश में या वर्गोत्तम में हो तो वस्तु सोने की है।
5. चंद्रमा सिंह में या पंचम नवमांश में या वर्गोत्तम में हो तो वस्तु चांदी की है। अगर सूर्य की दृष्टि है तो वस्तु सोने की बनी है।
6. चंद्रमा कन्या में हो या षष्ठ नवमांश में या वर्गोत्तम हो तो वस्तु कांच, लोहे आदि से बनी है या वस्त्र हैं। यदि बुध की दृष्टि हो तो सामान पत्थर का है। शुक्र की दृष्टि हो तो वस्तु कपड़े की बनी है।
7. चंद्रमा तुला में हो या सप्तम नवमांश में हो या वर्गोत्तम हो तो वस्तु दस्तावेज़ होती है। अगर शुक्र की दृष्टि हो तो सुगंधित पदार्थ या कपड़े हो सकते हैं।
8. चंद्रमा वृश्चिक में हो या वर्गोत्तम हो या मंगल की दृष्टि हो तो वस्तु सोने या चांदी की होती है या व्यापारिक दस्तावेज़ होता है।
9. चंद्रमा धनु में हो या वर्गोत्तम हो या बृहस्पति की दृष्टि हो तो खोयी वस्तु आभूषण या वस्त्र या घरेलू सामान होता है।
10. चंद्रमा मकर में हो, या मकर में वर्गोत्तम हो तो खोयी वस्तु आभूषण या नगदी होती है। अगर बृहस्पति की दृष्टि हो तो स्वर्ण या नगद रुपया चोरी होता है।
11. चंद्रमा कुंभ में हो या कुंभ में वर्गोत्तम हो तो खोयी वस्तु सिक्के, नोट अर्थात नगदी या आभूषण होते हैं। सूर्य की दृष्टि हो तो नगदी चोरी होती है।
12. चंद्रमा मीन में हो या मीन में वर्गोत्तम हो तो खोयी वस्तु कांच आदि की बनी हो सकती है। चंद्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो रत्न, आभूषण या बर्तन चोरी होते हैं।

चोर कौन है ?

लग्न में चर राशि हो या नवमांश लग्न वर्गोत्तम होकर चर राशि में हो तो चोर घर से बाहर का व्यक्ति है और वस्तु घर से बहुत दूर जा चुकी है।

लग्न में स्थिर राशि हो या नवांश लग्न स्थिर राशि में या वर्गोत्तम हो तो चोर कोई रिश्तेदार या मित्र आदि होता है तथा खोयी वस्तु घर के नज़दीक ही मौजूद होती है।

लग्न या नवांश लग्न या वर्गोत्तम द्विस्वभाव राशि में हो तो चोर पड़ोसी है और खोयी वस्तु किसी स्थान पर सुरक्षित रखी हुई है।

1. चंद्र की सप्तम में स्थित शुक्र पर दृष्टि हो तो चोर ने हाल ही में चोरी करना शुरु किया है।
2. सप्तमेश शनि पर चंद्र की दृष्टि हो तो चोर अभिमानी या पाखंडी होता है।
3. सप्तम भाव में स्थित शनि पर चंद्र की दृष्टि हो तो चोर अभिमानी होता है।

4. लग्न और चंद्र पर शनि की दृष्टि हो तो चोर अभिमानी होता है।
5. सप्तम में स्थित बुध पर शनि की दृष्टि हो तो चोर अभिमानी होता है।
6. सप्तम में स्थित शनि पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो चोर जाना पहचाना व्यक्ति होता है।
7. सप्तमेश पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो चोर पक्का होता है।
8. सप्तमेश पर मंगल की दृष्टि हो तो चोर पुलिस लेखा में उपलब्ध पुराना अपराधी होता है।
9. उच्च का, स्वक्षेत्री या बली ग्रह 1, 7 या 10 में स्थित हो तो उस ग्रह से मेल खाने वाले व्यक्ति ने चोर की सहायता की है।

सप्तम भाव में स्थित ग्रह या सप्तमेश द्वारा चोर की पहचान

चोर की पहचान सप्तमेश या सप्तम में स्थित बली ग्रह द्वारा की जाती है लेकिन प्राचीन ग्रंथ प्रश्न ज्ञान, प्रश्न शिरोमणि आदि के अनुसार चोर की पहचान लग्नेश से होती है। चूंकि हमने सप्तम भाव को चोर का प्रतिनिधि माना है अतः चोर की पहचान सप्तमेश और सप्तम भाव से होती है।

सूर्य सप्तमेश हो या सप्तम भाव में स्थित हो तो पिता या परिवार का मुखिया चोर होता है। चंद्रमा सप्तमेश हो या सप्तम भाव में स्थित हो तो मां अथवा चेचक के दाग, या मस्से वाली स्त्री चोर होती है।

मंगल सप्तमेश हो या सप्तम भाव में स्थित हो तो भाई, मित्र या तगड़े डीलडौल वाला दुस्साहसी व्यक्ति चोर होता है। बुध सप्तमेश हो या सप्तम भाव में स्थित हो तो स्वयं की संतान, छोटा भाई या कोई मजाकिया/चुलबुला बच्चा चोर होता है।

सप्तमेश बृहस्पति हो तो कोई अधिकारी, पंडित, ब्राह्मण, अध्यापक या कोई सम्मानित व्यक्ति चोर होता है। उसने दूसरों को भड़का कर या दूसरों की मदद से चोरी की है।

सप्तमेश शुक्र हो तो कोई शिक्षित, फैशनप्रेमी, आकर्षक व्यक्तित्व वाला, युवक या युवती चोर है। सप्तमेश शनि हो तो काले रंग, अच्छे कद तथा निर्बल शरीर वाला नौकर चोर होता है।

सप्तम भाव में राहु हो तो चोर चोरी में पक्का होता है। वह झोंपड़ी आदि में रहने वाला लंबे बाल या दाढ़ी–मूंछ वाला होता है।

सप्तम में केतु हो तो चोर पक्का होता है। वह अपने दल की सहायता से योजना बनाकर चोरी करता है। उसे पकड़ना कठिन होता है।

क्या संदिग्ध व्यक्ति चोर है ?

चंद्र और अशुभ ग्रह के मध्य इत्थसाल हो तो संदिग्ध व्यक्ति चोर होता है। चंद्र का शुभ ग्रह के साथ इत्थसाल हो तो संदिग्ध व्यक्ति निर्दोष होता है।

खोयी वस्तु का स्थान

खोयी वस्तु के स्थान का पता चतुर्थ भाव और उसमें स्थित ग्रह से तथा चतुर्थ की राशि के तत्व से चलता है।

1. चंद्र का चतुर्थ भाव पर प्रभाव हो तो खोयी वस्तु जल के नज़दीक रखी गयी है।
2. मंगल प्रभावी हो तो वस्तु रसोई, अग्नि या औजार बक्से आदि के निकट रखी है।
3. शुक्र का प्रभाव हो तो पलंग पर या शयनकक्ष में स्थित है।
4. बृहस्पति प्रभावी हो तो उद्यान या मंदिर में मौजूद है।
5. बुध का प्रभाव चतुर्थ भाव पर हो या चतुर्थ पर दृष्टि हो तो खोयी वस्तु बैठक में या पुस्तकालय में या पुस्तक, अनाज, वाहन के निकट रखी है।
6. सूर्य का संबंध चतुर्थ भाव से हो तो खायी वस्तु बैठक में या गृह स्वामी के शयन कक्ष में या घर के बाहर जमीन में गड़ी है।
7. चतुर्थ भाव पर शनि या राहु का प्रभाव हो तो खोयी वस्तु अंधेरे या गंदे स्थान पर रखी है। चतुर्थ भाव की राशि के तत्व (अग्नि, पृथ्वी, वायु और जल) का विचार करें। खोयी वस्तु राशि के तत्व के निकट रखी रहती है।

क्या खोयी वस्तु वापस मिल सकती है ?

खोयी वस्तु की जानकारी के लिए सामान्यतः प्रश्न कुंडली के सप्तम भाव, लग्न, आरुढ़ लग्न और चंद्र को देखते हैं क्योंकि लग्न, आरूढ़ लग्न और चंद्र खोयी वस्तु के प्रतिनिधि हैं। सप्तम भाव और सप्तमेश चोर के संकेतक हैं। 2, 4, 11, 5 और 9 भाव खोयी वस्तु की प्राप्ति में सहायक हैं। चतुर्थ भाव पुनर्प्राप्ति का प्रतिनिधि है।

खोयी वस्तु मिल जाएगी

1. यदि लग्नेश और सप्तमेश में इत्थसाल हो।
2. चंद्रमा पर चंद्रमा के भाव की राशि के स्वामी की दृष्टि हो।
3. लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में स्थित हों।
4. सप्तम भाव में केवल बृहस्पति स्थित हो। अगर अन्य ग्रह स्थित होगा तो खोयी वस्तु नहीं मिलेगी।
5. चंद्र चतुर्थ में स्थित हो।
6. चंद्र आरूढ़ लग्न से दशम में स्थित हो।
7. द्वितीयेश और नवमेश में इत्थसाल हो।

8. शुभ ग्रह लग्न, आरूढ़ लग्न, 5, 7, 9 में स्थित हों।
9. लग्न शीर्षोदय राशि में और आरूढ़ लग्न पृष्ठोदय राशि में हो।
10. चंद्र पृष्ठोदय राशि में हो और शनि के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह की दृष्टि हो। शनि की चंद्र पर दृष्टि होने पर खोयी वस्तु नहीं मिलेगी।
11. चंद्र पृष्ठोदय राशि में हो और मंगल चंद्रमा से दशम भाव में हो।
12. सप्तम भाव में 2, 7, 9 या 11 राशि हो।
13. लग्न या आरूढ़ लग्न से 3 या 5 भाव में शुभ ग्रह हों।
14. सप्तम में बली चंद्र स्थित हो। चंद्र दूषित या कृष्ण पक्ष का हो तो खोयी वस्तु नहीं मिलेगी।
15. 11वें भाव में अशुभ ग्रह स्थित हो।
16. शीर्षोदय लग्न में शुभ ग्रह स्थित हो या उनकी शीर्षोदय लग्न पर दृष्टि हो।
17. लग्न में स्थित पूर्ण चंद्र शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो।
18. पूर्ण चंद्र पंचम या नवम भाव में स्थित हो कर बृहस्पति या शुक्र से दृष्ट हो।
19. लग्न, 2, केंद्र, त्रिकोण या 11 वें भाव में शुभ ग्रह स्थित हों।
20. लग्न, आरूढ़ लग्न और नवमांश में चर राशि हो।
21. 5, 7, 9 में शुभ ग्रह हों।
22. लग्न, 3, 5 भावों में मित्र ग्रह हों तथा 2 और 11 में बली शुभ ग्रह हों। केंद्र, त्रिकोण, 8 या 11 में अशुभ ग्रह नहीं हों।
23. चंद्र और बृहस्पति केंद्र में हों।
24. चंद्र लग्न या दशम भाव में स्थित हो तथा शुभ ग्रह से इत्थसाल में हो।
25. लग्न या चतुर्थ में शुभ ग्रह या चतुर्थेश हो तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो।
26. लग्न में पूर्ण चंद्र स्थित हो तथा शुभ ग्रह या चतुर्थेश की दृष्टि हो।
27. लग्न में शुक्लपक्ष का चंद्र स्थित हो तथा सूर्य या शुभ ग्रह की दृष्टि हो।
28. 2, 3 या 5 में शुभ ग्रह स्थित हों।
29. चतुर्थेश लग्न में स्थित हो या लग्न पर दृष्टि हो।
30. लग्नेश, द्वितीयेश और चंद्र में संबंध हो और लग्न, द्वितीय या त्रिकोण में स्थित हो।
31. द्वितीयेश द्वितीय या चतुर्थ भाव में स्थित हो।

32. लग्नेश लग्न में स्थित हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो।
33. अशुभ ग्रह पृष्ठोदय राशि में हो।
34. लग्नेश एकादश में हो और एकादशेश लग्न में हो या दोनों लग्न में या एकादश में हों।
35. एकादश भाव पर लग्नेश और एकादशेश की दृष्टि हो।
36. एकादश भाव पर सभी ग्रहों की मित्र दृष्टि हो।
37. लग्नेश का द्वितीयेश के साथ और चंद्र राशीश के साथ इत्थसाल हो।
38. 2, 9, 11 में शुभ ग्रह हों और लग्नेश की लग्न पर दृष्टि हो।
39. द्वितीयेश लग्न में या द्वितीय भाव में हो और द्वितीय भाव में स्थित ग्रह से इत्थसाल में हो।
40. द्वितीय भाव में द्वितीयेश के साथ शुभ ग्रह स्थित हों।
41. चंद्र और एकादशेश द्वितीय भाव में स्थित हों।
42. लग्नेश और नवमेश की युति शुभ भाव में हो।
43. लग्नेश त्रिकोण में और चंद्र स्वगृही हों या दोनों इत्थसाल में हों या दृष्टि में हों।
44. लग्नेश पर चंद्र की दृष्टि हो और लग्नेश चंद्र को देखता हो।
45. लग्नेश या एकादशेश एकादश में स्थित होकर चंद्र से दृष्ट हो।
46. लग्न में 3, 6, 7 या 11 राशि हो जिस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो या लग्न में शुभ ग्रह स्थित हो।
47. लग्न में बुध हो और मिथुन में बृहस्पति और शुक्र हों।
48. लग्नेश, एकादशेश और बली चंद्र शुभ भाव में इत्थसाल में हों।
49. चंद्रराशीश पर चंद्र की दृष्टि हो।
50. चंद्र या बृहस्पति 4, 7, 8, 10 भावों में किसी का स्वामी हो, उसका लग्न या लग्नेश से संबंध हो या उपरोक्त भावों में अकेले ही विद्यमान हो।
51. सप्तमेश और चंद्र अस्त हों तो चोर चोरी के माल के साथ पकड़ा जाएगा।
52. लग्नेश और द्वितीयेश में इत्थसाल न हो तो खोयी वस्तु की खबर मिलेगी मगर वस्तु वापस नहीं प्राप्त होगी।

खोयी वस्तु पुलिस द्वारा प्राप्त होगी, अगर

1. लग्नेश और दशमेश युति या इत्थसाल में हों तो खोयी वस्तु पुलिस द्वारा वापस मिल जाएगी।
2. द्वितीयेश और लग्नेश पर दशमेश या पंचमेश की दृष्टि हो।

3. दशमेश और चतुर्थेश की द्वितीयेश और द्वादशेश पर दृष्टि हो।
4. लग्नेश और सप्तमेश में इत्थसाल हो तो चोर पुलिस के डर से माल वापस कर देगा।
5. अष्टमेश और दशमेश के मध्य इत्थसाल हो तो अधिकारी वर्ग चोर का पक्ष लेगा।

खोयी वस्तु प्राप्त नहीं होगी, अगर

1. लग्न में अशुभ ग्रह स्थित हो या लग्नेश अशुभ हो।
2. आरूढ़ लग्न सप्तम भाव में हो।
3. यदि सप्तम भाव में मेष, कन्या या मकर राशि हो।
4. लग्नेश सप्तम में स्थित हो।
5. सूर्य लग्न में हो और चंद्र अस्त हो।
6. द्वितीयेश सप्तम या अष्टम में स्थित हो।
7. मंगल सप्तम या अष्टम में हो।
8. राहु लग्न में और सूर्य अष्टम में हो।
9. अशुभ ग्रह केंद्र, त्रिकोण में हों और द्वितीय भाव पर शुभ प्रभाव न हो।
10. सप्तमेश और चंद्र की सूर्य से युति हो।
11. अष्टमेश सप्तम या अष्टम में स्थित हो।
12. लग्नेश सप्तम में वक्री होकर स्थित हो और सप्तमेश लग्न में मौजूद हो।
13. एकादशेश अष्टम में हो और अष्टमेश के साथ युति हो।
14. सप्तम भाव में शुभ ग्रह हों।
15. द्वितीयेश अस्त हो तो चोर पकड़ा जाएगा मगर खोया माल नहीं मिलेगा।
16. लग्न मकर राशि का हो और शनि से दृष्ट न हो तो खोयी वस्तु के बारे में खबर मिलेगी, मगर वह मिलेगी नहीं।
17. लग्नेश और द्वितीयेश पर कोई दृष्टि नहीं हो।
18. लग्न या द्वितीय भाव पर लग्नेश की दृष्टि न हो।
19. शनि और मंगल लग्न, आरूढ़ लग्न या नवमांश लग्न में स्थित हों।
20. लग्न में चर राशि हो।
21. यदि 15^0 से अधिक का द्विस्वभाव लग्न हो।

22. लग्न में सूर्य और अष्टम में राहु स्थित हों।
23. लग्नेश और एकादशेश निर्बल हों।
24. लग्नेश और द्वितीयेश निर्बल हों और दोनों का परस्पर संबंध नहीं हो।
25. केंद्र, त्रिकोण, 2 और 8 भाव में शुभ ग्रह स्थित हों या उनकी दृष्टि हो।

क्या चोर पकड़ा जाएगा ? हां

1. यदि सप्तमेश अस्त हो।
2. सप्तमेश अशुभ ग्रहों के साथ केंद्र में स्थित हो।
3. अष्टमेश अस्त हो।
4. दशमेश अस्त हो।
5. दशमेश और लग्नेश में इत्थसाल हो तो चोर पुलिस द्वारा पकड़ लिया जाएगा।
6. दशमेश और लग्नेश की युति हो।
7. लग्नेश दशम भाव में स्थित हो।
8. लग्नेश की सप्तम भाव पर दृष्टि न हो तो चोर चोरी के सामान सहित पकड़ा जाएगा।
9. लग्नेश और सप्तमेश की युति हो तो चोर चोरी के सामान सहित पकड़ा जाएगा।
10. चंद्र और सप्तमेश अस्त हों तो चोर चोरी के सामान सहित पकड़ा जाएगा।
11. तृतीयेश और नवमेश, सप्तमेश से इत्थसाल में हों तो चोर अन्य शहर में पकड़ा जाएगा।
12. सप्तमेश का तृतीयेश और दशमेश से इत्थसाल हो तो चोर अन्य शहर में पकड़ा जाएगा।
13. अष्टमेश का दशमेश से इत्थसाल हो तो पुलिस चोर की मदद करेगी।
14. राहु या केतु अष्टम में स्थित हो और लग्न में कोई ग्रह नहीं हो तो चोर पकड़ लिया जाएगा मगर चोरी का सामान नहीं मिलेगा और न ही उसका कुछ पता लगेगा।
15. लग्नेश और सप्तमेश में इत्थसाल हो तो चोर सामान स्वयं वापस कर देगा।
16. लग्नेश लग्न में स्थित हो तो चोर सामान स्वयं वापस कर देगा।
17. सप्तमेश और अष्टमेश में राशि परिवर्तन हो तो चोरों में विवाद हो जाएगा और वे पकड़े जाएंगे।
18. चोर सामान वापस कर देगा अगर लग्नेश का सप्तम भाव में सप्तमेश से इत्थसाल हो और अष्टमेश लग्न में बैठा हो।
19. लग्न से तृतीय भाव में अशुभ ग्रह हो और 5, 7 में शुभ ग्रह हों तो चोर सामान स्वयं वापस कर देगा।

20. द्वितीयेश का लग्न या तृतीय भाव में स्थित ग्रह से इत्थसाल हो तो चोरी किया गया सामान किसी अन्य शहर में स्थानांतरित कर दिया गया है।
21. चंद्रमा लग्न में चर राशि में स्थित हो तो सामान किसी अन्य नगर में स्थानांतरित कर दिया गया है।
22. द्वितीयेश अस्त हो तो चोरी गया सामान चोर के पकड़े जाने के बावजूद प्राप्त नहीं होगा।
23. द्वितीयेश और अष्टमेश में इत्थसाल हो तो चोर पुलिस की वजह से नहीं पकड़ा जा सकेगा।
24. चंद्र अस्त हो या अशुभ ग्रह से दृष्ट हो तो खोया सामान चोर के पास नहीं है।
25. सप्तमेश केंद्र में स्थित हो तो चोर नगर/मोहल्ले में ही स्थित है और दूर नहीं भागा है।
26. सप्तमेश का चंद्र या लग्नेश से इत्थसाल हो तो चोर चोरी में पक्का है।
27. लग्नेश और द्वितीयेश की शुभ ग्रहों से युति हो या उनसे दृष्ट हों तो चोर पुलिस द्वारा पकड़ा जाएगा।
28. पंचमेश और दशमेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो या युति हो तो चोर पुलिस द्वारा पकड़ लिया जाएगा।
29. मंगल दशम में हो और अशुभ ग्रह सप्तम में स्थित हों तो पुलिस चोर को पकड़ लेगी।

कागज़ात कहीं रखकर भूल गये हैं या चोरी हुए हैं ?

प्रश्न ज्योतिष में, रख कर भूली वस्तु की जांच तृतीय/चतुर्थ भाव द्वारा की जाती है। तृतीय भाव और तृतीयेश वस्तु को रख कर भूलने के संकेतक हैं। चतुर्थ भाव और चतुर्थेश वस्तु के चोरी होने के संकेतक हैं।

1. चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि हो या चतुर्थ में बली और शुभ चंद्र स्थित हो तो खोये/भूले कागज़ात अपनी जगह पर सुरक्षित हैं।
2. बली, शुभ चंद्र लग्न में स्थित हो या लग्न में शीर्षोदय राशि हो तथा बली/शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो खोये कागज़ात घर के अंदर ही सुरक्षित हैं।
3. लग्न में बली, शुभ चंद्र हो या शीर्षोदय राशि हो और बली, शुभ ग्रह की दृष्टि हो या एकादशेश एकादश भाव में बली होकर बैठा हो तो जातक खोयी वस्तु को शीघ्र प्राप्त कर लेगा।

लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो वस्तु घर के मुख्य द्वार के निकट स्थित है। लग्न में द्वितीय द्रेष्काण हो तो वस्तु घर के अंदर है। तृतीय द्रेष्काण हो तो वस्तु घर के पृष्ठ भाग में रखी है। 1, 2, 3 द्रेष्काण से क्रमशः अलमारी के नीचे का खाना, मध्य भाग और ऊपरी भाग का बोध भी होता है।

लग्न में स्थित राशि हो या नवमांश लग्न में स्थिर राशि हो या वर्गोत्तम स्थिर राशि हो तो खोयी वस्तु परिवार के किसी सदस्य के पास है। अन्यथा बाहर के किसी व्यक्ति ने ली है या घर के बाहर चली गयी है।

वस्तु वापस नहीं मिलेगी

1. अगर चंद्र और सूर्य 6, 8, 12 में स्थित हों तो कुछ नहीं मिलेगा।
2. चतुर्थ भाव में अशुभ ग्रह हों तो वस्तु नहीं मिलेगी।
3. सप्तम में मंगल, 8 में सूर्य और लग्न में राहु हों तो वस्तु नहीं मिलेगी।

22.05.1997 को 11:45 कानपुर

शनि 22–34 केतु	बुध 12–15	सूर्य 7–23 शुक्र 20–21	
	कुंडली 30		
गुरु 27–34			लग्न 4–11 मं. 26–16
	चंद्र 5–51		राहु 2–50

पूर्ण चंद्र चतुर्थ में स्थित है और लग्न में स्थित राशीश मंगल से दृष्ट है।

लग्नेश सूर्य दशम भाव में होकर केंद्र में बली है। दिशाबल भी है, मगर शत्रुक्षेत्री है। नीच के बृहस्पति की दृष्टि है और अष्टम में स्थित शत्रु शनि से भी दृष्ट है।

बुध द्वितीयेश और एकादशेश होकर सूर्य और शनि के मध्य पापकर्तरी योग में है।

तृतीयेश केंद्र में स्वराशि में स्थित है, अतः जातक कागज़ात कहीं रख कर भूल गये हैं।

लग्न में स्थिर राशि है, लग्नेश और चंद्र भी स्थिर राशि में हैं। अतः कागज़ात अपनी जगह पर ही मौजूद हैं। जब लग्नेश सूर्य और कारक मंगल के मध्य सहायक इत्थसाल होगा तो दस्तावेज मिल जाएंगे। सूर्य और मंगल के मध्य अंशों का अंतर 19^0 है। अतः 19 दिन में दस्तावेज मिलेंगे। स्थिर राशि में होने के कारण दिनों की संख्या दुगुनी अर्थात लगभग 38 दिन में जब चंद्रमा द्वारा कंबूल योग का निर्माण होगा तब दस्तावेज मिलेंगे।

▯

अध्याय—13

विवाह

विवाह का विचार द्वितीय और सप्तम भाव और उनके अधिपतियों द्वारा और कारक शुक्र और चंद्र द्वारा किया जाता है।

वर को वधु प्राप्त होगी, अगर

1. शनि लग्न के अतिरिक्त किसी भाव में सम राशि में स्थित हो।
2. चंद्र लग्न में स्थित होकर दशमेश से दृष्ट हो।
3. चंद्रमा द्वितीय भाव में स्थित होकर शुक्र से दृष्ट हो और अशुभ ग्रह की दृष्टि न हो।
4. शुक्र या चंद्र लग्न में स्थित हो और लग्नेश से इत्थसाल हो।
5. चंद्रमा 3, 7, 9 या 10 भाव में स्थित होकर लग्नेश को देखता हो।
6. शुक्र पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
7. उच्च का शुभ ग्रह केंद्र या 11वें भाव में स्थित हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो।
8. चंद्र 2, 3, 6, 7, 10 या 11 में स्थित होकर बृहस्पति से दृष्ट हो।
9. शुक्र 1, 7, 10 या 11 में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो।
10. बृहस्पति लग्न में चर राशि में स्थित हो और केंद्र में कोई अशुभ ग्रह न हो।
11. चंद्रमा वृष राशि में 7 या 10 भाव में हो और बृहस्पति या शुक्र की दृष्टि हो।
12. शुक्र लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो और केंद्र में कोई अशुभ ग्रह न हो।
13. सप्तमेश का चंद्र या लग्नेश से इत्थसाल हो। कारक और लग्नेश के अन्य संबंधों का विचार भी करें।
14. शनि सप्तम में स्थित हो तो विवाह होगा, मगर देरी से।
15. चंद्र और शुक्र बली होकर सम राशि में हों या समराशि नवमांश में हों और लग्न पर दृष्टि डालें तो वर को वधु प्राप्त होगी।

कन्या को वर प्राप्त होगा, अगर

1. शनि विषम राशि में लग्न के अतिरिक्त किसी भाव में स्थित हो।

2. लग्न में विषम राशि हो और बृहस्पति लग्न या 11वें भाव में स्थित हो।
3. शुक्र या चंद्र 7 या 11 भाव में स्थित होकर शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो।
4. चंद्र और शुक्र बली हों और विषम राशि में स्थित होकर या नवमांश में विषम राशि में स्थित होकर लग्न पर दृष्टि डालते हों।

विवाह नहीं होगा :

1. सप्तम भाव में शनि और चंद्र स्थित हों।
2. शुक्र (कारक), सप्तम भाव और सप्तमेश दूषित हों।
3. शुक्र, 2 और 7 भाव, द्वितीयेश और सप्तमेश दूषित हों।
4. मंगल और शनि चंद्र या शुक्र से सप्तम भाव में हों।
5. 1, 2 और 7 में अशुभ ग्रह हों और 5 में निर्बल चंद्र हो।
6. सप्तमेश 8 या 12 में हो और दूषित हो।
7. सप्तमेश 5,8 या 12 में स्थित हो या अस्त, नीच का हो या पापकर्तरी में हो और शुक्र भी दूषित हो।
8. 6, 8 या 10 का स्वामी सप्तम में स्थित हो और शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि न हो।
9. निर्बल चंद्र पंचम में स्थित हो और 2, 7, 12 भाव में अशुभ ग्रह हों या उनकी दृष्टि हो।
10. राहु सप्तम भाव में स्थित होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो।
11. सप्तमेश और अष्टमेश में विनिमय हो।
12. सप्तमेश, चंद्र या लग्नेश अशुभ ग्रहों से इत्थसाल योग में हों।

पति–पत्नी में संबंध कैसे रहेंगे ?

लग्न को पति मानें और सप्तम भाव को पत्नी या पत्नी की प्रश्न कुंडली में ठीक इसके विपरीत विचार करें। पति–पत्नी में प्रेम और आदर की भावना होगी यदि :

1. लग्नेश और सप्तमेश में इत्थसाल हो और अन्य शुभ योग हों।
2. चंद्र और शुक्र की शुभ ग्रहों से युति या दृष्टि हो।
3. चंद्र बृहस्पति की राशि में हो या शुभ भावों में सम राशि में हो।
4. लग्नेश और सप्तमेश शुभ ग्रह हों और चंद्र से कंबूल योग में हों।
5. लग्नेश लग्न में हो तो पत्नी आज्ञाकारिणी होगी।
6. लग्नेश सप्तम में हो तो पति आज्ञाकारी होगा।

7. चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हो तो पति ससुराल के धन का लाभ उठाएगा।

8. चंद्र और सप्तमेश की शुभ ग्रहों से युति या दृष्टि हो।

क्या मेरा प्रेम संबंध फलान्वित होगा ?

5 जुलाई, 1996 को 14:15 दिल्ली

श. 13–26 के 18–34		शुक्र 18–9 मं. 22–14	सू.19–47 बु.(अस्त) 12–34
चंद्र 18–40	**कुंडली 31**		
गुरु(व) 18–51		लग्न 12–56	राहु 18–34

- यदि पंचमेश का संबंध 7 और 11 भाव और उनके स्वामियों से हो तो प्रेम प्रसंग फलीभूत होगा।
- पंचमेश का संबंध 6, 8, 12 भाव या उनके स्वामियों से हो तो प्रेम प्रसंग सफल नहीं होगा।
- पंचमेश का संबंध छठे भाव या षष्ठेश से हो तो दूसरा पक्ष हट जाएगा क्योंकि छठा भाव 7वें का व्यय भाव है।
- पंचमेश का संबंध 12 भाव या द्वादशेश से हो तो जातक स्वयं हट जाएगा, क्योंकि 12वां भाव लग्न का व्यय भाव है।
- पंचमेश का संबंध 8 भाव या अष्टमेश से हो तो जातक के माता–पिता बाधा पहुंचाएंगे।

उपरोक्त कुंडली को देखें।

लग्न चर शीर्षोदय राशि में है। लग्नेश शुक्र स्वराशि में अष्टम में सप्तमेश मंगल से युति में है और पंचमेश शनि से दृष्ट है। अतः लग्नेश, सप्तमेश और पंचमेश में संबंध है।

चंद्र को लग्न मानने पर पंचमेश बुध सप्तमेश सूर्य से नवम में बुध राशि में युति में है और एकादशेश बृहस्पति से दृष्ट है। शुक्र सप्तमेश मंगल से इत्थसाल में है। जातक का वांछित कन्या से दिसंबर 1996 में विवाह हुआ।

क्या मेरा दूसरा विवाह होगा ?

विवाह परिवार में वृद्धि, भागीदारी, कानूनी संबंध और शारीरिक संबंध का सूचक है। द्वितीय भाव पारिवारिक सदस्यों की वृद्धि, सप्तम भाव भागीदारी और कानूनी संबंध और एकादश भाव धन लाभ के संकेतक हैं। अतः प्रथम विवाह का विचार 2, 7, 11 भाव से होता है। द्वितीय विवाह के लिए सिर्फ 2 और 11 भाव और उनके स्वामियों का विचार किया जाता है।

निम्न नियमों के पूर्ण होने पर द्वितीय विवाह होता है :

1. सप्तमेश, सप्तमेश नवमांश में जिस राशि में हो उसका स्वामी, सप्तमेश के नक्षत्र के स्वामी का संबंध द्वितीय या एकादश भाव और उनके स्वामियों से होना चाहिए।

2. अ. सप्तम भाव में स्थित ग्रह और

आ. सप्तमेश से युति वाले ग्रह या सप्तमेश पर दृष्टि डालने वाले ग्रह का संबंध द्वितीय या एकादश भाव और उनके स्वामियों से होना चाहिए।

3. सप्तमेश द्विस्वभाव राशि में हो। सप्तमेश के नक्षत्रेश या सप्तमेश की नवमांश में राशि के स्वामी का संबंध द्विस्वभाव राशि से हो।

4. बुध का संबंध सप्तम भाव या सप्तमेश से हो।

18.01.1999 को 17:51, दिल्ली

गुरु 01–00	शनि 03–17		
	कुंडली 32		लग्न 5–41 रा. 28–20
सू. 4–7 चं. 14–24 शु. 23–28 के. 28–20			
बुध(अस्त) 23–31		मंगल 2–46	

सप्तमेश शनि केतु के नक्षत्र में है। शनि का नवमांश में राशीश मंगल है जो सप्तम में स्थित शुक्र की राशि में है। मंगल की सप्तम पर दृष्टि भी है। एकादशेश सप्तम में है। द्वितीयेश सूर्य भी सप्तम में है। अतः दूसरे विवाह का संकेत मिलता है।

अध्याय–14

संतान

संतान का विचार पंचम भाव, पंचमेश, पंचम में स्थित ग्रह, पंचम पर दृष्टि डालने वाले ग्रह, पंचमेश से युति वाले ग्रह, पंचम से पंचम अर्थात नवम भाव और कारक बृहस्पति से पंचम भाव और बृहस्पति से किया जाता है। सप्तम भाव और सप्तमेश की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

क्या संतान उत्पन्न होगी ? "हां" :

1. पंचमेश शुभ ग्रह हो और लग्नेश या चंद्र से इत्थसाल में हो या शुभ ग्रह की दृष्टि/युति हो।
2. चंद्र लग्न या आरूढ़ लग्न में स्थित हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो।
3. बृहस्पति लग्न, आरूढ़ लग्न या 5, 7, 9 भाव में स्थित हो।
4. बृहस्पति या शुक्र बली होकर पंचम में स्थित हो।
5. लग्नेश पंचम में और पंचमेश लग्न में स्थित हों।
6. लग्नेश और पंचमेश की युति होकर शुभ ग्रह की युति/दृष्टि हो।
7. शुक्र की पंचमेश से 5 या 11 भाव में युति हो।
8. पंचमेश लग्न में स्थित हो, चंद्र और एकादशेश पंचम में स्थित हों।
9. सूर्य और राहु दोनों लग्न या आरूढ़ लग्न में स्थित हों।
10. बृहस्पति, चंद्र और राहु लग्न या आरूढ़ लग्न में स्थित हों।
11. लग्नेश, पंचमेश और चंद्र इत्थसाल में हों।

गर्भधारण नहीं होगा, अगर :

1. लग्नेश और चंद्र का आपोक्लिम भावों (3, 6, 9, 12) में इत्थसाल हो और पंचमेश की लग्न या पंचम भाव पर दृष्टि न हो।
2. चंद्र का अशुभ ग्रह से इत्थसाल हो।
3. चंद्रमा अस्त या निर्बल हो।
4. चंद्रमा पंचम में, सूर्य नवम में और शुक्र तृतीय भाव में स्थित हों।

गर्भपात

1. पंचमेश की नवमांश में राशि के अधिपति के साथ जितने अशुभ ग्रहों की युति हो, उतने गर्भपात होते हैं। पंचमेश की नवमांश में राशि के अधिपति को राशि कुंडली में देखें। उसके साथ अशुभ ग्रहों की युति/दृष्टि गर्भपात कराती है।
2. पंचम भाव में अशुभ ग्रह बैठे हों, लग्नेश अशुभ हो या लग्न में अशुभ ग्रह हों या लग्नेश की अशुभ ग्रहों से युति हो और चंद्र का अशुभ ग्रह से इत्थसाल हो।
3. लग्नेश या चंद्र का अस्त, नीचस्थ, वक्री या अशुभ ग्रह से इत्थसाल हो।
4. पंचम भाव, पंचमेश और बृहस्पति पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो।
5. चंद्र का चर राशि के अशुभ ग्रह, लग्नेश या वक्री ग्रह से इत्थसाल हो।
6. मंगल अष्टम भाव में स्थित हो।
8. बृहस्पति और शुक्र दोनों अष्टम में हों तो स्त्री बालक को जन्म देगी, मगर वह जीवित नहीं रहेगा।
9. सूर्य और शुक्र अष्टम में स्थित हों और 2,12 में अशुभ ग्रह हों तो गर्भपात हो जाएगा।
10. पंचम भाव में मंगल या शुक्र स्थित हो तथा अशुभ ग्रहों की युति/दृष्टि हो।
11. चंद्र और परिवेश (परिधि–चंद्रमा का उपग्रह) दोनों लग्न या आरूढ़ लग्न या नवमांश लग्न से अष्टम भाव में हों तो गर्भपात होगा। चंद्रमा अगर शत्रुक्षेत्री या नीचस्थ हो तो मां और शिशु दोनों की मृत्यु हो जाएगी।

   (ध्यान दें : परिवेश चंद्रमा का उपग्रह है। यह सूर्य के 46^0–40′ अंशों के समकक्ष है। यह शिशु जन्म में महत्वपूर्ण है। यह राहु के समान गणितीय बिंदु है)
12. शनि और मंगल लग्न में स्थित हों और अशुभ ग्रहों से दृष्ट हों।
13. चंद्र मंगल या शनि की राशि में स्थित हो (मेष या वृश्चिक, मकर या कुंभ) और अशुभ ग्रह से दृष्ट हो।
14. चंद्र पर मंगल या शनि की दृष्टि हो।
15. लग्न या चंद्र पापकर्तरी योग में हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो मां और शिशु की मृत्यु हो जाएगी।
16. लग्न और सप्तम में अशुभ ग्रह हों और शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो मां और शिशु दोनों की मृत्यु हो जाएगी।
17. शनि लग्न में हो और निर्बल चंद्र और मंगल से दृष्ट हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो मां और शिशु दोनों की मृत्यु हो जाएगी।

18. लग्न या चंद्र से चतुर्थ भाव में अशुभ ग्रह हों तो गर्भपात हो जाएगा।
19. शुक्र पापकर्तरी में हो तो गर्भपात होगा। (शुक्र गर्भावस्था के प्रथम मास का, मंगल द्वितीय का, बृहस्पति तृतीय का, सूर्य चतुर्थ का, चंद्रमा पंचम का, शनि षष्ठ का, बुध सप्तम का, लग्नेश अष्टम मास का, चंद्रमा नवम का और सूर्य दशम मास का कारक होता है)। अगर कोई ग्रह पाप कर्तरी में हो तो जिस गर्भ मास का वह कारक होता है, उसमें गर्भपात हो जाता है।
20. सूर्य लग्न में स्थित हो, चंद्र निर्बल हो तथा अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो गर्भपात होगा।
21. मंगल लग्न में पापकर्तरी योग में हो तो गर्भपात हो जाता है।
22. पंचमेश 6, 8, 12 में स्थित होकर अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो।

शिशु पुत्र या पुत्री ?

1. बली लग्न, चंद्र, सूर्य और बृहस्पति विषम राशि या विषम नवमांश में स्थित हों तो पुत्र का जन्म होगा।
2. उपरोक्त ग्रह सम राशि या नवमांश में हों तो कन्या का जन्म होता है।
3. बली चंद्र, शुक्र और मंगल समराशि में हों तो कन्या का जन्म होता है।
5. शनि 1, 3, 5, 7, 9, 11 भावों के अतिरिक्त अन्य भाव में विषम राशि में हो तो पुत्र जन्म, सम राशि में हो तो कन्या का जन्म होता है।
6. लग्नेश और पंचमेश विषम राशि में हों तो पुत्र जन्म होता है।
7. पंचमेश पुरुष राशि में हो और लग्नेश पंचम भाव में स्थित होकर पुरुष ग्रह से दृष्ट हो तो पुत्र जन्म होता है।
8. पंचमेश और लग्नेश सम राशि में स्थित हों और स्त्री ग्रह (चंद्र, शुक्र, बुध) से दृष्ट हों तो कन्या का जन्म होता है।
9. चंद्र विषम राशि में स्थित होकर पुरूष ग्रह से इत्थसाल में हो तो पुत्र का जन्म होता है।
10. प्रश्नकाल की होरा का स्वामी पुरूष हो और विषम राशि में स्थित हो तो पुत्र का जन्म होता है।
11. सूर्य 3, 6, 7, 10, 11 भाव में हो तो पुत्र और इन भावों में चंद्र हो तो कन्या का जन्म होता है।

अध्याय–15

न्यायाधीन विवाद

वादी वह व्यक्ति है जो अदालत में जाकर न्याय की फ़रियाद करता है।

प्रतिवादी वह व्यक्ति है जिसके विरूद्ध मुकदमा दायर किया जाता है।

3 से 8 तक भाव प्रतिवादी के प्रतिनिधि हैं। 9 से 2 तक भाव वादी के संकेतक हैं।

प्रतिवादी के भावों में शुभ ग्रह स्थित हों तो वह जीतता है। इसी प्रकार वादी के भावों में शुभ ग्रह हों तो उसकी विजय होती है।

बहुमान्य विचार के अनुसार लग्न प्रश्नकर्ता है और सप्तम भाव विरोधी दल।

यदि लग्नेश या लग्न में स्थित अशुभ ग्रह नीचस्थ या अस्त या निर्बल हो तो प्रश्नकर्ता विजयी नहीं होगा।

बली अशुभ ग्रह लग्न में स्थित हो या चंद्रमा की शुभ ग्रहों से युति/दृष्टि हो तो प्रश्नकर्ता विजयी होगा। लग्नेश के अंश कम हों और बली शुभ ग्रहों से केंद्र में हो तो भी प्रश्नकर्ता विजयी होता है।

लग्न और सप्तम भाव दोनों में अशुभ ग्रह बैठे हों तो विवाद का अंत शांतिपूर्ण नहीं होगा। इसी प्रकार सप्तमेश और लग्नेश में इत्थसाल हो तो अंत अशांतिपूर्ण होगा।

चतुर्थ भाव में कर्क, वृश्चिक, कुंभ या मीन राशि हो तो विरोधी मुकदमा हारेगा। सावंत पृथुयश के अनुसार चतुर्थ भाव या लग्न में चतुष्पाद राशि मेष, वृष, सिंह या धनु हो तो प्रश्नकर्ता विजयी होता है। अगर चंद्र 10 से 4 तक भावों में शुभ ग्रहों से युत हो और लग्न बली हो तो प्रश्नकर्ता विजयी होता है।

लग्न में 4 – 5 ग्रह लग्न को निर्बल बनाते हैं। इसी प्रकार सप्तम में 4–5 ग्रह सप्तम को बलहीन करते हैं।

कुछ योग

1. लग्न में स्थिर राशि हो तो मुकदमे में हार नहीं होगी।
2. लग्न में चर राशि हो तो परिवर्तन होता है, जिससे हार होती है।
3. लग्न में द्विस्वभाव राशि 15^0 से कम अंशों में हो तो चर राशि का परिणाम मिलता है। 15^0 से अधिक होने पर स्थिर राशि का फल मिलता है।
4. सप्तम भाव और सप्तमेश शुभ योगों सहित हों तो विरोधी समझौता कर लेगा।
5. विवाद के समय मिथुन या कन्या लग्न हो तो जातक जीतकर धन प्राप्त करेगा।

6. लग्न में शुक्र हो तो समझौता हो जाएगा।
7. प्रश्न कुंडली में मंगल, शनि और बृहस्पति बली हों (उनकी स्थिति कैसी भी हो) तो प्रश्नकर्ता जीतेगा।
8. शनि लग्नेश होकर अधिक अंशों में हो और सप्तमेश के अंश कम हों और कंबूल योग हो तो प्रश्नकर्ता जीतेगा।
9. लग्नेश और दशमेश का शुभ भावों में इत्थसाल हो या लग्नेश लग्न में, दशमेश दशम में हो तो प्रश्नकर्ता विजयी होगा।
10. सप्तमेश का द्वितीय भाव में स्थित होकर द्वितीयेश से इत्थसाल हो तो विरोधी हारेगा।
11. लग्न, सप्तम और दशम भाव में शुभ ग्रह हों तो प्रश्नकर्ता जीतेगा।
12. बुध, शुक्र या बृहस्पति लग्न और नवम में स्थित हों तो प्रश्नकर्ता जीतेगा।
13. शीर्षोदय लग्न में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और बली शुभ ग्रह केंद्र/त्रिकोण में स्थित हों तो प्रश्नकर्ता जीतेगा।
14. दशमेश लग्न में और लग्नेश दशम में स्थित हो।
15. चंद्रमा दशम में हो, शुक्र और बुध चतुर्थ और दशम में और अशुभ ग्रह 3, 6, 11 में हों तो प्रश्नकर्ता जीतेगा।
16. चंद्रमा दशम में, बुध और शुक्र 4, 5 में, बृहस्पति लग्न में, अशुभ ग्रह 3, 6, 11 में हों तो प्रश्नकर्ता जीतेगा।
17. लग्न में शुक्र, चतुर्थ में बुध, बृहस्पति सप्तम में, अशुभ ग्रह 3,6,11 में हों तो प्रश्नकर्ता जीतता है।
18. बृहस्पति लग्न में, चंद्रमा चतुर्थ में, शुक्र और बुध दशम में, सूर्य एकादश में और शनि तृतीय भाव में हों।
19. बृहस्पति लग्न में, चंद्रमा सप्तम में, बुध और शुक्र 4, 10 में, अशुभ ग्रह 3,6, 11 में हों तो प्रश्नकर्ता विजयी होगा।

(उपरोक्त योगों से प्रश्नकर्ता जीतेगा क्योंकि केंद्र में शुभ ग्रह हैं, 3, 6, 11 में अशुभ ग्रह हैं)

20. लग्न में बुध और शुक्र, 11वें भाव में सूर्य, मंगल और राहु प्रश्नकर्ता को विजय दिलाते हैं।
21. लग्न में बृहस्पति, दशम में सूर्य, सप्तम में चंद्र और चतुर्थ में बुध प्रश्नकर्ता की विजय के संकेतक हैं।
22. दशम में बृहस्पति, लग्न में शुक्र और एकादश में अशुभ ग्रह हो तो प्रश्नकर्ता जीतता है।
23. लग्नेश धीमी गति वाला ग्रह होकर चंद्र से कंबूल योग में हो और चंद्र के अंश तीव्र गति वाले ग्रह से अधिक हों तो प्रश्नकर्ता विजयी होगा।

24. दशमेश लग्न में हो या चतुर्थेश षष्ट में हो तो शत्रु की सेना जातक को जीतने में सहायता करती है।
25. दशम से लग्न तक के भावों में शुभ ग्रह हों और शनि लग्न से चतुर्थ तक किसी भाव में हो तो चुनाव या मुकदमा जीतने में कोई व्यक्ति मददगार साबित होगा।
26. सप्तमेश छठे भाव में स्थित हो तो चुनाव या मुकदमे में जीत होती है।
27. सूर्य द्वादश भाव में हो तो चुनाव या मुकदमे में जीत होती है।
28. चतुर्थ भाव में चतुष्पाद राशि हो तो प्रश्नकर्ता जीतता है।
29. 4, 5, 6 में अशुभ ग्रह हों तो प्रश्नकर्ता विजयी होता है।
30. सूर्य लग्न या आरूढ़ लग्न से एकादश में हो तो प्रश्नकर्ता जीतता है।
31. लग्न स्थिर राशि में हो और चंद्र द्विस्वभाव राशि में हो।
32. लग्न द्विस्वभाव राशि में हो और चंद्र चर राशि में हो।
33. लग्न चर राशि में और चंद्र द्विस्वभाव राशि में हो।
34. लग्न में बली अशुभ ग्रह स्थित हो तो प्रश्नकर्ता विजयी होता है। बली अशुभ ग्रह सप्तम में स्थित हो तो विरोधी जीतता है।
35. द्वितीय और नवम भाव में शुभ ग्रह हों तो प्रश्नकर्ता जीतता है। इन भावों में मंगल और शनि हों तो विपक्ष विजयी होता है।

विपक्ष विजयी होगा

1. लग्नेश अष्टम में स्थित होकर अष्टमेश से इत्थसाल में हो।
2. लग्नेश द्वादश में स्थित हो।
3. यदि लग्नेश धीमी गति में अस्त या नीचस्थ होकर तीव्रगति ग्रह या चंद्र से इत्थसाल में हो या सप्तमेश केंद्र में हो (भले ही वह नीचस्थ या अस्त हो)।
4. द्वादश भाव या द्वादशेश बली हो तो विपक्ष बली होता है। इसी प्रकार छठा भाव या षष्ठेश या सप्तम और सप्तमेश बली हों तो विरोधी दल बलवान होता है।
5. लग्न स्थिर राशि में और चंद्र चर राशि में हो तो विपक्ष विजयी होता है।
6. अशुभ ग्रह सप्तम में बली हों।
7. सप्तमेश और चतुर्थेश में इत्थसाल हो।
8. लग्न या चंद्र की अशुभ ग्रहों से युति/दृष्टि हो।

9. चतुर्थ भाव में जलराशि हो।
10. मंगल या शनि नवम में या लग्न में हो।
11. शनि 3, 5, 6, 11 या 12 में हो।
12. शनि 10, 11, 12 में हो।
13. चतुर्थेश और सप्तमेश में इत्थसाल हो, या चतुर्थेश चतुर्थ में और सप्तमेश सप्तम में स्थित हो।
14. चंद्रमा किसी शुभ ग्रह से युत होकर 4 से 10 में किसी भाव में स्थित हो और सप्तमेश बली हो।

समझौता हो जाएगा

1. लग्नेश और सप्तमेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
2. लग्नेश और सप्तमेश में 3, 6, 10, 11 भाव में इत्थसाल हो।
3. एकादश भाव में बली शुभ ग्रह हो।
4. 4 या 10 भाव में बली शुभ ग्रह हो।
5. चतुर्थ भाव में 2 या 3 बली शुभ ग्रह हों।
6. लग्न में द्विपाद राशि में शुभ ग्रह स्थित हो या उसकी दृष्टि हो।
7. शुभ ग्रह द्विपाद राशि में केंद्र में स्थित हो और शुभ ग्रह की दृष्टि हो।
8. शुक्र लग्न से छठे भाव में या मेष राशि में स्थित हो।
9. सूर्य और शुक्र लग्न में मित्र राशि में हों।
10. बृहस्पति लग्न या आरूढ़ लग्न से द्वितीय भाव में स्थित हो।
11. लग्न या आरूढ़ लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
12. लग्न या चंद्र चर राशि में हो।
13. लग्नेश और पंचमेश केंद्र में स्थित हों और शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हों।
14. लग्नेश पंचम भाव में स्थित हो और शुभ ग्रह 4 और 10 में स्थित हों।
15. शुभ ग्रह लग्न, 11 या 12 भाव में द्विपाद राशि में स्थित हों।

अध्याय–16

लाभ–हानि

लाभ या हानि के बारे में जानने के लिए 1, 2, 5, 7, 11 भावों का विचार किया जाता है। इन भावों में बली शुभ ग्रह स्थित हों तो जातक को लाभ होगा। अशुभ ग्रह स्थित होने पर हानि होगी। पंचम भाव एकादश भाव से सातवां होता है अर्थात विरोधी को लाभ।

लाभ – हानि के कुछ योग

1. लग्न में शीर्षोदय राशि में शुभ ग्रह हों तो लाभ होगा।
2. लग्न में शुभ ग्रह की राशि हो या शुभ ग्रह स्थित हो या उसकी दृष्टि हो तो लाभ होगा।
3. लग्न में अशुभ ग्रह की राशि हो, अशुभ ग्रह स्थित हो या उसकी दृष्टि हो तो हानि होगी।
4. लग्न में नर राशि (3, 6, 7, 10) हो, उसमें शुभ ग्रह स्थित हों या उनकी दृष्टि हो तो लाभ होगा।
5. लग्न में शुभ ग्रह की पृष्ठोदय राशि हो, शुभ–अशुभ दोनों ग्रह स्थित हों, धन कुछ देरी के बाद प्राप्त होगा। शुभ ग्रह के बल द्वारा प्रश्न का फैसला होगा।

मान या धन का लाभ

लग्नेश और लग्न, एकादशेश और एकादश और बृहस्पति के बल का प्रश्नकुंडली में विवेचन करें।

लग्नेश, एकादशेश या बृहस्पति नीचस्थ, अस्त, शत्रुक्षेत्री, त्रिक भाव में, पापकर्तरी में, अशुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हों तो लाभ कम होगा।

मान/धन का लाभ होगा

1. लग्नेश और एकादशेश में शुभ इत्थसाल हो।
2. लग्नेश और एकादशेश में केंद्र/त्रिकोण/एकादश में इत्थसाल हो और कंबूल योग हो।
3. लग्नेश और एकादशेश बली हों।
4. बली बृहस्पति केंद्र में स्थित हो और

   अ. उच्च का हो तो पूर्ण लाभ,

   आ. स्वराशि में हो तो 25 प्रतिशत लाभ,

   इ. अन्य राशि में होकर शुभ भाव में हो तो मामूली लाभ होगा।

5. उपरोक्त अनुसार ही एकादशेश का फल होगा।
6. दशमेश का सूर्य और बुध से इत्थसाल हो तो सरकार से लिखित समझौता होगा।

नौकरी द्वारा लाभ

1. लग्न को प्रश्नकर्ता और सप्तम भाव को विरोधी मानें। शीर्षोदय राशि का लग्न शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो।
2. 2, 7, 8 भावों में शुभ ग्रह हों और 3, 6, 11 में अशुभ ग्रह हों।
3. लग्न और सप्तम भाव में बली चंद्र और शुभ ग्रह बैठे हों या उनकी दृष्टि हो और अशुभ ग्रहों का प्रभाव नहीं हो तो कर्मचारी को मालिक का प्रेम और सद्भाव प्राप्त होता है।
4. लग्न और सप्तम भाव में अशुभ ग्रह हों या उनकी दृष्टि हो तो कर्मचारी और मालिक के संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।
5. इसी प्रकार से 2, 7, 8 भावों में अशुभ ग्रह होने पर संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

नौकरी, व्यापार या मुकदमें में लाभ के लिए लग्न–लग्नेश, दशम भाव–दशमेश, एकादश–एकादशेश, चंद्र और बृहस्पति का विचार करना चाहिए।

लाभकारी व्यक्ति के बारे में या उसकी दिशा जानने के लिए केंद्र में स्थिर बली ग्रह का विचार करें। अगर केंद्र में ग्रह न हो तो लाभ के लिए लग्न की दिशा से फलकथन करें।

क्या तबादला होगा ?

स्थानांतरण के लिए दशम भाव, दशमेश की राशि, दशम भाव में स्थित ग्रह और दशमेश से युति बनाने वाले ग्रह का विचार करें। अगर राशि ह्रस्व (मेष, वृष, कुंभ, मीन) है तो तबादला शीघ्र होगा।

राशि मध्यम (मिथुन, कर्क, धनु, मकर) होने पर तबादला कुछ समय बाद होता है। राशि दीर्घ (सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक) हो तो तबादला नहीं होगा। कुछ ज्योतिर्विद मीन को मध्यम राशि मानते हैं।

1. दशमेश निर्बल (नीचस्थ, अस्त, शत्रुक्षेत्री आदि) हो और निर्बल चंद्र से इत्थसाल हो तो तबादला होगा।
2. बृहस्पति नीचस्थ, अस्त आदि हो और केंद्र में स्थित नहीं हो तो तबादला होता है।
3. बृहस्पति और चंद्र में इत्थसाल या संबंध नहीं हो और दशम भाव, दशमेश निर्बल या दूषित हों तो तबादला होता है।
4. लग्नेश की नीच राशि का स्वामी चंद्र या लग्नेश से इत्थसाल में हो तो तबादला हो जाता है।
5. दशमेश चतुर्थ भाव में होकर लग्नेश से युत हो और चंद्र से इत्थसाल में हो तो तबादला होता है।
6. दशमेश की नीच राशि का स्वामी दशमेश के साथ इत्थसाल में हो तो तबादला होता है।

सेवक या वाहन या अन्य वस्तु की प्राप्ति

- लग्न–लग्नेश खरीदार, मालिक हैं जबकि सप्तम–सप्तमेश विक्रेता/सेवक/कर्मचारी हैं।
- लग्न–लग्नेश और सप्तम–सप्तमेश में शुभ संबंध हों तो परिणाम उत्तम और लाभकारी होंगे।
- लग्न–लग्नेश, सप्तम–सप्तमेश बली हों तो जातक को वाहन या नौकर/कर्मचारी अवश्य प्राप्त होता है। छठा भाव और षष्ठेश भी कर्मचारी के द्योतक हैं। संबंध की जांच आरूढ़ लग्न और सप्तम पाद लग्न द्वारा करना भी लाभकारी होता है, उनकी 6/8 में स्थिति सर्वाधिक हानिकारक है।

1. षष्ठेश का लग्नेश और चंद्र से शुभ संबंध या इत्थसाल हो, षष्ठेश लग्न में स्थित हो तो सेवक उपलब्ध होता है।
2. षष्ठेश और लग्नेश लग्न में स्थित हों और शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सेवक / कर्मचारी अवश्य प्राप्त होता है।
3. लग्नेश या चंद्र छठे भाव में स्थित हो और षष्ठेश से इत्थसाल हो तो कर्मचारी उपलब्ध होता है।
4. चंद्र का सूर्य या वक्री या अशुभ ग्रह से इत्थसाल हो और शुभ ग्रह स्थिर राशियों में स्थित हों तो सेवक नहीं मिलता है।

बिक्री–खरीद, शेयर बाज़ार में लाभ–हानि

लग्न और लग्नेश खरीदार हैं, एकादश और एकादशेश विक्रेता हैं, द्वितीय–द्वितीयेश भी विक्रेता हैं, षष्ट और षष्टेश अन्य पक्ष को हानि हैं।

लग्न और लग्नेश बली हों तो प्रश्नकर्ता को खरीदारी करने पर लाभ होगा।

एकादश–एकादशेश, लग्न और लग्नेश की अपेक्षा अधिक बली हों या द्वितीय और द्वितीयेश, लग्न–लग्नेश की अपेक्षा अधिक बली हों तो बिक्री करने से लाभ होता है।

बिक्री के मामले में जब विक्रेता प्रश्न पूछे तो लग्न–लग्नेश विक्रेता होते हैं। लेकिन शेयर बाजार में यह जानने के लिए कि शेयरों को खरीदने से लाभ होगा कि बिक्री से, तब लग्न–लग्नेश खरीदार और एकादश–एकादशेश या द्वितीय–द्वितीयेश विक्रेता होते हैं।

शेयर बाजार में कोई भी व्यक्ति शेयरों की खरीद/बिक्री स्वयं नहीं कर सकता। यह काम दलाल के माध्यम से होता है। सप्तमेश दलाल होता है। अतः

1 लग्नेश और सप्तमेश का शुभ भाव में शुभ दृष्टि सहित इत्थसाल होना चाहिए।

2. लग्नेश और सप्तमेश लग्न या सप्तम में स्थित हों।
3. लग्नेश और सप्तमेश पर शुभ दृष्टि हो।
4. लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में स्थित हों।

5. लग्नेश की सप्तम पर और सप्तमेश की लग्न पर दृष्टि हो।

लग्नेश और सप्तमेश में शुभ संबंध हो तो जातक को दलाल के माध्यम से काम करना चाहिए। उस समय एकादश–एकादशेश बिक्री के और लग्न–लग्नेश खरीद के संकेतक हैं।

साझेदारी में खरीद/बिक्री के लिए चतुर्थ–चतुर्थेश का परीक्षण करें। लग्न–लग्नेश और चतुर्थ–चतुर्थेश के मध्य संबंध हो तो साझेदारी में काम करना लाभप्रद है।

लग्नेश और चतुर्थेश में शुभ संबंध हो तो शेयर बेचना लाभप्रद होता है। चतुर्थेश और सप्तमेश में शुभ संबंध होने पर शेयर खरीदना उचित है।

लग्नेश सप्तम में हो तो खरीदार सामान मांगता है। सप्तमेश लग्न में हो तो विक्रेता सामान के लिए निवेदन करता है। लाभ के लिए लग्न–लग्नेश, एकादश–एकादशेश और चंद्र पर ध्यान दें। व्यापार में लाभ के लिए लग्न–लग्नेश, दशम–दशमेश, एकादश–एकादशेश और चंद्र का विवेचन करें। द्वितीय–द्वितीयेश का विवेचन भी एकादश–एकादशेश के साथ जरूरी है।

लग्न और लग्नेश बली हों तो खरीदारी से प्रश्नकर्ता को अवश्य लाभ होगा।

एकादश और एकादशेश या द्वादश और द्वादशेश बली हों तो सामान बेचने से अवश्य लाभ होगा। जमीन जायदाद खरीदने के लिए कारक मंगल दूषित नहीं होना चाहिए।

वाहन के लिए शुक्र दूषित नहीं होना चाहिए। व्यापार के लिए बुध दूषित नहीं होना चाहिए। कारखाने के लिए शनि दूषित नहीं होना चाहिए। तरल पदार्थ और रसायन के लिए चंद्र दूषित न हो। शेयरों की खरीद–बेच और सट्टेबाजी के लिए बृहस्पति दूषित नहीं होना चाहिए।

संक्षेप में, लाभ–हानि के लिए 2, 6, 11 भाव और उनके स्वामियों का विवेचन करें। इन भावों से लग्न और लग्नेश का संबंध हो तो लाभ होता है। प्रश्न उठता है, "छठा भाव और षष्टेश क्यो?" छठा भाव और षष्टेश जातक से व्यापार करने वाले दल की हानि के द्योतक हैं। उनकी हानि जातक का लाभ है।

लग्न और लग्नेश का 5, 8, 12 भाव या उनके स्वामियों से संबंध हो तो जातक को लाभ नहीं होगा क्योंकि सप्तम भाव दूसरा दल है जिससे व्यापार हो रहा है। पंचम भाव (सप्तम से एकादश) दूसरे दल का लाभ है। अष्टम भाव सप्तम से द्वादश है, द्वादश भाव लग्न की हानि है।

बाजार तेजी में जाएगा या मंदी में ?

1. यदि शुभ ग्रह स्वराशि या मित्र क्षेत्र में स्थित हो तो उस भाव द्वारा निर्देशित वस्तुओं के भाव उतने दिनों के लिए गिर जाएंगे जितने दिन वह शुभ ग्रह उस भाव में स्थित रहेगा। जब कोई अशुभ ग्रह उच्च का, स्वक्षेत्री या मित्र राशि में हो तो उस भाव द्वारा इंगित वस्तुओं के भाव उतने दिनों के लिए चढ़ जाते हैं, जितने दिन वह ग्रह उस भाव में रहेगा।
2. चंद्र शुभ ग्रहों के साथ या स्वराशि, मित्रराशि में हो या पूर्णिमा/अमावस्या का चंद्र हो तो बाजार मंदी की ओर जाएगा। चंद्र दूषित हो तो बाजार तेजी की ओर बढ़ता है।

3. सूर्य की स्वराशि से अन्य राशि में संक्रांति के समय लग्न और लग्नेश बली हों और शुभ ग्रह केंद्र/त्रिकोण में स्थित हों तो बाज़ार में मंदी आती है।

4. प्रश्न कुंडली के लग्न/लग्नेश बली हों और शुभ ग्रह केंद्र/त्रिकोण में स्थित हों तो बाजार मंदी की ओर जाता है। लग्न/लग्नेश निर्बल और अशुभ ग्रह केंद्र/त्रिकोण में बैठे हों तो बाजार में तेजी आती है।

क्या व्यापार में साझेदार रख लूं ?

व्यापार में भागीदार रखना उचित रहेगा यदि,

अ. लग्न और सप्तम भाव में शुभ संबंध हों।

आ. अष्टमेश (साझेदार की आय/धन) का एकादशेश (जातक की आय) और षष्टेश (साझेदार का व्यय) से शुभ संबंध हो।

साझेदार की आय (अष्टम भाव) का संबंध द्वादश भाव (जातक की हानि) और पंचम भाव (साझेदार को लाभ) से हो तो कभी भी साझेदार न रखें।

निम्न कुंडली में राहु लग्न में स्थिर होकर बृहस्पति से दृष्ट है। लग्नेश चंद्र मंगल से युत होकर सूर्य और शनि (सप्तमेश एवं अष्टमेश) से दृष्ट है। एकादशेश शुक्र स्वराशि में एकादश में स्थित है। साझेदार की हानि बृहस्पति, जातक की हानि बुध के साथ इत्थसाल में है।

01.05.1999 को 10:55, दिल्ली

बुध 23–31 गु. 24–24	श. 16–34 सू. 13–28	शुक्र 27–45	
	कुंडली 33		लग्न 3–13 रा. 24–28
केतु 21–28			
		चंद्र 23–11 मंग. 7–5	

साझेदार की आय पंचमेश मंगल लग्नेश चंद्र के साथ चतुर्थ में स्थित है। अतः साझेदार को जातक से लाभ है। जातक का नगद धन साझेदार के धन से युति में है। शनि दशम में इशराफ योग में है। लग्नेश चंद्र और सप्तमेश शनि समसप्तक में हैं, लेकिन इशराफ भी है। अतः दोनों में साझेदारी हुई, मगर कुछ महीनों बाद टूट गयी।

क्या बैंक से ओवरड्राफ्ट सुविधा उपलब्ध हो सकेगी ?

छठे भाव से कर्ज़, उधार, ओवरड्राफ्ट आदि का ज्ञान होता है। षष्टेश और छठे भाव में स्थित ग्रहों की विवेचना करें। बैंक से ओवरड्राफ्ट सुविधा मिलने से आर्थिक स्थिति सुधर जाती है, अतः द्वितीय भाव और द्वितीयेश पर ध्यान दें। दशम भाव व्यवसाय, धंधे का द्योतक है। 6, 2, 10 के स्वामियों में संबंध हो तो जातक को बैंक से ओवरड्राफ्ट सुविधा उपलब्ध हो जाती है।

कर्ज़ लेने के प्रश्न के लिए षष्टेश और द्वितीयेश का अध्ययन करें। षष्टेश यदि वक्री हो, या उस राशि में स्थित हो जिसका स्वामी प्रश्नकुंडली में या नवमांश में वक्री/अस्त/नीचस्थ हो तो कर्ज़ प्राप्त नहीं हो पाता है।

षष्टेश सूर्य हो तो सरकार से कर्ज़ प्राप्त होता है, षष्टेश चंद्र हो तो कर्ज शीघ्र मिलेगा, मंगल हो तो तनाव बढ़ेगा, बुध हो तो लिखा पढ़ी होगी, सिफारिश से लाभ होगा और कर्ज किश्तों में प्राप्त होगा। षष्टेश बृहस्पति होने पर कर्ज ससम्मान, न्याय सम्मत माध्यम से प्राप्त होगा, शुक्र होने पर कर्ज़ मैत्रीपूर्ण ढ़ंग से मिलेगा। शनि की दृष्टि छठे भाव पर होने पर कुल राशि का कुछ अंश ही प्राप्त हो पाता है।

04 सितंबर 1993 को 10:30, दिल्ली

चंद्र 21–51		केतु 13–07	
शनि(व) 02–03	कुंडली 34		शुक्र 15–13
			बुध 23–22 सू. 17–54
	राहु 13–7	लग्न 15–56	मंगल 21–3 गुरु.22°

उपरोक्त कुंडली देखें। ओवरड्राफ्ट सुविधा का अर्थ है बैंक से व्यापार के लिए कर्ज़ लेना, अतः 6, 2, 10 भाव और उनके स्वामियों का अध्ययन करें। षष्टेश बृहस्पति द्वादश भाव में 2, 7 के स्वामी मंगल के साथ स्थित है तथा मंगल से इत्थसाल भी है।

दशमेश चंद्र छठे भाव में स्थित है। दशम में अष्टमेश शुक्र स्थित है। द्वितीय भाव में स्थित राहु पर वक्री शनि की दृष्टि है। जातक को ओवरड्राफ्ट सुविधा मिली मगर भारी हानि उठानी पड़ी।

क्या कर्ज़ चुका पाऊंगा ?

धन के निवेश या व्यय अथवा कर्ज़ चुकाने के लिए द्वादशेश, द्वादश में स्थित ग्रह, द्वादशेश जिस राशि में हो उसके स्वामी, द्वादशेश की नवमांश में राशि के अधिपति और द्वादशेश के नक्षत्रेश का विवेचन करें।

21 जनवरी 1999 को 10:58, दिल्ली

लग्न 19–34 गु. 1–30	शनि 3–24		
चंद्र 20–44	कुंडली 35		राहु 28–21
शु 26–52 के. 28–21 सू. 06–53			
बुध (अस्त) 27–48		मंगल 3–57	

लग्नेश बृहस्पति स्वराशि में है, नवमांश में उच्च का है और स्वयं के नक्षत्र में स्थित है, अतः बहुत बली है। द्वादशेश शनि द्वितीय भाव में मंगल की राशि, शुक्र के नवमांश और केतु के नक्षत्र में स्थित है। ये दोनों ग्रह लाभ भाव एकादश में स्थित हैं, अतः जातक कर्ज़ का भुगतान करने में सफल रहेगा। शनि की भूमिका के कारण कर्ज़ का भुगतान किश्तों में होगा।

शनि पर राशीश मंगल की दृष्टि है, अतः नीच भंग है। मेष में उच्च होने वाला सूर्य और मेष का स्वामी मंगल एक दूसरे से केंद्र में हैं, अतः नीचभंग योग है।

क्या कर्ज़ पर दिया धन वसूल हो सकेगा ?

चाहे कर्ज़ लेना हो या दूसरों को दिये धन को वापस लेना हो, दोनों का विचार छठे भाव से किया जाता है।

धन की वसूली का अर्थ बैंक में जमा की बढ़ोत्तरी, नकद धन और इच्छाओं की पूर्ति है। अतः 2 और 11 भावों की भूमिका प्रमुख है।

शनि प्रमुख हो तो वसूली में देर होती है और बाधाएं आती हैं, बुध हो तो धन लिखा पढ़ी, नोटिस आदि के बाद किश्तों में वसूल होता है। बृहस्पति शुभ हो तो धन आसानी से अदालत द्वारा या वैध प्रक्रिया से प्राप्त हो जाता है। बृहस्पति पर शनि की दृष्टि हो तो रकम आंशिक रूप से ही किश्तों में प्राप्त होती है।

मंगल प्रमुख हो तो डराने धमकाने से रूपया वसूल होता है। चंद्र होने पर पैसा शीघ्रता से प्राप्त होता है, शुक्र होने पर समझौता होता है। सूर्य होने पर पुलिस की सहायता से या कानूनी कार्यवाही से धन प्राप्त होता है।

20 अक्तूबर 1993 को 17:30, दिल्ली

लग्न 28–59	केतु 9–49		
	कुंडली 36		राहु 28–21
शनि (व) 29–55			
चंद्र 10–53	राहु 09–49	गु(अ)1–44 मं. 22–17 श. 3–20 बुध 27°	शुक्र 11–48

जातक ने अपने मित्र को धन दिया था, जिसे वह वापस पाना चाहता है। लग्न पर वक्री शनि की दृष्टि है। लग्न में द्विस्वभाव, चर, पृष्ठोदय राशि है। लग्नेश बृहस्पति गहन अस्त है और एकादश में स्थित वक्री शनि से दृष्ट है। द्वितीयेश मंगल अष्टम में स्थित होकर लग्नेश से इशराफ योग में है और एकादशेश वक्री शनि को देख रहा है। चंद्र से देखने पर 2 और 11 भाव दूषित हैं। लग्न और चंद्र से षष्टेश दूषित है। अतः उधार लेने वाले को अपार धन की हानि हुई और जातक अपना धन प्राप्त करने में सफल नहीं हुआ।

क्या साझेदारी चलेगी या टूट जाएगी ?

साझेदारी का विचार सप्तम भाव से किया जाता है। साझेदारी तब तक चलती है जब तक दोनों साझेदारों को एक दूसरे से लाभ होता है। सप्तमेश का संबंध एकादश (लग्न को लाभ) और पंचम (सप्तम को लाभ) से हो तो साझेदारी बनी रहेगी।

सप्तमेश का संबंध छठे भाव (साझेदार को हानि) और द्वादश (लग्न को हानि) से हो तो साझेदारी टूट जाएगी।

19.2.1969 को 7:30, दिल्ली

शु.21–21 च. 7–48 श. 28–19 राहु 7–2			
लग्न 16–54 सू. 6–50	**कुंडली 37**		
बुध 10–35			
	मंगल 03–43		केतु 7–2 गुरु(व) 11–17

सप्तमेश सूर्य लग्न में स्थित होकर लग्नेश शनि से इत्थसाल में है।

नवमांश में सूर्य एकादश में स्थित है। लग्न वर्गोत्तम है। पंचमेश बुध एकादशेश बृहस्पति के साथ नवमांश में स्थित है। अतः सप्तमेश का संबंध 5,11 भावों से है। सप्तमेश राहु के नक्षत्र में स्थित है। राहु शनि के नक्षत्र में स्थित है। अतः लग्नेश और सप्तमेश का संबंध 5, 11 भावों से है। साझेदारी टूटेगी नहीं। यद्यपि कुछ गलतफहमी राहु के कारण उत्पन्न होगी, मगर समाप्त हो जाएगी।

नवमांश 9.2.1969 को 7:30, दिल्ली

सप्तमेश सूर्य दुःस्थान 12 में अष्टमेश बुध के साथ है। यद्यपि सप्तमेश और लग्नेश शनि में इत्थसाल है, फिर भी साझेदारी टूट जाएगी। सप्तमेश सूर्य और अष्टमेश बुध पर मंगल की दृष्टि है। 2, 11 का स्वामी बृहस्पति अष्टम में केतु के साथ स्थित है और पंचमेश बुध द्वादश में है। नवांश में स्थिति सुधर नहीं रही है।

नौकरी कब मिलेगी ?

व्यवसाय के लिए दशम भाव, जमा धन के लिए द्वितीय, मालिक को हानि के लिए षष्ट भाव को देखना चाहिए।

27.7.1969 को 17:30, दिल्ली

	शनि 14–59	शुक्र 28–59	
राहु 28–43	कुंडली 39		सूर्य10–50 बुध(अस्त) 16–20
			केतु 10–43
चंद्र 17–48 लग्न14–31	मंगल 10–43		गुरु 8–20

उपरोक्त कुंडली को देखें। दशम और दशमेश पर व्यवसाय या नौकरी के लिए ध्यान दें। दशम में बृहस्पति स्थित है। दशमेश बुध अष्टम में अस्त होकर द्वितीयेश शनि के नक्षत्र और मंगल के नवमांश में है। शनि मंगल की राशि में, शनि के नक्षत्र में और सूर्य के नवमांश में स्थित है। षष्टेश शुक्र स्वराशि में, मंगल के नक्षत्र में और बुध के नवमांश में मौजूद है। लग्नेश बृहस्पति दशम भाव में स्थित होकर बुध की राशि में, सूर्य के नक्षत्र में और शत्रु के नवमांश में है। लग्नेश दशम में है और दशमेश अष्टम में अस्त होकर द्वादशेश मंगल से संबंधित है, अतः नौकरी नहीं मिलेगी। अस्त या वक्री ग्रह शुभ परिणाम नहीं देता है।

पदोन्नति कब होगी ?

10.7.1969 को 11:00, दिल्ली

राहु 00–16	शनि 14–01	शुक्र 10–5 चं. 6–34	बुध(अस्त) 10–55 सू.24–21
	कुंडली 40		
	मंगल 8–18		लग्न4–32 गु. 5–52 के. 0–16

प्रोन्नति के लिए 10, 2, 6 और 11 भावों का विचार करें। जब प्रोन्नति होती है तो किसी को हानि होती है, अतः छठे भाव को भी देखा जाता है।

उपरोक्त कुंडली में दशमेश और लग्नेश बुध अस्त है और 12 वें भाव में केतु के नवमांश में बैठा है, अतः प्रोन्नति नहीं होगी।

क्या व्यापार फले फूलेगा ?

21.9.1968 को 12:30, दिल्ली

राहु 16–12	शनि(व) 00–29		
	कुंडली 41		
			गुरु(अस्त) 25–37 चं. 19–34 मं. 6–17
	लग्न 26–27	बुध(अ) 0–12	लग्न29–57 के. 16–12 सू. 5–56

एकादश भाव संपन्नता का प्रतीक है और दशम व्यापार, कार्य क्षेत्र, नाम, प्रसिद्धि आदि का द्योतक है। षष्ट भाव धन की प्राप्ति और द्वादश निवेश और खरीदारी दर्शाते हैं।

धनाढ्य होने के लिए दशमेश का एकादश भाव से संबंध होना चाहिए। छठा भाव बली हो जिससे धन प्राप्ति अधिक हो और द्वादश भाव पर शुभ प्रभाव हो ताकि लाभप्रद निवेश हो सके। दशमेश सूर्य एकादश में बुध की राशि में, सूर्य के नक्षत्र में और शनि के नवमांश में स्थित है। एकादशेश बुध द्वादश भाव में शुक्र की राशि में, मंगल के नक्षत्र में, शुक्र के नवमांश में स्थित है। छठे भाव में वक्री शनि स्थित है। षष्टेश मंगल शुक्र के नवमांश में होकर दशम भाव में चंद्र और बृहस्पति के साथ स्थित है। द्वादशेश शुक्र एकादश में अर्थात भाव से द्वादश में है जिसका अर्थ है कम खरीदारी। जातक धनाढ्य बन गया।

क्या मेरी आर्थिक स्थिति सुधरेगी ?

इसका अर्थ है कि अगर बिक्री बढ़े तो आर्थिक हालत सुधरेगी। चतुर्थ भाव आधिपत्य और उत्पादन दर्शाता है जबकि तृतीय भाव तैयार माल की बिक्री का द्योतक है। द्वितीय भाव जमा धन में बढ़ोत्तरी का संकेतक है। अतः 2, 3, 11, 12 भाव कारक हैं। तृतीयेश का संबंध 2 और 11 भाव से हो तो लाभ होगा। तृतीयेश

का संबंध 11 और 12 दोनों भावों से हो तो बिक्री से न लाभ होगा, न हानि। तृतीयेश बुध द्विस्वभाव राशि में स्थित हो तो भारी बिक्री से खूब लाभ होता है। कारक ग्रह बृहस्पति और बुध हैं।

23.1.1999 को 2:31, दिल्ली

गु.1—57 चंद्र 23—32	शनि 4—00		
	कुंडली 42		राहु 28—24
बु(अ)1—36 शु. 29—49 के. 28—24 सूर्य 9—17			लग्न 5—27
		मंगल 4—57	

तृतीय भाव में योगकारक मंगल स्थित होकर 6, 7 के स्वामी शनि से दृष्ट है। तृतीयेश शुक्र छठे भाव में बुध, सूर्य और केतु के साथ स्थित है। लग्नेश सूर्य अपने ही नक्षत्र में शनि के नवमांश में स्थित है। द्वादशेश चंद्र अष्टम भाव में धन के कारक बृहस्पति के साथ बृहस्पति की राशि और शनि के नवमांश में स्थित है। परिणाम : न लाभ, न उन्नति।

क्या इस पुस्तक को लिखने में सफलता मिलेगी ?

24.1.1999 को 11:32, दिल्ली

गु. 2—4	लग्न 5—13 शनि 3—32 चंद्र 2—44		
शुक्र 00—38	कुंडली 43		राहु 28—24
के. 28—24 सू. 9—57 बु.(अ)2—40			
		मंगल 5—14	

पुस्तक लेखन का संकेत तृतीय भाव से प्राप्त होता है। लेखन के कारक बृहस्पति और बुध हैं। एकादश भाव से पुस्तक लेखन के योग्य उच्च ज्ञान का पता चलता है। अतः एकादश भाव का संबंध 3 और 9 भावों और बुध/बृहस्पति से हो तो पुस्तक पूर्ण होकर लोकप्रिय होगी।

एकादश भाव में द्वितीयेश शुक्र स्थित है। एकादशेश शनि लग्न में चंद्र के साथ स्थित है और 1, 8 के स्वामी मंगल से दृष्ट है। नवमांश शुक्र का और नक्षत्र केतु का है। तृतीयेश बुध पंचमेश सूर्य के साथ दशम में अस्त है और एकादशेश शनि से दृष्ट है। नक्षत्र सूर्य का और नवमांश शनि का है। नवमेश बृहस्पति द्वादश में स्वराशि, स्वनक्षत्र और चंद्र के नवमांश में उच्च का है। अतः एकादश भाव का संबंध 3, 9 भाव और बुध, बृहस्पति से है, अतः पुस्तक लेखन में सफलता मिली।

एकादशेश, लग्नेश और चंद्र के मध्य निर्मित कंबूल योग कार्य में सफलता का द्योतक है। शनि और मंगल की भूमिका देरी और विवाद के बावजूद सफलता दर्शाती है।

अवकाश, तीर्थयात्रा और पर्यटन आदि का ज्ञान 3, 9, 12 भावों से होता है।

अध्याय–17

राजनीति

दशम भाव प्रशासन का अधिकार देता है। लग्न और लग्नेश प्राप्तकर्ता हैं। चतुर्थ भाव जनता है, नवम भाग्य। 2 और 11 भाव चुनाव लड़ने के लिए धन जुटाते हैं। तृतीय भाव चुनाव लड़ने की हिम्मत देता है, छठा भाव दूसरों की हानि है। ये भाव बली होने चाहिएं।

राजनीति में सत्ता प्राप्ति

1. लग्नेश और चंद्र दशम में इत्थसाल में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हों तो सत्ता प्राप्त होती है।
2. लग्नेश दशम में और दशमेश लग्न में स्थित हो और दूषित प्रभाव न हो।
3. लग्नेश का दशम भाव में शुभ ग्रह से इत्थसाल हो।
4. लग्नेश स्वराशि में हो और मंगल दशम में उच्च का हो।
5. लग्नेश और दशमेश का स्वराशि में स्थित चंद्र से इत्थसाल हो।
6. बृहस्पति, शुक्र और बुध दशम भाव में मीन राशि में स्थित हों।
7. लग्नेश लग्न में स्थित हो या लग्न में उच्च का होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो और दशमेश बली हो।
8. मंगल दशम में उच्च का होकर लग्न या लग्नेश पर दृष्टि डाले।
9. लग्नेश और दशमेश लग्न में स्थित हों और शुभ ग्रह 5, 9, 11 भावों में हों।
10. लग्नेश, चंद्र और दशमेश शुभ भावों में स्थित होकर शुभ ग्रह से युक्त/दृष्ट हों।
11. चंद्रमा बली होकर केंद्र में स्थित हो और दशम भाव के शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो।
12. बृहस्पति केंद्र में बली हो और चंद्र–बुध–शुक्र की शुभ भावों में युति हो।
13. बली बृहस्पति की केंद्र में लग्नेश से युति हो और चंद्र भी बली हो।
14. बृहस्पति केंद्र या त्रिकोण में उच्च का हो, चंद्र शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट होकर पक्षबली हो।
15. लग्नेश 3 या 9 भाव में स्थित हो और तृतीयेश का दशमेश से इत्थसाल हो तो जातक सत्ता प्राप्त करता है या अधिकारों की बढ़त होती है।
16. लग्नेश का तृतीयेश या नवमेश से इत्थसाल हो तो जातक खोयी सत्ता प्राप्त करता है।
17. सत्ता प्राप्त होगी, अगर :

अ. दशमेश बली हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो।

आ. दशमेश का पूर्ण चंद्र से इत्थसाल हो।

इ. बृहस्पति केंद्र में स्वराशि या उच्च का हो।

ई. बृहस्पति का दशमेश से इत्थसाल हो।

कुछ विद्वानों के मतानुसार पंचम भाव राजदूत, राजनीतिज्ञ आदि का संकेतक है। पंचम का संबंध 2 और 11 भाव से हो तो जातक राजनीतिज्ञ बनता है।

पाठक देखेंगे कि उपरोक्त योगों में सूर्य को पूर्ण महत्व नहीं दिया गया है जबकि बृहस्पति को वरीयता दी गयी है। मगर अनुभव बताता है कि सूर्य का भी बली होकर दशम, दशमेश से संबंध होना चाहिए।

सत्ता का ह्रास

1. लग्नेश जिस भाव में स्थित हो, उसकी राशि का स्वामी अशुभ राशि या भाव में स्थित हो या उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो।
3. द्वितीयेश और एकादशेश दूषित हों।
4. लग्नेश अशुभ राशि या भाव में स्थित हो।
5. चंद्रमा केंद्र में स्थित होकर दूषित हो।
6. बृहस्पति, लग्नेश और चंद्र शत्रुक्षेत्री हों या अशुभ ग्रहों द्वारा दूषित हों।
7. लग्नेश और शुक्र अस्त होकर पापकर्तरी योग में हों।
8. सत्ता प्राप्ति के बाद कारावास होगा, यदि

   अ. लग्नेश निर्बल होकर 6 या 12 भाव में स्थित हो।

   आ. लग्नेश का दशमेश और अष्टमेश से इत्थसाल हो।

   इ. केंद्र और अष्टम भाव में अशुभ ग्रह हों।
9. यदि द्वितीयेश दशम भाव में स्थित हो या दशमेश और द्वादशेश में संबंध हो और वे शनि से चतुर्थ या सप्तम भाव में स्थित हों तो जातक को सत्ता प्राप्त होती है, मगर वह उसे नष्ट कर देता है।
10. सत्ता का ह्रास होगा यदि

    अ. दशमेश और लग्नेश का चतुर्थ भाव में स्थित होकर चंद्र से इत्थसाल हो।

    आ. लग्नेश का किसी नीच ग्रह और चंद्र से इत्थसाल हो।
11. धीमी गति वाला ग्रह चतुर्थ भाव में स्थित हो या वक्री हो तो पहले सत्ता हाथ से जाएगी। बाद में जब चंद्र से कंबूल होगा तो सत्ता वापस प्राप्त होगी।

क्या सदन में विश्वास मत प्राप्त कर सकूंगा ?

विश्वास मत प्राप्त होगा :

1. शुभ ग्रह 1, 7, 10 भाव में स्थित हों।
2. बृहस्पति, शुक्र या बुध नवम भाव में हो।
3. सभी ग्रह 3, 4, 5, 6, 7, 8 भावों में स्थित हों।

अध्याय—18

विविध प्रश्न

कारावास

राहु कारावास का कारक है और द्वादश इसका भाव है। लग्न या लग्नेश, द्वादश या द्वादशेश का संबंध राहु से हो तो कारावास होता है।

उपरोक्त योग में चतुर्थ या चतुर्थेश का संबंध हो तो कारावास देश के हितार्थ होता है।

उपरोक्त योग में नवम या नवमेश का संबंध हो तो कारावास देश या किसी उत्तम कार्य के लिए होता है।

1. लग्न में द्विस्वभाव राशि में राहु स्थित हो।
2. चंद्र केंद्र में मंगल से युत या दृष्ट हो।
3. लग्नेश निर्बल हो या ओपोक्लिम भावों (3, 6, 9, 12) में स्थित होकर राहु या द्वादशेश से युत या दृष्ट हो।
4. चंद्र तृतीय भाव में स्थित होकर शनि से युत/दृष्ट हो और चतुर्थेश या चतुर्थ में स्थित ग्रह से इत्थसाल में हो।

बंधन योग

1. लग्नेश और षष्टेश की केंद्र या त्रिक भावों में युति हो और राहु या शनि से संबंध हो।
2. राहु, मंगल या शनि से युति में हो या केंद्र में स्थित हो तो जातक हत्या करता है।
3. षष्टेश, एकादशेश, केतु जिस राशि में स्थित हो उसका स्वामी, चतुर्थ भाव, चतुर्थेश और चंद्रमा पर मंगल या शनि का प्रभाव हो तो जातक हत्या करता है।
4. चंद्र और वक्री बुध मस्तिष्क को हत्या करने के लिए उकसाते हैं। अभियुक्त को बचाने के लिए दशम भाव, दशमेश, लग्न, लग्नेश या चंद्र पर बृहस्पति की दृष्टि होनी चाहिए।

क्या कारावास होगा ?

कारावास का अर्थ है :

अ. परिवार से वियोग (द्वितीय भाव, लग्न और लग्नेश से द्वादश)

आ. चारदीवारी में सीमित रहना (द्वादश भाव)

इ. स्वयं का निवास छूटना अर्थात निवास की हानि (तृतीय भाव)

अतः कारावास के लिए 2 और 8 भाव (परिवार और वियोग), 12 (चारदीवारी या पलंग में परिसीमा), तृतीय (निवास की हानि) भावों का विचार करना चाहिए।

19.10.1993 को 13:30, दिल्ली

द्वादशेश बृहस्पति दशम भाव और शुक्र की राशि में अस्त है और अष्टमेश सूर्य, मंगल और बुध से युति में है। लग्न में स्थित द्वितीयेश शनि की दृष्टि है। बृहस्पति मंगल के नक्षत्र में स्थित है और नवमांश में भी अष्टम भाव में सूर्य से युत है। अतः द्वादशेश और मंगल का संबंध 2, 3, 8 भावों से है। जातक को कारावास हुआ और अभी भी जेल में है। राहु कारावास का कारक है। राहु मंगल की राशि में, चंद्र से युति में, लग्नेश शनि के नक्षत्र में, षष्टेश बुध के नवमांश में है।

कैदी छूटेगा या नहीं ?

कैदी छूट जाएगा ?

1. लग्नेश का शुक्ल पक्ष के चंद्र से इत्थसाल हो तो कैदी छूट जाएगा।
2. तृतीयेश या नवमेश का चंद्र से इत्थसाल हो।
3. लग्न में शुभ ग्रह हों।
4. लग्न में शुक्र या शनि अस्त हो।
5. निर्बल चंद्र का 3 या 9 भाव में स्थित ग्रह से संबंध हो।
6. केंद्र में स्थित तृतीयेश या एकादशेश का 3 या 9 भाव में स्थित ग्रह से इत्थसाल भविष्य में हो।
7. शुक्र या शनि मेष या तुला में स्थित हो।

8. निर्बल चंद्र अशुभ भाव में स्थित हो, अशुभ ग्रह से युत/दृष्ट हो और 3, 9 भाव में स्थित ग्रह से इत्थसाल हो।
9. तृतीयेश या नवमेश केंद्र में स्थित हो और चंद्र से इत्थसाल हो।
10. लग्नेश और चंद्र चर राशि में स्थित हों।
11. चंद्रमा स्वराशि में दशम भाव में स्थित हो और लग्नेश का तृतीय भाव में बैठे ग्रह से इत्थसाल हो।

कैदी कुछ विलंब के बाद छूट जाएगा

1. यदि चंद्रमा मीन राशि में स्थित हो।
2. लग्नेश केंद्र में स्थित हो।
3. लग्नेश लग्न में और अशुभ ग्रह केंद्र में स्थित हों।
4. लग्नेश और चंद्र कर्क में स्थित हों।
5. शुभ ग्रह का अन्य शुभ ग्रह से केंद्र में इत्थसाल हो और कंबूल योग भी हो।
6. लग्नेश और चंद्र में इत्थसाल हो।
7. लग्नेश केंद्र में स्थित हो, 3, 6, 9 या 12 भाव में स्थित ग्रह से इत्थसाल हो तो कैदी 1 वर्ष में छूट जाएगा।
8. द्वितीयेश चतुर्थ में स्थित हो।
9. लग्न और चंद्र द्विस्वभाव राशि में स्थित हों।

कैदी ससम्मान मुक्त होगा

1. चंद्र नवम भाव में स्थित हो और लग्नेश का 3 या 9 भाव में स्थित ग्रह से इत्थसाल हो।
2. चंद्र तृतीय भाव में स्थित हो और लग्नेश का 3 या 9 के स्वामी से इत्थसाल हो।
3. चंद्र वृश्चिक या कुंभ में स्थित हो मगर केंद्र में न हो और किसी शुभ ग्रह की या भावेश की दृष्टि हो।
4. लग्नेश पर पुरूष ग्रह (सूर्य, मंगल या बृहस्पति) की दृष्टि के साथ किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि हो और उस अशुभ ग्रह का 3 या 9 के स्वामी के साथ इत्थसाल हो।

मुक्ति नहीं होगी

1. लग्नेश का केंद्र में स्वराशि में स्थित ग्रह से इत्थसाल हो।
2. लग्नेश केंद्र में स्थित हो और चंद्र से इत्थसाल हो।
3. कोई ग्रह केंद्र में स्वराशि में स्थित हो।

4. चंद्र केंद्र में स्थित होकर शनि से युत/दृष्ट हो।

5. तृतीयेश और नवमेश द्वादश भाव में स्थित हों और लग्नेश से इत्थसाल हो तो कैदी जेल से भाग जाएगा।

6. द्वादशेश लग्न में स्थित हो तो कैदी जेल से फ़रार हो जाएगा।

जेल में मृत्यु

1. अष्टमेश अशुभ ग्रह हो, लग्नेश अशुभ होकर अशुभ ग्रह से संबंधित हो।
2. अष्टमेश अशुभ ग्रह होकर चतुर्थ भाव में स्थित हो और चंद्र से युति, दृष्टि या इत्थसाल हो।
3. चंद्र केंद्र में स्थित हो और शनि से युत/दृष्ट हो।
4. लग्नेश चतुर्थ भाव में अस्त हो और मंगल से दृष्ट हो।
5. अष्टमेश का चंद्र से इत्थसाल हो।
6. चंद्र का अशुभ ग्रह से चतुर्थ भाव में इत्थसाल हो।
7. अशुभ अष्टमेश का लग्नेश से चतुर्थ भाव में इत्थसाल हो।
8. द्वादशेश और लग्नेश का दशम भाव में इत्थसाल हो।
9. लग्नेश का 3 या 9 के स्वामी से द्वादश भाव में इत्थसाल हो।

जेल से कब मुक्ति मिलेगी ?

जातक लग्न में स्थित ग्रह या लग्नेश के अनुसार जेल से छूटेगा। मान लीजिए लग्न में शुक्र विद्यमान है।

1. लग्न में शुक्र हो तो शुक्र के लग्न में गोचर के समय जेल से मुक्ति मिलेगी।

2.अ.शुक्र अगर लग्न में वृष या तुला राशि में स्थित हो तो 15 दिनों में मुक्ति मिल जाएगी।

आ. शुक्र कर्क या मकर में हो तो मुक्ति मुश्किल से मिलती है।

इ. शुक्र द्विस्वभाव राशि में हो तो जेल से छूटने में देरी होगी।

उ. अगर शुक्र लग्न में स्थित नहीं है तो मुक्ति लग्नेश की शक्ति और अंश पर निर्भर है, अर्थात अगर लग्नेश नवमांश में चर राशि में हो तो जातक जेल से छूट जाएगा।

स्थिर नवमांश के लिए अवधि को दोगुना कर दें। द्विस्वभाव नवमांश के लिए अवधि तीन गणा कर दें।

क्या जमानत होगी ?

जमानत का अर्थ है :

अ. परिवार से पुनर्मिलन (द्वितीय भाव)

आ. चारदीवारी से मुक्ति (द्वादश भाव)

इ. घर पहुंचना (चतुर्थ भाव)

1. लग्नेश केंद्र में स्थित हो और केंद्र में केंद्र के स्वामी से इत्थसाल हो तो जमानत नहीं होगी।
2. अशुभ ग्रह केंद्र में स्थित हों तो जमानत में देरी होगी।
3. अथक प्रयास द्वारा जमानत संभव है :

अ. शुभ ग्रहों का केंद्र में इत्थसाल हो।

आ. लग्नेश द्वादश में स्थित हो तथा अशुभ द्वादशेश द्वारा दृष्ट हो।

इ. लग्नेश का चंद्र से केंद्र में इत्थसाल हो।

4. लग्नेश और चंद्र का इत्थसाल कर्क से अन्य चर राशि में हो तो जमानत हो जाएगी। यह योग अगर कर्क में हो तो जमानत बहुत प्रयास से होगी।
5. लग्नेश अस्त या अशुभ ग्रहों की दृष्टि के कारण निर्बल होने पर जमानत मिलने में समय लगता है। अगर चंद्र भी दूषित हो और अशुभ ग्रह केंद्र में स्थित हों, अष्टम भाव में अशुभ ग्रह स्थित हों तो जातक की जेल में मृत्यु संभव है।
6. लग्न और लग्नेश दूषित हों, केंद्र में अशुभ ग्रह स्थित हों, मंगल अस्त या नीचस्थ या अशुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जेल से छूटने पर जातक की हत्या हो जाती है।
7. लग्नेश और द्वादशेश का दशम भाव में इत्थसाल हो तो जातक को जेल में यातना दी जाती है।
8. प्रश्न के दिन के नक्षत्र को देखें। दिन के नक्षत्र से जन्मकुंडली का चंद्र नक्षत्र 4 नक्षत्रों के बीच हो तो परिणाम विनाश, 5 से 7 नक्षत्रों के मध्य हो तो मुक्ति, 8 से 11 में मृत्यु, 12 से 14 में सजा, 15 से 18 सफलता, 19 से 20 जमानत में देरी, 22 से 25 मृत्यु तथा 26 से 28 कारागार से मुक्ति का संकेत होता है।

क्या मेरा सामान बिना बाधा के पहुंच जाएगा ?

1. चंद्र चर राशि में केंद्र में स्थित हो तो सामान सुरक्षित पहुंच जाता है।
2. निर्बल अशुभ ग्रह 3, 6, 9, 12 भावों में स्थित हों और शुभ ग्रह बली हों तो सामान सुरक्षित पहुंचता है।
3. अशुभ ग्रह केंद्र में स्थित हों और शुभ ग्रह निर्बल हों, बृहस्पति नीचस्थ, अस्त या शत्रुक्षेत्री हो तो सामान सुरक्षित नहीं पहुंचता और परेशानियां आती हैं।
4. मंगल अष्टम में हो और सूर्य की दृष्टि हो तो बाधाऐं आती हैं।
5. चंद्र का शनि से इत्थसाल हो तो बाधाऐं आती हैं।

6. केंद्र में अशुभ ग्रह स्थित हों या केंद्र की राशियों के स्वामी अशुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हों तो बाधाएं आती हैं।

व्यय

खर्च के प्रकार

1. द्वादश भाव में शुभ ग्रह स्थित हों तो धन शुभ कार्यों पर खर्च होता है।
2. द्वादश भाव में अशुभ ग्रह मौजूद हों तो खर्च अशुभ कार्यों पर होता है।

विभिन्न ग्रहों द्वारा खर्च के प्रकार का ज्ञान होता है।

सूर्य : सरकार

चंद्र : मनोरंजन, खेल

मंगल : अनुचित कार्य

बुध : व्यापार, शेयरों की खरीद

बृहस्पति : शुभ कार्य, शिशु जन्म, संतान का विवाह, दान

शुक्र : पति/पत्नी पर व्यय, मौज मस्ती

शनि / राहु : अशुभ कार्य, बीमारी

3. द्वितीयेश मंगल का संबंध लग्नेश से हो तो व्यय अनुचित कार्यों पर होता है, परंतु अगर मंगल द्वितीय भाव में बली हो तो व्यय आभूषण, पुस्तक, संतान आदि पर होता है।

द्वितीयेश बली हो तो :

सूर्य : ब्राह्मण पूजा, गुरु

चंद्र : मनोरंजन/जुआ

मंगल : आभूषण, पुस्तक, संतान या अनुचित कार्य

बुध : व्यापार और खरीदारी

बृहस्पति : शुभ कार्य

शुक्र : मनोरंजन

शनि : घर से दूर हो तो मनोरंजन आदि पर, अन्यथा निर्धन

4. द्वितीयेश मंगल निर्बल हो तो स्त्रियों पर व्यय। यही फल अन्य ग्रहों का होगा।
5. द्वितीयेश होकर बृहस्पति 6, 9, 11 भाव में स्थित हो तो सामाजिक कार्य, बड़ों को सम्मान, ब्राह्मण आदि पर व्यय होता है। शुक्र 6, 9, 11 में हो तो मनोरंजन पर व्यय होता है। बुध 6,9,11 में हो तो

व्यापार पर खर्च होता है। चंद्र से इत्थसाल हो तो शुभ कार्यों पर या कम अशुभ कार्यों पर व्यय होता है।

वर्तमान और भविष्य में भाग्य कैसा रहेगा ?

भविष्य जानने के लिए कुंडली और नवमांश में लग्न और चंद्र के बल का आकलन करें। कुंडली और नवमांश में लग्न, लग्नेश और चंद्र बली हों तो भविष्य उज्ज्वल होता है, निर्बल होने पर उत्तम भविष्य का कथन नहीं करना चाहिए। अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि उत्तम भविष्य का नाश कर देती है। लग्न और लग्नेश ही भाग्य कथनार्थ पर्याप्त नहीं हैं।

साथ में एकादश–एकादशेश, द्वितीय–द्वितीयेश, नवम–नवमेश का भी विचार करें। लग्न–लग्नेश से संबंध भी भविष्य का ज्ञान कराते हैं।

याद रखें कि वह ग्रह जिसके साथ लग्नेश इशराफ योग में हो, जातक के भूतकाल का ज्ञान कराता है। वह ग्रह, जिसके साथ लग्नेश युति में है, जातक के वर्तमान का बोध कराता है। लग्नेश जिस ग्रह से इत्थसाल में हो, वह भविष्य की जानकारी देता है।

लग्नलेश लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रहों से युत/दृष्ट हो तो जातक का बुरा समय समाप्त समझें। आगे सब कुछ शुभ और सौभाग्यपूर्ण होगा। शुभ ग्रह प्रसन्नता और अशुभ ग्रह दुःखों के सूचक हैं। बृहस्पति और चंद्र का सप्तमेश से इशराफ हो तो वर्तमान और भविष्य उज्ज्वल रहेगा।

क्या पत्र या सामान गंतव्य स्थान पर पहुंचेगा ? उत्तर आएगा या नहीं ?

1. चंद्र, बुध और शुक्र 1, 2, 3, 10, 11 भावों में स्थित हों।
2. शुभ ग्रह 4 और 10 भावों में स्थित हों।
3. चंद्र 1, 2, 5 या 9 में स्थित हो।
4. चंद्रमा चतुर्थ भाव में स्थित हो।
5. अशुभ ग्रह 2 या 3 भाव में स्थित हों तो जवाब कुछ देरी के बाद आता है।
6. अशुभ ग्रह 5 और 6 भाव में स्थित हों तो जवाब कुछ देरी के बाद या तकाज़ा करने पर आता है।
7. अशुभ ग्रह 7 और 8 भाव में बैठे हों तो जवाब रास्ते में गुम हो गया है।
8. अशुभ ग्रह 5 या 6 भाव में जल राशि में स्थित हों तो उत्तर मिलने में देरी होती है।
9. अशुभ ग्रह 2 या 3 भाव में स्थित हों तो उत्तर मार्ग में होता है।
10. लग्नेश और चंद्र का सप्तमेश से इत्थसाल हो तो जवाब मार्ग में है।
11. लग्नेश और चंद्र चर राशि में हों तो जवाब शीघ्र आएगा।
12. उत्तर नहीं आएगा अगर लग्नेश और चंद्र स्थिर राशि में हों।

13. चंद्र और बुध बली होकर इत्थसाल में हों तो जवाब सकारात्मक होगा, अन्यथा नहीं।

मैं कितने वर्ष जिऊंगा ?

मारक ग्रहों को देखें। मारक ग्रह निम्न हैं :

1. द्वितीयेश और सप्तमेश।
2. द्वितीय और सप्तम भाव में स्थित ग्रह।
3. द्वितीयेश और सप्तमेश से युत/दृष्ट ग्रह।
4. जब सूर्य, शुक्र, द्वितीयेश या सप्तमेश केंद्र के, विशेषकर सप्तम के स्वामी हों तो अवश्यमेव मारक होते हैं।
5. शनि की युति द्वितीयेश या सप्तमेश से हो तो वह अवश्य ही मारक होता है और प्रमुख भूमिका निभाता है।
6. बाधक ग्रहों का विचार करें।

अ. लग्न में चर राशि हो तो एकादशेश बाधक होता है।

आ. लग्न में स्थिर राशि हो तो नवमेश बाधक होता है।

इ. लग्न में द्विस्वभाव राशि हो तो सप्तमेश बाधक होता है।

- लग्न, लग्नेश, सूर्य, चंद्र पर 6, 8, 12 के स्वामियों की अशुभ दृष्टि (युति, 90^0, सप्तम आदि) हो तो आयु अल्प होती है।
- लग्नेश वक्री हो या अष्टम में स्थित हो या अशुभ ग्रह लग्न या अष्टम में स्थित हों तो अल्पायु होती है।
- लग्नेश बाधक/मारक ग्रह के नक्षत्र में स्थित हो या उसका 4,6,8,12 भावों के या उनके स्वामियों से संबंध हो तो आयु अल्प होती है।
- लग्नेश अगर षष्टेश के नक्षत्र में स्थित हो या छठे भाव या षष्टेश से संबंध हो तो जातक बीमारी से ग्रस्त रहता है।
- लग्नेश अष्टमेश के नक्षत्र में या अष्टम भाव में स्थित हो या अष्टमेश / अष्टम से संबंध हो तो जातक दुर्घटना का शिकार होता है।
- लग्नेश द्वादशेश के नक्षत्र में स्थित हो या उसका द्वादश भाव या द्वादशेश से संबंध हो तो जातक लंबे समय तक अस्पताल में रहता है।

मृत्यु का संकेत तभी होता है जब लग्नेश का संबंध बाधक या मारक ग्रह से होता है। लेखक का अनुभव है कि कभी–कभी योगकारक ग्रह भी मृत्युदाता सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए कुंभ लग्न के लिए शुक्र

योगकारक है। कुंभ स्थिर राशि है जिससे नवमेश बाधक ग्रह है। अतः शुक्र बाधक है। अगर शुक्र केंद्र में, उदाहरण के लिए सप्तम भाव में स्थित है तो वह मारक स्थान होने के कारण, शुक्र अपनी दशा–अंतर्दशा में (अगर लग्नेश का संबंध शुक्र से हो तो) मृत्यु दे सकता है।

जातक कितने वर्ष जिएगा ?

13 अक्तूबर 1998 को 10:30, दिल्ली

	शनि (व) 7–10		
केतु 6–30 गुरु(व) 25–56	**कुंडली 45**		चंद्र 4–51
			राहु 6–30 मंगल 9–38
	लग्न 18–29	बुध (अ) 7–53	सू. 25–49 शुक्र(अ) 21–27
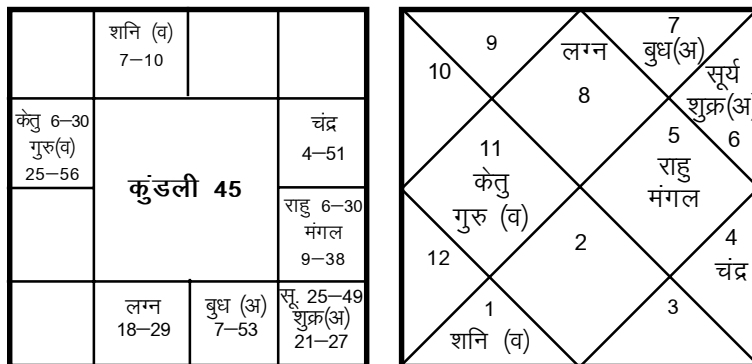
2, 7 के स्वामी मारक ग्रह हैं, जबकि नवमेश बाधक है। द्वितीयेश बृहस्पति वक्री है और केंद्र में चतुर्थ स्थान में केतु के साथ स्थित होकर लग्नेश मंगल और बाधक चंद्र को देख रहा है। लग्नेश मंगल का वक्री बृहस्पति से इत्थसाल है। चंद्र का लग्नेश से इत्थसाल है। कारक बृहस्पति से एक मास का संकेत मिलता है। अतः मृत्यु लगभग 1 मास में संभव है। कारक और लग्नेश में अंशों का अंतर लगभग 15^0 है। अतः मृत्यु का संकेत 15 दिन में है। बृहस्पति द्विस्वभाव नवमांश में स्थित है, अतः अवधि को 3 गुना करें। मृत्यु 20 दिसंबर 1998 को हुई।

क्या मकान बनेगा ?

चतुर्थ भाव स्वयं की जमीन, जायदाद, भवन आदि का संकेतक है। एकादश भाव आकांक्षाओं की पूर्ति, लाभ दर्शाता है जबकि द्वादश भाव निवेश और व्यय का परिचायक है। अतः गृह के निर्माण के लिए 4,11,12 भावों का विचार करें।

लग्न और लग्नेश का संबंध उपरोक्त भावों और उनके स्वामियों से हो तो जातक मकान बनाएगा। जातक अगर निर्मित भवन खरीदना चाहता है तो 6 और 9 भावों का भी अध्ययन करें। छठा भाव विक्रेता के सप्तम भाव की हानि है। नवम भाव दशम भाव (सप्तम की जायदाद) की हानि है। भूखंड के क्रय के लिए निर्मित भवन वाले नियमों का प्रयोग किया जाता है।

भवन के क्रय के लिए देखें कि क्या चतुर्थेश, चतुर्थ भाव में स्थित ग्रह, चतुर्थेश का नक्षत्रेश, चतुर्थेश की राशि के स्वामी और नवमांश में चतुर्थेश की राशि के स्वामी का संबंध लग्नेश, द्वादशेश, एकादशेश और उनके भावों से है।

क्या जायदाद बिकेगी ?

जायदाद का संकेत लग्न से चतुर्थ भाव से होता है। तृतीय भाव चतुर्थ भाव से द्वादश है। खरीदार का भाव सप्तम है। लग्न से दशम भाव सप्तम से चतुर्थ है अर्थात सप्तम की जायदाद। पंचम भाव सप्तम का एकादश है। अतः जायदाद की बिक्री का संकेत लग्न से 3, 5, 10 भावों से प्राप्त होता है।

अतः सप्तम द्वारा जायदाद खरीदने में सफलता का संकेत दशम, दशमेश, दशम में स्थित ग्रह, दशमेश का नक्षत्र और दशमेश की नवमांश में राशि के स्वामी, दशमेश से युति करने वाले या उस पर दृष्टिपात करने वाले ग्रहों से प्राप्त होता है। संक्षेप में, दशम भाव से संबंधित ग्रहों से जायदाद बिकने का पता चलता है। दशमेश का संबंध वक्री या अस्त ग्रहों से हो तो जायदाद की खरीद नहीं हो पाती है। दशमेश का संबंध 10, 3, 5 भावों से हो तो क्रेता जायदाद खरीदने में सफल होता है और जातक जायदाद बेचने में सफल होता है।

जब भी शनि और चंद्र एक राशि में होते है तो इसका अर्थ है अगले प्रयास में काम बन जाएगा। कारक मंगल का भी विचार करें।

10.06.1999 को 13:00, दिल्ली

लग्न द्विस्वभाव राशि का होकर स्थिर राशि के अनुसार कार्यरत है। शीर्षोदय राशि है। दशमेश स्वराशि में राहु के नक्षत्र में और शनि के नवमांश में है। चंद्रमा अष्टम भाव में शनि और बृहस्पति से युत और 3,8 के स्वामी मंगल से दृष्ट है। आगामी प्रयासों में जायदाद बिक जाएगी।

क्या मैं प्रतियोगिता परीक्षा में बैठ सकूंगा ?

इस प्रकार के प्रश्नों के लिए निम्न का विचार करें :

अ. परीक्षा में उपस्थित होने का साहस, अर्थात संघर्षशक्ति

आ. क्या जातक परीक्षा में उपस्थित हो सकेगा ?

इ. क्या सफलता मिलेगी ?

क. परीक्षा में बैठने के साहस के लिए तृतीय भाव का विचार किया जाता है। तृतीय भाव पर चंद्र का प्रभाव हो तो जातक साहसिक निर्णय लेने में असमर्थ रहता है। शनि का प्रभाव हो तो जातक अति सावधान होने से आत्मविश्वास रहित होता है। बुध होने पर जातक दुविधा में रहता है। सूर्य, मंगल, बृहस्पति या शुक्र का प्रभाव होने पर जातक में प्रतियोगिता के लिए भरपूर साहस होता है।

ख. जातक परीक्षा में बैठ सकेगा या नहीं, इसका विचार लग्न से करें। कभी–कभी व्यक्ति में परीक्षा के लिए साहस होता है, पर वह बीमारी आदि के कारण परीक्षा केंद्र में पहुंच नहीं पाता है। इसका विचार 6,8,12 भावों से होता है। यदि लग्न और लग्नेश दूषित हों तो जातक प्रतियोगिता परीक्षा में उपस्थित होने में सफल नहीं होता है।

ग. क्या प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी ? इसके लिए 4, 9, 11 भावों और उनके स्वामियों का विचार करें। चौथा भाव तृतीय भाव से द्वितीय है, नवम भाव तृतीय से सप्तम है और एकादश भाव तृतीय से नवम और लग्न से लाभ है। तृतीयेश का संबंध 4, 9, 11 भावों से हो तो प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होती है।

01.05.1997 को 10:27, दिल्ली

गु 24–24 बु. 23–29	सू 16–33 शनि (अ) 13–28	शुक्र 27–44	लग्न 27–08
	कुंडली 47		राहु 24–28
केतु 24–28			
		चं. 22–57 मं.(व)7–52	

लग्न में शीर्षोदय, द्विस्वभाव राशि परिवर्तन की सूचक है। नीचस्थ शनि (सूर्य के उच्चस्थ और चंद्र से केंद्र में होने के कारण नीच भंग) की लग्न पर दृष्टि है। शनि अस्त भी है, अतः नकारात्मक प्रभाव है। लग्नेश दशम भाव में दशमेश के साथ स्थित होकर इत्थसाल में है।

चंद्र पंचम भाव में त्रिकोण में एकादशेश मंगल (वक्री) के साथ स्थित है। इससे नकारात्मक प्रभाव है। उस पर नीच भंग वाले अस्त शनि और उच्चस्थ सूर्य की दृष्टि है। यह भी नकारात्मक है।

तृतीय भाव में कोई ग्रह नहीं है, न ही किसी की दृष्टि है। तृतीयेश सूर्य नवमांश में स्वराशि में है। सूर्य एकादश भाव में उच्च का है और शुक्र, बृहस्पति और बुध के मध्य स्थित है। इसकी 8,9 के स्वामी शनि से युति है। छठे भाव पर शुक्र और बृहस्पति की दृष्टि है। षष्टेश मंगल चंद्र से युति में होकर त्रिकोण पंचम भाव में स्थित है और शनि और सूर्य से दृष्ट है। मंगल की नवमांश में लग्न पर दृष्टि है।

दशम भाव में भाव स्वामी बृहस्पति बुध के साथ स्थित है। एकादश भाव पर भावेश की दृष्टि है। उसमें नवमेश शनि और तृतीयेश सूर्य (उच्च) स्थित हैं।

नवमेश का एकादश में नीचभंग राजयोग है। लग्नेश बुध की दशमेश बृहस्पति से दशम भाव में युति और इत्थसाल है। 3, 6 भाव और उनके स्वामी सकारात्मक हैं, अतः जातक प्रतियोगिता परीक्षा में उपस्थित होगा।

जातक दिल्ली विश्वविद्यालय की बी.सी.ए. प्रवेश परीक्षा में 30 मई 1999 को बैठा। क्योंकि लग्नेश का द्वादशेश शुक्र से द्वादश भाव में इत्थसाल है, लग्न, चंद्र और सूर्य का संबंध अस्त शनि से है, अतः जातक परीक्षा में सफल नहीं हो सका।

क्या महाविद्यालय में प्रवेश मिलेगा ?

शिक्षा का संकेत चतुर्थ भाव से होता है। चूंकि जातक अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति चाहता है अर्थात विद्यालय में प्रवेश चाहता है, अतः एकादश भाव का विचार करें। चतुर्थ, चतुर्थेश, एकादश, एकादशेश में संबंध हो तो विद्यालय में प्रवेश मिल जाता है। कारक बुध और बृहस्पति हैं।

11.6.1999 को 19:36, दिल्ली

	गु. 3–13 श. 18–24 चंद्र 25°	सूर्य 26–22	बुध 14–38
	कुंडली 48		शु.11–43 रा.20–35
केतु 20–35			
लग्न 1–09		मंगल 00–57	

लग्न द्विस्वभाव राशि में है और दशमेश बुध से दृष्ट है। लग्नेश बृहस्पति पंचम भाव में स्थित होकर एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और पंचमेश मंगल से दृष्ट है। बृहस्पति की 2,3 के स्वामी शनि और अष्टमेश चंद्र से युति है। एकादश भाव में द्वादशेश मंगल स्थित है जिस पर शनि की दृष्टि है। एकादशेश शुक्र अष्टम भाव में स्थित है।

चतुर्थेश बृहस्पति की एकादशेश शुक्र पर 90° की दृष्टि है और इशराफ योग है। प्रवेश नहीं मिला। जातक विद्यालय में नहीं जा सका।

आज का दिन कैसे गुज़रेगा ?

1. लग्नेश लग्न में, स्वराशि में, उच्चस्थ, मित्रक्षेत्री, शुभकर्तरी, शुभ भावों में स्थित हो और चंद्र भी बली हो (शुक्ल पक्ष का शुभ प्रभावों में हो) तो दिन अच्छा रहेगा और जातक को सुख प्रदान करेगा।
2. लग्न में अशुभ ग्रह बली हों या अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो दिन अच्छा नहीं जाएगा, चिंता–तनाव हावी रहेंगे।
3. चंद्र, लग्नेश या अशुभ ग्रह अष्टम भाव में स्थित हो और अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो दिन अच्छा नहीं रहेगा।

25.1.1999 को 19:13, दिल्ली

गु. 2–25	चंद्र 28–16 शनि 3–37		
शुक्र 2–35	**कुंडली 49**		राहु 28–24
सू. 11–47 बु.(अ) 5–35 के.28–24			लग्न 5–38
		मंगल 5–58	

लग्न पर शुक्र की दृष्टि है, लग्नेश उपचय भाव 6 में बुध और केतु के साथ स्थित है और राहु से दृष्ट है, चंद्रमा नवम भाव में मित्र राशि में शनि के साथ स्थित है। परंतु दोनों के अंशों में बहुत अंतर है अतः युति प्रभावहीन है। इसी प्रकार सूर्य, बुध और केतु के अंशों में बहुत अंतर है। अष्टम भाव अपने स्वामी की उपस्थिति से बली है। लग्न शुक्र के नवमांश में है और शुक्र से दृष्ट है, अतः बली है। जातक ने दिन व्यस्तता से बिताया और समय पर भोजन भी नहीं कर सका।

क्योंकि चंद्र अशुभ शनि से दूर हो रहा है और अपने उच्च के स्थान की ओर बढ़ रहा है, इससे संकेत मिलता है कि आज का दिन बहुत व्यस्त और संघर्षपूर्ण रहेगा मगर भविष्य उज्ज्वल और सुखी है।